प्रकाशक—
के० पी० शर्मा
'विज्ञान मन्दिर'
९, ब्राह्मणपाड़ा लेन,
(बलराम दे स्ट्रीट), कलकत्ता

Printed by
Har Prasad Tandan
at the [illegible] Printing Works
[illegible]

श्री भारतलक्ष्मी पिक्चर्सके

स्वनामधन्य संचालक

सेठ बाबूलाल चोखानी

के कर-कमलोंमें

सप्रेम समर्पित

शरद् पूर्णिमा
सं० १९९४

—'गुलाब'

दो शब्द !

आकर्षण-शक्ति !!

इसपर 'दो शब्द' लिखना और ख़ासकर उस शख्सकी 'आकर्षण-शक्ति' पर कुछ लिखना, जो स्वयं कवि, नाटककार और लेखन कलाका सिद्धहस्त है—वास्तवमें मुश्किल है।

पर इतना तो मैं अवश्य कह सकता हूं कि इस ग्रन्थमें कविवर गुलाबजीने उस शक्तिको हस्तगत करनेका उपाय बताया है, जो संसारकी एक ऐसी महती शक्ति है, जिसके सहारे यह इतना महान विश्व सुचारु रूपसे कार्य कर रहा है और जिस शक्तिको प्राप्त कर लेखक ही के शब्दोंमें प्रत्येक मनुष्य यह कह सकता है—"संसारमें मेरे लिये कोई भी काम असम्भव नहीं है—मैं अपने भाग्यका स्वयं मालिक हूं।" हाँ, इसमें जो विषय बताये गये है, जिन सरल, सर्वोपयोगी, सुन्दर और सुखद साधनोंका समन्वय किया गया है, उनका पालन कर मनुष्य वह शक्ति प्राप्त कर देवत्वकी सीमापर पहुंच सकता है और वह आकर्षण-शक्ति प्राप्त कर सकता है, जो सांसारिक और आध्यात्मिक जीवनमें आनन्द उत्पन्न कर देती है।

सच तो यह है कि मँजे हाथोंकी यह आकर्षण-शक्ति अतीव कल्याणकारिणी है और इसकी प्रत्येक पंक्ति अनुभवसिद्ध है। प्रत्यक्ष प्रमाण स्वयं लेखक मौजूद हैं, जिनमें वह आकर्षण-शक्ति है कि जिसे चाहें मोह लें !

—**भोलानाथ टंडन** एम० डी० एस०
प्रिन्सिपल इन्टरनेशनल कालेज

सुनो—

मनुष्यके अन्दर जो आश्चर्यजनक शक्तियाँ हैं, उनके द्वारा वह संसारमें जो चाहे कर सकता है। दुनियाकी हर चीज़ खुली हुई आँखोंसे देखनेसे बहुत ज्यादा सुन्दर दिखाई देती है। इस पुस्तकमें मनुष्यके प्रभाव और उसकी रोगमुक्तिके सम्पूर्ण विषयकी झाँकी मैं तुम्हारे सामने पेश किये देता हूं। उन्हें खुले दिलसे समझो। यदि तुम सामनेकी फैली हुई सड़कपर सावधानीसे चलोगे, तो तुम्हें हर काममें सफलता मिलेगी। तुम्हारा जीवन दुनियाकी बड़ीसे बड़ी इमारतसे ज्यादा पेचीदा तथा ताज्जुब भरी ताक़तोंका अजीब अजायबघर है। इसे याद रखो—"मनुष्यको कोई नहीं बनाता, उसे खुद महापुरुष बनना पड़ता है।"

तुम तकलीफ़ों और मुसीबतोंसे ज़रा न घबराओ। जिस आदमीने ज़िन्दगीमें दुःखकी कड़ुआहटका अनोखा स्वाद नहीं चखा, वह ज़िन्दगीमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण सुख और आनन्दोंसे वंचित रह गया। आफ़तें मनुष्यको पवित्र, निरभिमानी, सफल व्यक्ति और भविष्यका विजयी वीर बनाती हैं। ज़िन्दगीकी कठिन मंज़िलमे दुःख ही मनुष्यका सच्चा दोस्त है, जो उसके लिये उन्नतिके विराट मार्ग खोल देता है और उसे

शिक्षा देता है—"मनुष्य जो कुछ सोचता है; भविष्यमें वही उसका भाग्य बन जाता है।"

तुम धीरजके साथ मेरे सन्देशोंको सुनो। मेरे साथ किसी तरहकी अशान्तिका अनुभव न करो। अपने जीवनपर ध्यान दो, कर्तव्यको देखो और ज़िन्दगीको शक्तिशाली तथा आदर्श बनाओ।

मनुष्यको पुरानी शिक्षा मिली है कि वह पुण्यात्मा बने। किन्तु मैं कहता हूं—तुम वीर्यधारी बनो। पुराने आदमियोंने तुम्हें सिखलाया है—तुम साधु-सन्यासी हो जाओ। किन्तु मैं कहता हूं—इसकी तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं, तुम शक्तिशाली, कर्मयोगी तथा महा मानव बनो; बल्कि इससे भी ज्यादा आगे बढ़ जाओ और देवता बनो। अपने नये मार्ग और आवश्यक कार्य-पद्धतियाँ निकालो। मेरे ये सिद्धान्त शायद पहले तुम्हें कड़ुवी गोलियोंके समान ज़हरीले मालूम हों, किन्तु बादमें ये तुम्हारी कायापलट कर देंगे और तुम दुनियामें नवीन जीवन प्राप्त करोगे।

तक उसे संसारमें कोई आकर्षण दिखाई देता है। निराशाओंको जीवनकी प्रचण्ड ज्वालामें फूंक तापो !

ज़माना बड़ी तेज़ीसे पलट रहा है। मनुष्यके कार्योंमें ज्वार-भाटा आ गया है। पुरानी परम्परायें, दक़ियानूसी ख़याल और पुरानी रूढ़ियाँ डगमगा रही हैं। व्यक्तिस्वातन्त्र्य और नये विचारोंका सूर्य तेज़ीसे उदय हो रहा है। यह शुभ लक्षण हैं। इस जागरण युगमे जो मनुष्य अपनेको पहचानकर आगे बढ़ेगा, संसारमें उसीका बोलबाला होगा। यह सत्य है कि दुनियामें जब नये विचार फैलते हैं, तब लोग उनका विरोध करते है; पर सत्यकी स्वाभाविक शक्ति उसकी रक्षा करती है और मानव समाजमे एक दिन ज़ोरोंसे उसका स्वागत होता है।

यह सच है कि तुम जिस दिन अपने दिल और दिमाग़पर पूर्ण रूपसे कब्ज़ा करना सीख जाओगे, उस दिनसे तुम्हारी दुनिया आजकी दुनियासे बहुत ज्यादा दिलचस्प, खूबसुरत और निराली होगी। मनुष्यका दिल और दिमाग़ वह तूफ़ान है, जो उसके ख़याल, कल्पना, भय या अन्धविश्वासके द्वारा कभी गर्म और कभी सर्द होकर प्रवाहित होता है। मनुष्य आँखोंसे जो कुछ देखते हैं, उसका आधा उनका विश्वास है, और वह जो कुछ डरते हैं, उसका आधा बहम और कोरी कल्पना है।

और सुनो !

आज संसारके प्रत्येक स्त्री-पुरुषके चेहरेमे मैं देव-भावके दर्शन करता हूं। आज संसार भरके दुखी भाइयोंका आतनाद मेरे

कानोंमें वज्रघोषकी तरह गूँज रहा है। मैं अपनी ज़िन्दगीमें एक दिलचस्प भूकम्प लिये रास्तेमें झूमता हुआ चलता हूं। आज मेरी नसोंमें जो खून बिजलीकी तीव्र गतिसे सनसनाता हुआ दौड़ रहा है, उसकी इस बढ़ती हुई प्यासमें मैं ठण्डे जलकी शीतलता प्राप्त कर रहा हूं। मुझे इन प्रचण्ड धाराओंपर चलनेमें विश्रामका पूरा आनन्द आ रहा है। मैं तुमसे मिलकर धन्य हो गया हूं। तुम देवता हो और मैं तुम्हारा पुजारी!

जल्दबाज़ी न करो। 'आकर्षण-शक्ति' को होशियारीसे पढ़ो। सोचो, समझो और आगे बढ़ो। इस पुस्तक द्वारा संसारमें तुम्हारा नया जन्म होगा।

बस, अब तुम विजय-मार्गपर आगे बढ़नेके लिये आज़ाद हो। यदि तुम्हें कहीं, किसी तरहका शक मालूम हो, तो मुझे पत्र लिखो। मैं तुम्हें हर समय समझानेके लिये तैयार रहूंगा।

अपनेपर पूरा विश्वास रखो। अपना काम शुरू करो और हमेशा सावधान रहो। यदि कोई बात समझमें न आये, तो उसे बार-बार समझनेकी चेष्टा करो। यदि अपने कार्यमें दो-चार बार विफल भी हो जाओ, तो ज़रा न घबराओ। आगे बढ़ो। असफलता ही सफलताकी कुंजी है। बस!

सफलताकी सीढ़ियाँ

विषय			पेज
१ आप क्या हैं ?	...	...	११
२ चुम्बक ! ...	...	...	१६
३ स्वास्थ्य-विज्ञान	...	...	२१
४ मनकी शक्तियाँ	...	...	२८
५ घुमक्कड़ मन	...	...	३६
६ एकाग्रता ...	...	...	४२
७ आनन्दमय जीवन	...	...	५०
८ विलपावर ...	...	...	५६
९ भयका भूत ...	...	...	६७
१० स्मरण-शक्ति ...	...	...	७६
११ दिमाग़ ...	...	...	८५
१२ आँखोंका जादू	...	...	९५
१३ कानोंका रहस्य	...	...	१०३
१४ लक्ष्य या सिद्धान्त	...	...	११३
१५ समयका चिन्ह	...	...	१२३
१६ असली और नकली मनुष्य		...	१३४

विषय			पेज

१७ प्रेमका परित्राण १४०

१८ ख़तरनाक दुश्मन १४८

१९ बोलनेका तरीक़ा १६३

२० रुपया! १७४

२१ वर्तमानकी क़ीमत १९०

२२ स्त्री १९७

२३ मनुष्य-धर्म २०६

२४ आकर्षण २२१

आकर्षण शक्ति

आप क्या हैं ?

क्या आप जानते हैं, ईश्वरके बाद संसारमें सबसे बड़ा कौन है ? राजा या प्रजा नहीं, सभासद या सभापति नहीं, पुजारी या पतित नहीं, बनचर, थलचर, नभचर भी नहीं, —कोई भी नहीं,—कोई भी नहीं। ईश्वरके बाद संसारमें सबसे बड़े हैं—"**आप**" !

क्या आपके दिलमें कभी इस बातका भूचाल आया है कि—"मैं क्या हूं ?" क्या आपने कभी एकान्तमें बैठकर इस प्रश्नपर गहराईसे विचार किया है कि—"मैं क्या हूं ?"

मैं समझता हूं, आपके मनमें कभी इस बातका तूफ़ान न आया होगा। यदि आया भी होगा तो चन्द मिनटोंमें क़ाफ़ूरकी तरह उड़ गया होगा। फिर आप इस प्रश्नको भूलकर अपने काम-धन्धेमे लग गये होंगे।

आँखें खोलकर अपने उन्नत मस्तककी ओर देखिये। उसके सामने संसारकी सारी शक्तियाँ नतमस्तक हैं !

आप भूमंडलके सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हैं—ईश्वरीय कर्मोंके साझीदार! आपके तेजस्वी ललाटमें ब्रह्मज्योतिकी चमक है। हृदयको टटोलिये—उसमें शक्तियोंका ख़ज़ाना झकझका रहा है। संसारकी तरफ देखिये—वह सौन्दर्यका जादूघर है। दिमागका अध्ययन कीजिये—उसमें बिजलीकी ताक़त है। मनुष्य-जीवनमें अमरत्वकी रोशनी है!

रेगिस्तानको हँसता-खेलता बग़ीचा बना देना आपके हाथका काम है। असम्भवको सम्भव कर दिखाना, दुःख और मुसीबतोंमें भरे हुए ज़मानेको सुख और शान्तिके रूपमें पलट देना आपके ही [illegible] रहस्य है। आपके एक शब्दसे, आपके एक इशारेसे, संसारके दुःख-बन्धन तड़ातड़ टूट सकते हैं। अपनेको खोजिये—अपनेको पहचानिये। आपकी गौरव वैजयन्ती मनुष्योंकी विजयपताका है।

आप इस महान विज्ञानको कविकी कल्पना, भावोंकी उड़ान तर्क या पागलका प्रलाप न समझें। यह सत्य है, और सबके लिये साध्य है!

आपको यह देखकर आश्चर्य होगा—कि मैं आपसे इतना विश्वास क्यों रखता हूँ। इसका सबसे बड़ा कारण यह है—कि आपकी आकर्षण शक्ति मुझे [illegible] [illegible] है। और! आप [illegible] हैं, आपका [illegible] है!

इस विज्ञानको सावधानीसे अध्ययन कीजिये। सोचिये, समझिये और उसपर खूब ग़ौर कीजिये। आप अपने विषयमें जितना अधिक सोच सकते हैं—उतना दूसरे नहीं। पृथ्वी-मंडलमें आपको एक भी ऐसा मनुष्य न मिलेगा—जो आपके विषयमें गहराईसे सोचनेका कष्ट उठा सके !

किसीको क्या ग़रज़ ? लोगोंको अपने काम-धन्धे या मानसिक चिन्ताओंसे ही फुरसत नहीं। फिर कोई आपके लिये क्यों सोचेगा ? आप अपने विषयमें गंभीरतापूर्वक विचार कीजिये—खूब सोचिये—"मैं क्या हूं ? संसारमें किसलिये आया हूं ?"

आप चुम्बक हैं !

वह अद्भुत चुम्बक—जो हाड़, मांस और रक्तसे बना है। उसमें अद्भुत तेज है—अद्भुत आकर्षण ! यह आकर्षण शक्ति संसारके प्रत्येक मनुष्यको अपनी ओर खींच सकती है। विश्वको आपका भक्त बना सकती है। इसके ज़रिये आप अपनी समस्त अभिलाषायें, समस्त मनोकामनायें पूर्ण कर सकते हैं। यह शक्ति आपके घरमें कारूँका खज़ाना भर सकती है। आपके बच्चोंको आनन्दके हिंडोलेपर झुला सकती है। इसी शक्तिके ज़रिये आपकी मातायें, बहनें, बेटियाँ देवी बन सकती हैं और आप परम पिता परमात्माके साक्षात दर्शन कर सकते हैं !

यह एक नया और निराला विज्ञान है, जो सही है—दुरुस्त है—और सत्य है !

ईश्वरके बाद संसारमें—सबसे बड़े है—“आप” !

इस आध्यात्मिक तत्त्वको आप एकान्तमें अध्ययन कीजिये। ज़रा भी न घबराइये। मैं कोई जादूगर या प्रेततत्त्व-विशारद नहीं। आपपर जादूकी लकड़ी भी नहीं फेरता। सब आपकी समझमें आ जायगा—और आप एक दिन आनन्दसे उन्मत्त होकर चिल्ला उठेंगे—“संसारमें मेरे लिये कोई काम असम्भव नहीं। मैं अपने भाग्यका आप मालिक हूं। उसे बनाना बिगाड़ना मेरा काम है !”

शक्तियोंका बिजलीघर है। उसमें दिमाग़ी ताक़त उत्पन्न करनेके लिये, ज़िन्दगीमें नया रंग रूप लानेके लिये बिजलीघरकी समस्त मैशीनोंको साफ़ करना होगा। उनके कल-पुर्जे दुरुस्त करने होंगे, उनमें 'पेट्रोल' डालना होगा—उनमें ज़ोरदार 'स्पीड' पैदा करनी होगी—जिससे अन्दरकी सब मैशीन खटाखट चल सके और आपको सफलताके मार्गमें विजय हासिल करनेके लिये ज़रा भी कठिनाईका सामना न करना पड़े।

किसी भी देशका उत्थान पतन उसके स्त्री-पुरुषोंकी आकर्षण शक्तिपर निर्भर है। जातियोंके क्रम विकास देशवासियोके परिश्रम, होशियारी और तत्परतासे होते हैं। आज जो देश पतनके गहरे गड्ढेमें गिर पड़े हैं, जिनमें सिवा अन्धकारके रोशनीका नामो निशान तक नहीं नज़र आता। उनकी घृणित पाप कहानी यह है कि उन देशोंने कभी मनुष्योंको आलस्यकी नींदसे नहीं जगाया। यदि हम मनुष्योंकी त्रुटियोकी खोज करने बैठें—तो वे हमें रास्ता चलते दिखाई देंगी। उन त्रुटियोंको हमेशाके लिये नष्ट कर देनेका एक ही उपाय है—एक ही रास्ता। हम पहले अपनेको पूर्ण रूपसे पहचानें—फिर प्रत्येक मनुष्यके जीवन तथा चरित्रको नये साँचेमें ढालकर उसकी कायापलट कर दे। हमारे दैनिक अनुभवोंसे यह बात सिद्ध है, कि आत्मगौरव और सुकर्म ही मनुष्यके जीवनमें हेर-फेर करते हैं। आज हम स्कूल तथा कालेजोंसे ऊँची-ऊँची डिग्रियाँ लेकर

इस संसारमें हजारो लाखों बल्कि करोड़ों मनुष्योंने अपनेको ज़िन्दा कब्रमें दफना दिया—याने वे संसारमें कुछ न कर सके। उन्होंने न तो मनुष्य जन्म लेनेके अद्भुत रहस्योंको समझा, न अपनी मंगल कामनाओंकी पूर्ति की। वे मुट्ठी बाँधकर यहाँ आये—और हाथ पसारे चले गये। उनकी स्मृतियोंका कोई चिन्ह आज संसारमें चिराग़ लेकर ढूँढ़नेपर भी न मिलेगा। अफ़सोस ! यह उनकी भयानक भूलोंकी कैसी शोचनीय दुर्घटना थी !

आप मनुष्य हैं, चुम्बक है। भूलके भयानक भ्रममें न भूलिये। चुम्बककी शक्तिशाली ताक़तें आपके अन्दर बड़ी वेचैनीसे दौड़ रही है, वे उन्नतिकी रेसमें आपको सबसे आगे बढ़ानेके लिये वेताव हैं, आपको वहुमूल्य उपहार देनेके लिये लालायित हैं। मानसिक विज्ञानकी आँखोंसे उन्हें देखिये, पहचानिये और इस वातकी प्रतिज्ञा कर लीजिये—"मैं अपनेमे आकर्षण उत्पन्न करूँगा। आजसे मेरा संसार—वह संसार होगा, जिसकी मैं स्वयं रचना करूँगा। आजसे मेरी ज़िन्दगी,—वह अद्भुत ज़िन्दगी होगी—जिसे मैं खुद साँचेमें ढालकर तैयार करूँगा।"

आजकल हम लोग विज्ञानके ज़मानेमे भ्रमण कर रहे हैं। विज्ञानने ही रेल, तार, रेडियो, ग्रामोफोन, वोलता वायस्कोप और हवाई जहाज इत्यादि सैकड़ो आश्चर्यजनक वस्तुओंकी सृष्टि की है। इनके आविष्कारक आपके ही जैसे दो हाथ-पाँववाले

मनुष्य थे। अगर आप उन्नति करना चाहते हैं, उन्नतिके शिखर पर चढ़कर गहरी बाज़ी मारना चाहते हैं, तो अपनेको पहचानिये—अपनेमें जागरण ज्योति जगाइये। सफलता आपके सामने जय-मुकुट लिये खड़ी रहेगी।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्यमें चुम्बक शक्ति तीन ताक़तोंसे उत्पन्न होती है। उनमें पहली ताक़तका नाम है—"हवा"। वह हवा, जो रोज़ाना साँसके ज़रिये आपके शरीरमें प्रवेश कर प्राण-शक्ति उत्पन्न करती है। दूसरी ताक़त उन 'तरल पदार्थों' की है, जिन्हें आप हर रोज पीते हैं! तीसरी ताक़त है—"खाद्य सामग्री"—जिसे आप भोजन करते हैं।

यह ताक़तें उस मनुष्यमें ज्यादा चुम्बक उत्पन्न करती हैं, जिसका स्वास्थ्य सुन्दर होता है। जिसमें पुरुषत्वकी लाली रहती है—जिसके बदनमें बल वीर्य चमचमाया करता है।

उठिये, जागिये। चुम्बक शक्तिसे संसारको अपनी तरफ खींचिये। फिर आप एक दिन देखेंगे—जिस मंगल कामनाकी पूर्तिके लिये आप कल सोच रहे थे, आज उसकी पूर्ति हो गई और आज जो कुछ सोच रहे हैं—वह कल पूर्ण होनेके लिये बाध्य है!

दुनियामें हमेशा चुम्बक बनकर जियो। अपनी प्रसन्नताओंको चारों तरफसे चमकाओ—शक्तियोंको जाग्रत करो। एक दिन तुम्हारे सामने हज़ारों स्त्री-पुरुषोंकी भीड़ लग जायगी!

स्वास्थ्य-विज्ञान

आपकी उम्र चाहे अठारह वर्षकी हो या अस्सी वर्षकी—चुम्बक शक्ति चमकानेके लिये सबसे पहले आपको स्वास्थ्य सुधारना होगा। यह ग़लत ख़याल है कि—"मैं वृद्ध हो रहा हूं"। मनुष्य अठारह वर्षको उम्रमें बूढ़ा हो सकता है और अस्सी वर्षकी उम्रमे जवान। ज़िन्दगीको नवजवानी और बुढ़ापेमें बदल देना मनुष्यके हाथकी बात है। हाँ, उसमें चाहिये—वैज्ञानिक रहस्योंके समझनेका ज्ञान !

पिछले पचास बरसोंसे विज्ञान जिस तीव्र गतिसे आगे बढ़ रहा हैं, उसे देखकर हम ताज्जुब किये बग़ैर नहीं रह सकते। अनगिनित आविष्कारों द्वारा उसने संसारकी काया पलट कर दी है। आज हम अपनेको विज्ञानकी बदौलत, सभी क्षेत्रोंमें दस बीस वर्ष पहलेकी अपेक्षा बहुत आगे बढ़ा पाते हैं।

अब मैं यहाँ स्वास्थ्य विज्ञानपर एक दृष्टि डालूंगा। यह विज्ञान दुसरे विज्ञानोकी अपेक्षा अभी बहुत पीछे है, और जीवनके

चुम्बक तत्त्वोंको चमकानेके लिये हमें उसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

हम रोगी हैं, बीमार हैं। हमें हमेशा कोई न कोई बीमारी सताती रहती है। क्यों ?—हम स्वास्थ्य रक्षाके नामपर अनाप-शनाप बाज़ारू दवाइयाँ खाते हैं और शरीरके अन्दर ज़हर फैलाते हैं। हो सकता है कि बाज़ारू दवाइयाँ हमें फौरन फायदा पहुंचा देती हों—मगर वे स्थायी रूपसे नहीं टिक सकतीं। उनके हटते ही बीमारियोंके प्रवेश द्वार खुल जाते हैं और हमारा शरीर बीमारियोंका घर बन जाता है। यदि आप कभी बीमार नहीं रहना चाहते, बदनमें आकर्षण, जीवनमें चुम्बक और आँखोंमें तेज लाना चाहते हैं—तो आप पहले तीन चीज़ोंको समझिये। वे क्या हैं:—

(१) हवा याने साँस लेनेकी वायु, (२) तरल पदार्थ, (३) भोजन।

यहाँ मैं सर्वप्रथम हवाके प्रयोगोंको समझाऊँगा।

हवा याने साँस लेनेकी वायु

"हवा"—क्या है ? हवा मनुष्यको प्राण प्रदान करनेवाली प्रकृतिकी वरदायिनी शक्ति है। मनुष्य बग़ैर भोजनके महीनों ज़िन्दगी क़ायम रख सकता है, बग़ैर पानी हफ्तों साँसके साथ लड़ सकता है, किन्तु यदि उसे ताज़ी हवा न मिले तो ?—वह चन्द घण्टोंमें तड़प-तड़पकर कुत्तेकी मौत मर जाय।

स्वास्थ्य-विज्ञान

यह बात मैं दावेके साथ कहता हूं कि वर्तमान समयमें हजारमे नौ सौ आदमी साँस लेनेके प्रयोगोंको नहीं जानते। यही वजह है, जो मनुष्योंकी आयु दिन-दिन घटती जा रही है, उनके सामने कमज़ोरियोंके ढेर लगे हैं, और वे मानसिक चिन्ताओंकी चितामें भस्म होते ज़ा रहे हैं!

आप हर रोज प्रातःकाल सोकर उठनेकी आदत डालिये। उषाकालके समय उठ तो बहुत सुन्दर! नित्यकर्मसे निवटकर हरे-भरे मैदान या बाग़-बग़ीचेमे चले जाइये और हरियालीका लुत्फ़ लेते हुए एक जगह सीधे तनकर खड़े हो जाइये। आँखें और मुंह बन्द कीजिये—फिर नाकसे ताज़ी हवा खींचकर शरीरके अन्दर भरिये। दस पन्द्रह सेकेण्ड तक उसे रोकिये, फिर आहिस्तः आहिस्तः मुंहके बाहर निकाल दीजिये। यह प्रयोग सुबह शाम दस-बारह मरतबे रोज़ कीजिये—आपके मृत जीवनमें संजीवनी बूटी जैसा असर होगा। हवाकी ताक़तसे चुम्बककी शक्तिशाली चिनगारियाँ आपके शरीरके अन्दर फैलेंगी और आपके बदनमें दिन व दिन आकर्षण बढ़ता जायगा। यदि बाग-बग़ीचे या मैदानमे जानेके लिये आपके पास समय न हो, तो मकानकी छतपर या खुली खिड़कियोंके सामने खड़े होकर यह वैज्ञानिक कसरत कीजिये; आपको नई और जोरदार ज़िन्दगी मिलेगी। दिल और दिमाग़में नई-नई शक्तियोंका जन्म होगा।

साँस शक्तिको बढ़ानेके लिये रोज़ थोड़ी कसरत करना आवश्यक है। देशी विदेशी दोनों ही तरहकी कसरतें चल सकती हैं। इससे सिर्फ आपकी साँस शक्ति ही नहीं बढ़ेगी—बल्कि आपका शरीर भी सुडौल होता जायगा। कसरतके अलावा दौड़ना, तैरना, मैदानमें घूमना, फुटबाल, हाकी या टेनिसके खेल भी साँस शक्तिको बढ़ाते हैं।

तरल पदार्थ

तरल पदार्थोंमें सबसे बड़ी चीज़ है—पानी। जिस तरह जलकी वर्षा मुरझाई खेतीको लहलहा देती है—पानी उसी तरह मनुष्य-शरीरको नये रंग रूपमें चमका देता है।

आप नौजवान हैं, मगर बूढ़ोंके कान काटते हैं। आपकी कमर झुक गई है, आँखोंके नीचे गड्ढे पड़ गये हैं, धुंधला दिखाई देता है, बदसूरत हो रहे हैं, गाल पिचक गये हैं या आप इस कदर मोटे हो गये हैं कि रास्ता चलते लोग आपका मज़ाक उड़ाते हैं, तो मैं कहूंगा—आप धोखेकी ओर बढ़ते जा रहे हैं, आप पानी पीना नहीं जानते, बीमारियोंसे आपको मुहब्बत हो गई है!

रोज नियमपूर्वक कमसे कम आठ ग्लास पानी पीजिये, उसे धीरे-धीरे हलकके नीचे उतारिये और स्वाद लेकर पीजिये। आपकी तमाम अन्दरूनी गन्दगी धुलकर साफ हो जायगी।

उसमें तेजस्वी शक्तियोंके बीज बो जायँगे। आपका सौन्दर्य दिन दूना रात चौगुना बढ़ेगा। स्नानके समय बदनके चमड़ेको चारों तरफ हथेलीसे रगड़िये—शारीरिक बीमारियोंका नाम निशान मिट जायगा।

यदि आप पानीके प्रयोगोंसे चूक जायँगे, तो आपके शरीरकी वैसी ही दशा होगी, जैसे मुरझाये बगीचेकी।

तरल पदार्थोंमे अगर आप काफ़ी, चाय, कहवा, शराब या दूसरे तेज नशे पीते है—तो धीरे-धीरे उनका बहिष्कार कर दीजिये। यह चीजें चुम्बक तत्वोंको मटियामेट कर देती हैं। दूध ज्यादा तादादमें पीजिये। हो सके तो हफ्तेमें दो-तीन वार मट्ठेका भी सेवन कीजिये।

भोजन

चुम्बक शक्ति बढ़ाने की तीसरी ताक़त है—भोजन।

मगर भोजन,—भोजनके तरीक़ेसे कीजिये। उन्हीं चीज़ोंको खाइये, जो आपको प्रिय हों और जिनका रूप रंग आपकी आंखों को सुख देनेवाला हो।

हममेंसे ज्यादा आदमी पेटकी बीमारियोंके शिकार हैं। कुछके पेट भारी हैं, कुछ के हल्के। कुछ हमेशाके लिये पेटके गुलाम हैं, कुछ पेटकी तरफ ध्यान ही नहीं देते। कुछ वहुत ज्यादा भोजन करके बीमारियोंको निमन्त्रण देते हैं, कुछ कम भोजन कर

दुर्वलताओंसे दोस्ती गांठते हैं। यह भूलें हैं। पेट मनका ढांचा है। शारीरिक 'विजली घर' की जितनी मैशीनें दौड़ती हैं—वे इसके नपे-तुले दायरेमें। दायरेके भीतर या वाहर जाना आपके पेटके लिये कुछवैसी ही दुर्घटना है—जैसी रेलके पहियोंका पटरियोंके वाहर चलना या अन्दर गिर पड़ना!

खाना धीरे धीरे और प्रसन्न मनसे खाइये। हमेशा इस वात का ध्यान रखिये आप चाहे जितना काममें 'विज़ी' हों, खाना समय पर खाइये। खानेको दांतोंसे खूब कुचलिये, महीन वनाइये और आहिस्तः आहिस्तः गलेके नीचे उतारिये। जो लोग खानेमें जल्दवाजी करते हैं और खाद्य पदार्थोंको अच्छी तरहसे कुचलकर नहीं खाते—वे अपने ही दांतोंसे अपनी कब्र खोदते हैं।

सादे भोजनके अलावा साग सब्ज़ी ज्यादा तादादमें खाइये। हरी और कच्ची चीज़ें शरीरमें ठोस ताक़त पैदा करती हैं। इनमें इतना ज्यादा 'विटामिन' होता है कि ये आपके अन्दर नमक, गंधक और लोहेकी शक्तियोंको वढ़ाती हैं तथा वदनमें ताज़ा रक्त पैदा करती हैं।

फल खानेकी मात्रा वढ़ा दीजिये। फलोंसे शरीरमें पाचन शक्ति वढ़ती है। इस पाचन शक्तिसे आपके विजलीघरका रसायनागार भरा-पुरा रहता है। ऋतुके वाहरकी चीज़ें भूलकर न खाइये, ये सख्त नुकसान पहुंचाती हैं।

आपके शरीरमें दांत सच्चे सेवक हैं, इनसे अच्छी सेवायें

लीजिये। अगर आप मांस खाते हैं तो उसका बहिष्कार कीजिये। मांस शरीरको फुलानेके सिवा आपमें कोई चमत्कार नहीं पैदा करता। ठण्डा भोजन ज़िन्दगीको शून्य और भारी बनाता है, इसलिये ठंढे भोजनकी आदत छोड़ दीजिये। घरका बना हुआ गर्म भोजन कीजिये, बाज़ारू चीज़ोंका खाना छोड़िये, साफ वर्तनोंमें खाइये और ज़रूरतसे ज्यादा भोजन कभी न कीजिये।

सफलताका रहस्य

विश्वास पूर्वक उपरोक्त नियमोंका पालन कीजिये, दरख्त् अपनेही बलपर अपनेमें लहरें निकालते हैं, आप स्वास्थ्यको सुन्दर और जीवनको भरापुरा रखनेके लिये हरे भरे दरख्तोंसे शिक्षा ग्रहण कीजिए और इस बातका हमेशा ध्यान रखियेः—

जिन्दगीके अमूल्य उपहार उन्हीं मनुष्योंको मिलते हैं, जो जीवनके कानूनोंको अच्छी तरह समझते हैं और नियम पूर्वक उन्हें मानते हैं। लापरवाही और सुस्ती शारीरिक शक्तियोंको नष्ट कर देती है इससे मनुष्यके चुम्बक तत्व हमेशाके लिये वेकार हो जाते है।

मनकी शक्तियाँ

आज संसारमें जितने मनुष्य अपने नामकी धूम मचा रहे हैं और आश्चर्यजनक आविष्कारोंसे दुनियाको चकित कर रहे हैं—वे आध्यात्मिक शक्तियोंके मास्टर हैं। उनके शक्तिशाली कार्यकलापोंसे संसारमें अद्भुत उलट-फेर हो रहे हैं, मनुष्योंकी उन्नतिके नये-नये रास्ते खुलते जा रहे हैं। यह शुभ लक्षण है। असलमें मनुष्यको पर्वत-शिखरपर पहुंचनेमें तभी तक दिक्कत और कठिनाई मालूम होती है, जब तक कि वह उसके रास्तोंको नहीं समझ लेता।

मनुष्यके लिये संसारपर विजय प्राप्त करनेकी सबसे बड़ी ताक़तें दो हैं—पहली मन शक्ति, दूसरी तलवार। लेकिन मन शक्तिके सामने तलवारकी ताक़त कमज़ोर साबित हो चुकी है—उस हालतमें कमज़ोर, जब कि मनुष्यका मन पूर्ण शिक्षित है, वह जीवनके असली रहस्योंको समझ चुका है।

सोचिये नहीं, मनकी शिक्षायें अज्ञानताको नष्ट कर जीवनके

रहस्य रूपोंको वैसे ही प्रदर्शित करती हैं, जैसे सूर्य-किरण उज्वलताओं द्वारा समस्त संसारको जगमगा देती हैं। आध्यात्मिक मनुष्य एक दिन वही हो सकता है, जो आज होनेकी इच्छा रखता है !

आपका शरीर कई हिस्सोंमें बँटा हुआ है, जैसे हाथ, पैर, नाक, कान इत्यादि। मगर आपके पास 'मन' एक ही है। आपके भविष्यकी सफलतायें और आपको अदृश्य शक्तियोंसे मिलानेवाली ताक़तें—आपके मनमें छिपी हुई हैं। मन शक्तियों द्वारा आप जो चाहे भविष्यमे बन सकने है, जिस वस्तुको चाहे प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि मनुष्य जीवनका यह अमिट क़ानून है कि 'मन' मनुष्यकी बड़ीसे बड़ी अभिलाषाओंकी पूर्ति करनेके लिये बाध्य है। हाँ, उसकी अभिलाषाओंमे चाहिये उत्साह। वह उत्साह जिसमे प्रसन्नताओंका झरना झरता हो, उमंगोंकी नदी बहती हो, साहस और शक्तियोंकी ज्योति जगमगाती हो।

मुसोलिनी कल ग़रीब लोहारका लड़का था—आज इटलीकी बागडोर उसके हाथमें है। हिटलर एक दिन दरिद्रताके पंजोंमें पिस रहा था—आज वह जर्मनीका भाग्य विधाता बन बैठा है। अमेरिकाके धनकुबेर राकफ़ेलर एक दिन सड़कोंपर मामूली चीज़ें बेचते थे—आज संसारके धनी व्यक्तियोंमें उनका नाम सबसे पहले लिया जाता है। आप स्वयं देखिये, आपके एक साधारण दोस्त जिन्हें कल बातें करनेका सलीक़ा न था, आज

अपनी स्पीचों द्वारा हजारों स्त्री-पुरुषोंको मुग्ध कर रहे हैं। क्यों? इसमें क्या रहस्य है? असलमें ये चुम्बक मनुष्य जिन्दगीके मूल रहस्योंको बहुत जल्द समझ गये। ये मन शक्तियोंका अध्ययन कर दिन बदिन जीवन संग्राममें आगे बढ़ते जा रहे हैं—सफलतायें इसीलिये इनके पैर चूमती हैं!

(मनुष्य अपना ही दोस्त है, अपना ही दुश्मन।)

यदि मैं आपसे कहूं कि आप राजनैतिक संसारमें नेपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी, महात्मा गांधी या पं० जवाहरलाल नेहरू बन जाइये। आर्थिक दुनियामें हेनरी फोर्ड, राकफ़ेलर या निज़ाम हैदराबाद बन जाइये। साहित्यिक संसारमें शेक्सपियर, बर्नार्ड शा या रवीन्द्रनाथ टेगोरकी तरह चमकिये—तो आप फौरन मेरी हँसी उड़ायेंगे और कहेंगे—"अजी छोड़िये यह चर्चा। कहां वे और कहां मैं! मैं कदापि इन महापुरुषोंका मुक़ाबला नहीं कर सकता।"

बस, यहीं आप धोखा खा गये। मनके सन्देहने आपको उठाकर पटक दिया। अब आप उठनेका नाम नहीं लेते और अफ़ीमचीकी तरह पड़े मिनमिना रहे हैं। कितनी बड़ी बुज़दिली है यह!

आप जो चाहें हो सकते हैं, आपके लिये कोई बात असम्भव नहीं। आप उन मनुष्योंसे बहुत बड़े हैं, जिनका नाम इतिहासके पन्नोंमें चमक रहा है। हाँ, उनमें और आपमें इतना फ़र्क ज़रूर

है कि वे आपकी तरह ग़ाफिल न थे। उन्होंने मनकी वैज्ञानिक ताक़तोंको पूर्ण रूपसे अध्ययन किया था। आँख खोलकर देखिये—मन वैज्ञानिक शक्तियोंका ख़जाना है। वह आपको एक क्षणमें उन्नतिके शिखरपर चढ़ा सकता है, एक क्षणमें पतनके गहरे गड्ढेमें धकेल सकता है। उसके चढ़ाव उतार और उत्थान पतन हमारे दिल, दिमाग़ तथा स्वास्थ्यपर कितना गहरा असर डालते हैं, इसके मैं यहाँ दो एक उदाहरण पेश करता हूं:—

मान लीजिये आपका कोई दोस्त कटोरा भर दूध आपके पास ले आया और बोला—"जनाब, इसे पी जाइये। इसमे मिश्री घुल रही है, केशरकी सुगन्ध है।"—उसे देखकर आपका मन ललचा उठेगा और आप फौरन उसे पी जायँगे। थोड़ी देर बाद यदि मैं कहूं—"हुज़ूरने बड़ी ग़लती की, दूधमें एक चूहा गिरकर मर गया था"—तो ? अब आप ही बताइये, आपके मनकी क्या हालत होगी ? आपका सिर घूमने लगेगा। जी मिचलायगा और क़ै करनेकी इच्छा होगी।

दूसरी बात—

आपने किसी बच्चेकी माँ से जाकर कह दिया—"ग़ज़ब हो गया, तुम्हारा बेटा तालाबमें डूबकर मर गया।" अब देखिये माँ के मनकी हालत! उसकी आँखोंके आगे अँधेरा छा जायगा। वह छाती पीटने लगेगी और मारे ग़मके बेहोश हो जायगी। यदि उसी समय मैं वहाँ टपक पड़ूं और कह दूं—"आपका बच्चा

ज़िन्दा है, लो,—वह आ गया।" तब? बताइये, माँ के मनकी हालत? वह मारे ख़ुशीके उछल पड़ेगी, सारा ग़म भूल जायगी, दौड़कर बच्चेको छातीसे चिपटा लेगी, उसे चूमेगी और स्वर्गीय सुखका अनुभव करेगी।

आप अपने ही मनको लीजिये। जब आप संगीत सुनते हैं, तो मस्तीसे झूमते हैं। मगर जब हाहाकार सुनते हैं—तब? मैं समझता हूं, आप थर्रा उठते होंगे!

अपने गुस्सेपर ग़ौर कीजिये, जब आप क्रुद्ध होते हैं—आपके सरपर ख़ून और अत्याचारके भूत नाचने लगते हैं, आप भयानकसे भयानक पाप कर डालते हैं। लेकिन जब बहुत प्रसन्न रहते हैं, तब?—मैं समझता हूं, आपके मनमें बड़ी फुरती रहती होगी, आप मनुष्योंको प्यार करते होंगे, आपको संसार बड़ा सुन्दर दिखाई देता होगा।

असलमें यह सब मनके करिश्में हैं। आप मनको जिस रास्तेसे ले जायगे, वह उसी रास्तेसे जायगा। चलाहे वह रास्ता अच्छा हो या बुरा। अगर आपके मनमें अच्छी बातें दौड़ रही हैं, तो समझ लीजिये—आपका मन सफलताकी ओर जा रहा है। आपके दिमागमें नई-नई शक्तियोंका जन्म हो रहा है। यदि उनमें बुराइयाँ भर रही हैं, तो समझ लीजिये—आप पतनकी ओर जा रहे हैं और आपका जीवन नष्ट होनेमें देर नहीं है।

मनके आंदोलनोंको आँखे खोलकर देखिये, उसकी आवाज़ोंको कान लगाकर सुनिये, वह कहता हैं :--"ऐ मनुष्य ! तू मुझे अच्छे रास्तेसे ले चल। मैं तुझे जीवनके सब उपहार भेंट करूँगा।"

जिन मनुष्योंके आँख कान खुले हुये हैं, वे मनकी आवाज़ोंको देखते हैं, सुनते हैं और अच्छी बातें ग्रहण करते हैं। जो अन्धे और बहरे हैं, वे मनकी ज़रा भी परवाह नहीं करते। वे बुराइयाँ ग्रहण करते जा रहे हैं। उन्हें बुराइयोंमें ही आनन्द आता है। वे मनुष्य रूपमें उस कीड़ेका जीवन व्यतीत कर रहे है, जो परनालेकी गन्दगीमे ही अपनी ज़िन्दगीको धन्य मानता है और मर जानेकी ज़रा भी इच्छा नहीं रखता।

हमे उचित है, हम अपने मनमें ज़रा भी गन्दगी या उदासी न आने दें। उसे प्रसन्नताओंसे भर दें, उसे ऊँचेसे ऊँचा चढ़ाय और अपनी विचार-शक्तियोंको उच्च अभिलाषाओंके साथ खुलकर खेलने दें। आत्मिक शक्तियोंका उदय होना बड़े भाग्यकी बात है, यह भाग्य मनुष्यके हाथमें है, वह जब चाहे उसे बना बिगाड़ सकता है।

अपनेको देखिये। अपने मन तथा शरीरको देखिये। जिस दिन आप मानसिक शक्तियोंके मास्टर हो जायँगे, उस दिन आपको भविष्य अत्यन्त उज्वल दिखाई देगा। उस उज्वल प्रकाशमें आप स्वयं जज बनकर अपना फैसला लिखेंगे—"मैं

स्वयं अपने भाग्यका विधाता हूं। सफलताय मेरे दाहिने-बाय चलती हैं।"

(आपकी ज़िन्दगीका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व आपके मनकी संचालन क्रियापर निर्भर है।) इसलिये मनको नये, आकर्षक और अच्छे कार्योंकी तरफ दौड़ाइये। पुराने, सड़े-गले और मुर्दा ख़यालोंको मनसे निकाल बाहर कीजिये। उसमें नई नई आशाओंका जन्म होने दीजिये, आकर्षक अभिलाषाओंको चक्कर काटने दीजिये।

यह सही है और बिलकुल दुरुस्त है कि आप मनकी खेतीमें जिन बीजोंको बोयेंगे—भविष्यमें उन्हींको काटेंगे। इसलिये मनकी खेतीमें बबूल न बोकर फूलोंके बीज बोइये। आपकी ज़िन्दगी खिल उठेगी और उसकी खुशबूसे सारा संसार महक उठेगा।

धनसे ही कोई मनुष्य,—मनुष्य नहीं हो जाता। मनुष्य वे हैं, जो मन शक्तियोंके बादशाह हैं। संसारकी समस्त शक्तियां जिनके आगे नतमस्तक हैं। मनको विमल करो, सरल बनाओ।

हम दुख सुखकी आँधियोंपर चल रहे हैं, मगर मन हमारे हाथमें है। समुद्रमें नौका डूब गई, यह सोचकर हम अपनी ज़िन्दगी क्यों डुबा दें! तैरनेसे किनारा अवश्य मिलेगा।

मनुष्य अन्तर्जगत्का कर्ता है। अपने वैभव पाकर कौन नहीं खुशी होता? मनकी मिट्टीमें जो फूल खिल रहे हैं, मनके

आकाशमें जो चन्द्रमा उदय हो रहा है, जो सागर लहराता है—उसके मालिक और संचालक स्वयं हम है। उसके आनन्दोंको हमारे सिवा कौन भोग सकता है ?

अपने कानोंमें इन आवाज़ोंको बिजलीकी तरह कड़कने दीजिये और आज ही, अभी, अग्नि अक्षरोंसे जीवनकी डायरीमे नोट कर लीजिये :—"मैं ज़मीनपर चलते हुए मनको आसमानमें उड़ाकर देखूंगा—दुनिया किधर दौड़ी जा रही है, इस दौड़में मेरा क्या स्थान है ? मैं आगे हूं या पीछे ?"

घुमक्कड़ मन

आप कोई काम करने जाते हैं, उसमें सफलता नहीं मिलती, आपकी सारी दौड़ धूप और मेहनत बरबाद हो जाती है। आप 'फेल' होकर भाग्यको कोसते हैं, ज्योतिषियोंको हाथ दिखाते हैं, पंडितोंसे पूजा पाठ कराते हैं। फिर भी कुछ नहीं होता। क्यों?—इसमें क्या रहस्य है?

मैं कहूंगा—आपका मन घूमता है। आप जीवनके क़ानूनोंको नहीं जानते। मानसिक बीमारियाँ आपके रग-रगमें प्रवेश कर गई हैं; लोभ, लालसा और विलासिताओंके आकर्षणने आपको मेरियानेट कर डाला है। फिर इसमें भाग्यका क्या दोष?

आप मनको पूर्ण रूपसे क़ाबूमें कर उसे शिक्षित क्यों नहीं बनाते? अशिक्षित और शिक्षित मनमें उतना ही अन्तर है, जितना कि चाँदनी और अन्धकारमें। शिक्षित मनके मनुष्य हमेशा मानसिक शक्तियोंके उपासक होते हैं। वह मनुष्यत्वके गौरवको स्वप्नमें भी नहीं खोते। इनके कार्योंमें पशुओंकी प्रवृत्ति

ऐसे घुमक्कड़ मनके मनुष्योंकी संख्या संसारमें बहुत ज्यादा है। ये मनुष्य असफलताओंके लिये स्वयं अपनेको अपराधी नहीं ठहराते। भाग्यको दोष देते हैं, ईश्वरपर कुढ़ते हैं और निराशाके अन्धकारमे मौतको टटोलते हैं।

मैं पूछता हूं, आप मन शक्तियोंको जगाते क्यों नहीं? अच्छे काम कलके लिये छोड़ देते हैं, आज ही क्यों नहीं करते? कल शायद आपका मन बदल जाय तो?—निःसन्देह आप निशानेसे चूक जायँगे।

(आपके मनमे वे अद्भुत शक्तियाँ मौजूद हैं, जिन्हें आपने न तो सोचा है, न कभी देखा है।) यह सच है कि मनुष्यके मनमें एक बार ऐसा विद्रोही समय आता है, जब वह मानसिक शक्तियोंके आनन्दोंको लेकर इस तरह मुग्ध हो जाता है कि उस समय न तो उसे घरकी चिन्ता रहती है, न परिवारकी फ़िक्र। उसे उसके जीवनका अनन्त प्रेम विश्व धारामें तिनकेकी तरह वहा ले जाता है। उस समय वह अपनेको पहचानता है, मनुष्य जीवनको क़ीमत समझता है और संसारके समस्त आनन्दोंको प्राप्त करता है।

(आपके भविष्यको आशायें और अदृश्य शक्तियोंसे परिचय करानेकी कलाये आपके मनके अन्दर छिपी हैं।) यदि आप संसारमें सफलता चाहते हैं, सद् इच्छाओंकी पूर्ति चाहते हैं, तो मनको घूमनेसे रोकिये। उसे एकाग्रताका पाठ पढ़ाइये। सफलता पहले मनमे प्राप्त कीजिये, फिर संसारमें। जिस

हँसी-मज़ाकके बाद मालूम हुआ, आप इन दिनों रिक्शेका कारबार करते हैं। फ़िलहाल किसी मोटर कम्पनीकी एजेन्सी लेनेकी फ़िराकमें हैं। कुछ दिनों बाद मैंने उन्हें चायकी एक छोटीसी दूकानपर बैठे देखा। मुझे देखते ही खिल गये और चश्मेवाली नाक ऊँची उठाकर बोले—"आजकल इसी पेशेमें हूं। अब एक अख़बार निकालनेका इरादा है। कभी-कभी आप भी लेख और कवितायें लिखते रहियेगा।"

इस तरह मेरे इस सनकी दोस्तने एक वर्षके अन्दर कई अवतार ले लिये। बीसों कारबार किये और छोड़े। उन्हें किसी काममें सफलता नहीं मिली। आजकल वह दाने-दानेको मुहताज हैं। कारण साफ है, उनका मन एक मिनटके लिये भी कहीं नहीं टिकता। वह कभी नौकरीका तिकड़म लगाते हैं, कभी शेयर मार्केटमें सट्टेका प्रोग्राम बाँधते हैं। एक काम आरम्भ करते हैं, दूसरा छोड़ते हैं और तीसरेके इश्कमें बेज़ार हो जाते हैं। उनका मन कभी टूटी नौकाकी तरह संसार सागरमें डूबता उतराता है, कभी आँधीकी तरह आसमानमें उड़ता है। वह कभी भूकम्प बन जाते हैं, कभी सावन-भादोंकी बारिश!

यह क्यों? उनकी शक्तियाँ क्यों फेल हो रही हैं? इसका प्रधान कारण यह है कि उनका मन घूमता है। वह अपने मनको क़ाबूमें नहीं रख सकते। उन्हें दैनिक कार्योंमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं रहती।

ऐसे घुमक्कड़ मनके मनुष्योंकी संख्या संसारमें बहुत ज्यादा है। ये मनुष्य असफलताओंके लिये स्वयं अपनेको अपराधी नहीं ठहराते। भाग्यको दोष देते हैं, ईश्वरपर कुढ़ते हैं और निराशाके अन्धकारमे मौतको टटोलते हैं।

मैं पूछता हूं, आप मन शक्तियोंको जगाते क्यों नहीं? अच्छे काम कलके लिये छोड़ देते है, आज ही क्यों नहीं करते? कल शायद आपका मन बदल जाय तो?—निःसन्देह आप निशानेसे चूक जायँगे।

(आपके मनमें वे अद्भुत शक्तियाँ मौजूद हैं, जिन्हें आपने न तो सोचा है, न कभी देखा है।) यह सच है कि मनुष्यके मनमें एक बार ऐसा विद्रोही समय आता है, जब वह मानसिक शक्तियोंके आनन्दोंको लेकर इस तरह मुग्ध हो जाता है कि उस समय न तो उसे घरकी चिन्ता रहती है, न परिवारकी फ़िक्र। उसे उसके जीवनका अनन्त प्रेम विश्व धारामें तिनकेकी तरह वहा ले जाता है। उस समय वह अपनेको पहचानता है, मनुष्य जीवनकी क़ीमत समझता है और संसारके समस्त आनन्दोंको प्राप्त करता है।

(आपके भविष्यको आशायें और अदृश्य शक्तियोंसे परिचय करानेकी कलायें आपके मनके अन्दर छिपी हैं। यदि आप संसारमे सफलता चाहते हैं, सद् इच्छाओंकी पूर्ति चाहते हैं, तो मनको घूमनेसे रोकिये। उसे एकाग्रताका पाठ पढ़ाइये। सफलता पहले मनमे प्राप्त कीजिये, फिर संसारमें। जिस

कामको कीजिये, उसमें ज्यादेसे ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न कीजिये, उसकी हरएक कला, हरएक बारीकीको समझिये और उसकी गहराई तक पैठ जाइये। दूसरा काम तब तक शुरू न कीजिये, जब तक कि पहला पूर्ण रूपसे सफल न हो जाय। अन्दरूनी ताक़तें बढ़ानेका यही जय-मार्ग है।

रूप, रस और गन्धको लेकर ही इस संसारकी रचना हुई है। मनुष्य इसके असीम सौन्दर्यका प्यासा है। मगर उसकी मंज़िल कांटोंसे भरी है। रोग, शोक, वेदनायें तथा विपत्तियाँ उसे विश्वका असीम आनन्द उपभोग करनेमें पद-पदपर बाधायें डालती हैं। यदि हम इन बाधाओंको दूर नहीं करते, तो हमारा जीवन एक अभिशाप बन जाता है। हमारे लिये ईश्वरकी यह संगीतमुखर लीला भूमि श्मशानके रूपमें पलट जाती है और हम दुर्बलताओंको लेकर जीवन संग्राममें हर समय हारते जाते हैं। भय, दुःख, क्रोध, ईर्षा और दूसरी ऐसी ही गन्दी भावनायें कभी आपकी सहायता नहीं कर सकतीं। बल्कि यह मानसिक शक्तियोंको नष्ट कर डालती हैं। इनसे हमारे शरीरका ख़ून ज़हर हो जाता है और हम असमयमें ही कराल कालके ग्रास बन जाते हैं।

मनमें किसी बातकी अभिलाषा होते ही आपको यह न समझ लेना चाहिये कि फ़ौरन उसकी पूर्ति हो जायगी। अभिलाषामें जब तक काफ़ी शक्ति नहीं होती, तब तक उसकी पूर्ति होना असम्भव है। यह नहीं कि आज आपके मनमें एक अभिलाषा

उठी और कल ग़ायब ! ऐसी क्षणिक अभिलाषाओंको मनमें जन्म देकर आप मानसिक शक्तियोंको नष्ट न करें। आपके मनमें स्थायी अभिलाषा क्या है ? इसे सामने रखकर उसकी पूर्तिका प्रोग्राम बनाइये। स्वयं अपनेको और अपने भविष्यको देखिये, तथा अपनी ग़लतियोंका संशोधन कीजिये।

मनकी एकाग्र शक्तियोंने आज कितने ही फ़कीरोंको अमीर बना दिया। कितने ही मूर्खोंमें विद्वत्ताकी चमक आ गई, नीचे गिरे हुए ऊपर चढ़ गये। दुःख और सुख, अच्छा और बुरा, सफलता तथा असफलता मनुष्यकी मन शक्तियोंपर निर्भर है। मनको कब्ज़े में रखकर आप संसारमें सिर्फ सफल व्यक्ति ही नहीं कहे जा सकते, बल्कि आप बहुत वर्षो तक जीवित रह सकते हैं। आप जो जवानीकी उम्रमें ही बूढ़े हो गये हैं— इसका प्रधान कारण यह है कि आपका मन हरदम चलायमान रहता है---आप कभी उसे कब्ज़े में नहीं कर पाते !

मनमें एकाग्र शक्ति प्राप्त करनेवाले मनुष्य संसारमें कभी किसी दिन, किसी समय असफल नहीं होते। मैं समझता हूं, आप इस विषयको गहराईके साथ अध्ययन करेंगे और अपने व्यक्तिगत सौन्दर्यको बढ़ानेमें ज़रा भी देर न करेंगे।

स्वास्थ्य, प्रसन्नता तथा सफलता मनुष्यका जन्मसिद्ध अधिकार है। वह मानसिक शक्तियोंसे अपने शरीरको बहुत दिनों तक क़ायम रख सकता है !

एकाग्रता

एकाग्रताके माने हैं—गुप्त ध्यान। गुप्त ध्यानसे सत्य प्रेम मिलता है, सत्य प्रेमसे अभिलाषाओंपर विजय होती है।

आप एकाग्रता द्वारा उस अनन्त आत्मा (ब्रह्म) अथवा शक्तिके अटूट भंडारके साथ मिल जाते हैं, जिससे इस ब्रह्मांडकी उत्पत्ति मानी जाती है। यह सम्पर्क स्थापित होते ही आप शक्तिशाली बन जाते हैं। क्योंकि संसारकी समस्त सिद्धियाँ एकाग्रतासे प्राप्त होती हैं। आपके मनमें जो सत्य संकल्प उठते हैं, वह तुरन्त सिद्ध हो जाते हैं।

एकाग्रतासे संसारमें ऐसी कोई चमत्कारी वस्तु नहीं, कोई ऐसी घटना नहीं, जो इसके द्वारा प्राप्त या सम्भव न की जा सके। दूरदृष्टि, दूरश्रवणशक्ति, परविचारबोध, भविष्य ज्ञान, आकाश भ्रमण, भारीसे भारी हो जाना, हल्केसे हल्का हो जाना आदि आदि एकाग्रताकी ऋद्धि-सिद्धियाँ हैं। आप एकाग्रतासे असत्में से सत्, अन्धकारमें से ज्योति और मृत्युमें से अमृतका आविष्कार कीजिये।

देवताओंमें एकाग्रता शक्ति सबसे प्रबल है। ब्रह्मा इसी शक्तिसे सृष्टिकी रचना करते हैं, विष्णु इसी शक्तिसे संसारका पालन करते हैं, शंकर इसी शक्तिसे संहारका भयानक नाटक खेलते हैं!

परन्तु हम मनुष्य हैं, यह हमारी मूर्खता है कि जहाँ हम मनुष्योंकी उन्नतिके लिये देवी-देवताओं या प्राचीन ऋषि मुनियोंके उदाहरण पेश करते हैं, लोग हमारी हँसी उड़ाने लगते हैं और इस तरहके उपदेश देनेवालोंको कसकर उल्लू बनाते हैं। ऐसे निन्दनीय मनुष्य हृदयके बड़े दुर्बल होते हैं। वे अपनेको दुनियामें बलवान नहीं, कमज़ोर साबित करते हैं। ज़मानेको दोष देते हैं, मगर ज़मानेको पलटनेकी ज़रा भी कोशिश नहीं करते।

हम मनुष्य हैं, यह ठीक है। लेकिन हमें देवी-देवताओं और ऋषि मुनियोंके गुणोंको प्राप्त करने तथा उनके चरण-चिन्होंपर चलनेका पूरा अधिकार है। इस अधिकारसे हम हज़ारों फ़ायदे उठा सकते हैं। जो आज हैं, भविष्यमे उससे बहुत अच्छे हो सकते है, और एक दिन बहुत अच्छेसे सर्वश्रेष्ठ भी बन सकते हैं।

(आपकी विजय शक्ति है—मनकी एकाग्रता।) यह शक्ति मनुष्य जीवनकी समस्त ताक़तोंको समेटकर मानसिक क्रान्ति उत्पन्न करती है। इसी क्रान्तिमे आपका जीवन पलटता है और

३

आपकी मनोकामनायें पूर्ण होकर स्वयं आपके सामने प्रकट हो जाती हैं। उस समय आप अपने लिये उतने ही बड़े हो जाते हैं, जहाँ तक कि आप पहुंचनेकी कोशिश करते हैं। आप उतने ही लम्बे-चौड़े भी हो जाते हैं, जितनी कि आपकी कामनायें, सदिच्छायें और सुन्दर भावनायें।

यह एक ऐसा वैज्ञानिक तत्त्व है, जो एक दिन आपके मुर्दा जीवनमें अमृतकी वर्षा कर सकता है। आपके विचारोंमें बिजलीकी ताक़त उत्पन्न कर सकता है, आपकी समस्त बाधा-विपत्तियोंको छिन्न-भिन्न कर सकता है, और आपके रास्तेके काँटोंको फूलोंमें बदल सकता है। आप अपने मनको इन विज्ञान-क़ानूनोंका अध्ययन करने दीजिये—अद्भुत चमत्कार देखनेको मिलेंगे।

आज इसी एकाग्रताके पीछे पागल होकर संसारके शक्तिशाली मनुष्य दुनियामें बड़ेसे बड़े काम कर रहे हैं, ज्यादेसे ज्यादे रुपये कमा रहे हैं और अपनी उज्वल कीर्तियोंको दसों दिशाओंमें चमका रहे हैं। हम उनकी वैज्ञानिक ताक़तोंको देखकर चौंकते हैं, उनके आविष्कारोंपर आश्चर्य करते हैं और अपने लिये कुछ नहीं कर सकते। अफ़सोस!

हमारी बेवक़ूफ़ियोंका प्रधान कारण यह है कि हम भाग्य और कमजोरियोंके गुलाम बन गये हैं। हमारे अन्दर पशुओंकी समानता हुग गई है।

आँखें न बन्द कीजिये, उन्हें खोलिये, संसारकी तरफ देखिये। वे मनुष्य जिनकी ज़िन्दगी सफल है, जिनका जीवन धन्य है, एकाग्रतासे बराबर अपनी अभिलाषाओंको मुट्ठीमें करते जाते हैं। आज चाहे वे जागते हों या सोते, यात्रा करते हों या आरामसे घरमें बैठे हों—वे मन शक्तियोंके मास्टर हैं। वे जिस रूपमे जहाँ चाहते हैं, भाग्यचक्रको घुमाते हैं और युगान्तरकारी सफलताय प्राप्त करते हैं।

एक धान कूटनेवाली स्त्री एक हाथसे ढकी चलाती है, दूसरेसे उछलते हुए धानोंको समेटकर ऊखलमें डालती रहती है, साथ ही ग्राहकोंके साथ धानका मोल तौल भी करती जाती है; परन्तु यह सब होनेपर भी ऊखलमें पड़कर कहीं हाथमे चोट न आ जाय, वह पूर्ण सतर्कताके साथ अपने मनको प्रधान कार्यमें एकाग्र रखती है। इसी तरह आप कितने ही सांसारिक कार्योंको करते हुए भी अपने प्रधान कार्यमें मनको एकाग्र रखिये। भगवान गीतामें कहते हैं—"इन्द्रियोंमे मन मैं हूं।" मन जिस पदार्थको देखता है, उसीके आकारका हो जाता है। तमोगुणी पदार्थोंका ध्यान करनेसे तमोगुणी, रजोगुणी पदार्थोंका ध्यान करनेसे रजोगुणी और सत्त्वगुणी पदार्थोंका ध्यान करनेसे सत्त्वगुणी हो जाता है। इसलिये मनको बुरे कार्योंमें न दौड़ाकर उसे सुकार्योंमे एकाग्र करना चाहिये। मनुष्य जीवनकी यह महान मन्त्रशक्ति है।

(यह विशाल विश्व एक बड़ा भारी तम्बू है। उसमें आप जीवनका अद्भुत चर्खा चला रहे हैं। सत्य ही का उसमें तकुआ लगा है। सुन्दर वस्त्र तैयार करनेके लिये सूत बनानेमें आप होशियार जुलाहेके समान हैं। आपकी ज़िन्दगीका समस्त उत्तरदायित्व आपकी एकाग्रतापर निर्भर है।)

मनकी एकाग्रता मनुष्य जीवनपर कैसा गहरा असर डालती है, ऐसी दो सत्य घटनायें मैं आपके सामने पेश करता हूं :—

इंगलैण्डके एक गृहस्थने अपने कमरेमें एक कुमारीका सुन्दर चित्र टाँग रखा था। उनसे मिलनेवाले एक सज्जनने उस चित्रको देखकर कहा—"आपकी पुत्री—जिसे मैंने अभी देखा है—का यह चित्र बिलकुल जैसेका तैसे हुआ है। एकदम हूबहू—वैसे ही हाथ पाँव, वैसा ही रूप रंग। आपने इसे किसी कुशल चित्रकारसे बनवाया होगा—क्यों?" गृहस्थने उत्तर दिया—"यह चित्र मेरी पुत्रीका नहीं है। हाँ, इस चित्रके अनुसार हो मेरी पुत्रीकी रचना हुई है।" इसपर आगन्तुकने विस्मित होकर कहा—"आप क्या कह रहे हैं? इस चित्रानुसार आपकी पुत्रीकी रचना हुई है! कोई शिल्पी या मूर्तिकार नमूनेके अनुसार जिस प्रकार सुन्दर मूर्ति बना देता है, उसी प्रकार क्या आपने भी इस चित्रानुसार अपनी पुत्रीका आकार बना लिया है?" गृहस्थने हँसकर जवाब दिया—"मेरी पुत्री जब गर्भमें थी, तब उसकी माताने इस चित्रका एकाग्रतापूर्वक ध्यान किया था, तथा इस

प्रकारकी सुन्दर आकृतिवाली पुत्री मेरे भी हो, ऐसी दृढ़ इच्छा की थी। इसीके परिणामस्वरूप इस चित्रके अनुसार ही हमारी कन्या हुई।"

दूसरी घटना यों है—

"एक इटालियन स्त्रीका सद्‌गुणी बालक उसकी बहिनके यहाँ कुछ दिनों तक रह चुका था। इस बालकके चाल चलन और व्यवहारोंपर मुग्ध होकर वह स्त्री इस बालकको अपने पुत्रसे भी अधिक प्यार करने लगी और बार-बार उसी बालकका स्मरण चिंतवन करती रही। कुछ दिनों बाद उस स्त्रीके एक बच्चा पैदा हुआ, जो रूप रंग आदि सभी बातोंमें उस बालकसे इतना मिलता था कि जब वह आठ वर्षका हुआ, तब देखनेवालोंको दोनों बालक सहोदर भाईके समान दिखाई देते थे।"

ऐसी घटनायें प्रायः रोज घटती हैं। अब हमें ध्यानपूर्वक यह देखनेकी ज़रूरत है कि आप घूमते हुए मनको किस तरह कब्ज़ेमें कर "एकाग्रता" प्राप्त कर सकते हैं। रास्ता साफ है। पहले आप मनमें यह तय कर लीजिये कि हम क्या चाहते हैं, हमारा उद्देश्य क्या है? जब इसका निर्णय हो जाय, तब पूर्ण शक्तियोंके साथ आगे बढ़िये। मान लीजिये, आप अपने ख़ज़ानेमें सोनेका ढेर देखना चाहते हैं, तो आपका पहला कर्तव्य यह है कि आप घूमते हुये मनको क़ाबूमें कीजिये। एक मनसे रात दिन सोनेके स्वप्न देखिये, सोनेकी कल्पनायें कीजिये—यहाँ तक

कि अपनेको दृढ़ सोना बना डालिये, दूसरी अभिलाषाओं पास न फटकने दीजिये—फिर देखिये चमत्कार! एक दि आपके खजानेमें सोना ही सोना भरा दिखाई देगा!

इन लोगोंमें एक छोटीसी कहानी बहुत मशहूर है—'जंगल एक शिकारी धनुषकी डोरीको ठीक कर रहा था। वह अप कामनें इस क़दर एकाग्रचित्त था कि एक बड़ी फौज उस रास्तेसे निकल गई। फौजके चले जानेके बाद वहाँ एक संन्यासी आया। उसने शिकारीसे पूछा—"क्यों जी, इधर होकर अभी फौज गई है न?" शिकारीने कहा—"नहीं।" सन्यासीने शिकारीको अपना गुरु बनाया, क्योंकि वह अपने कार्यमें इतना दत्तचित्त रहनेकी शक्तिवाला था कि फौज निकल गई—मगर उसे पता तक नहीं!"

आप अपने कार्यमें शिकारीकी तरह तल्लीन रहिये और याददाश्तके लिये इस कहानीको नोट कर लीजिये।

यदि आपका मन ऊबता है, बहुत कोशिश करनेपर भी आप उसे काबूमें नहीं कर पाते—तो फुरसतके समय कोई उपन्यास पढ़िये। ऐयारी, तिलिस्मी, जासूसी और मनोहर कहानियोंकी पुस्तकें ज्यादा लाभदायक सिद्ध होंगी। जब फिर आनन्द आने लगे, तब क्रमशः आध्यात्म, दर्शन और उपनिषदोंकी ओर बढ़िये। संगीतमें मन बहलाइये, शतरंजका अभ्यास कीजिये। जादूके खेल, खेल खेलिये और सरकस, नाटक देखिये। अपने मन

ज्यादेसे ज्यादा दिलचस्पियाँ और प्रसन्नताएँ उत्पन्न कीजिये। एकाग्र-शक्ति बढ़ानेकी यह सुनहरी कुंजियाँ हैं।

यदि आप एकाग्रचित्त हो रहे हैं, तो इसका यह मतलब हुआ कि आप अपने ऊपर जादू कर रहे हैं, ज्ञान-शक्तियोंको जगा रहे हैं और मौलिकताका प्रकाश बढ़ाते हुए सफलताकी सीढ़ियोंपर चढ़ रहे हैं!

आनन्दमय जीवन

चिन्ता, उदासी, बेचैनी और निराशा,—यह सब ऐसी गन्दी बीमारियाँ हैं, जो मनुष्यकी मानसिक कर्म-शक्तियोंको नष्ट कर देती हैं—उसका जीवन अन्धकारसे घिर जाता है, स्वभावमें चिड़चिड़ाहट आ जाती है और वह ज़रा-ज़रासी बात पर अर्थका अनर्थ कर बैठता है।

मैं पूछता हूं, आप इन गन्दी बीमारियोंको मनमें स्थान क्यों देते हैं? इन्हें फौरन हटानेकी सुन्दर दवा है—आनन्दमय जीवन। वह आनन्दमय जीवन, जिसके सुखका संगीत है—सफलताओंका मधुर मिलन। जिस दिन आप आनन्दके सौंदर्य प्राणोंसे अपने प्राण मिलायेंगे—आपको कोई पाप ताप न जला सकेंगे, आप कालचक्रके महा समरमें विजयी होंगे और खोई हुई जवानीको पुनः प्राप्त करेंगे।

यदि दुनिया तकलीफोंसे भरी है तो भरी रहे। पर इसी कारण आप जीवनसे निराश न हों। अनन्त आनन्दमय जीवनका

जो स्रोत आपके चारों ओर प्रवाहित हो रहा है, उसमें आपका स्थान एक तरंगके समान है। इसलिये संसारके दुःखोंको अपना दुःख समझना, अपने हृदयमें सहानुभूतिके भाव उत्पन्न करना आपका धर्म है; परन्तु जीवन-बन्धनसे मुक्त होनेकी कोशिश करना आपका धर्म नहीं। आदर्श पुरुष वही है, जो दूसरोंको दुखी देखकर या स्वयं दुःख पाकर कभी मुखसे 'आह' नहीं निकालता, और जो अपनी जीवन-यात्रामें कभी असत्यका आश्रय नहीं लेता। आपको अपना स्वभाव कुछ ऐसा बना लेना चाहिये, जिसकी बदौलत आपको संसार सदा सुन्दर और आनन्दमय दिखाई दे, तथा जीवन समरमे आपको कभी निराशाओंसे भेंट न हो।

सत्यकी ओर देखिये, संसारको देखिये और देखिये अपनी अन्तरात्माको। वह कौनसी वस्तु है, जो आपके जीवनको संचालित करती है? समस्त नीति और उपदेशोंमें कौनसी प्रेरणा है, जो मानव-समाजको नियन्त्रित कर रही है? 'मैं जीवित रहूं, अपनेको ऐश्वर्यमण्डित करूं और संसारपर अपना प्रभुत्व क़ायम करूं'—यही तो मानव हृदयकी सच्ची आवाज़ है। यही तो उसके जीवनकी स्वाभाविक आकांक्षा है। यदि यह नहीं, तो और कौनसी वस्तु उसमे शेष है, कोई बतावे तो?

ज़रा देखिये—हमारा हर रंग मस्तीका मयख़ाना है। हमारी हर उमंग हाथोंमे मस्तीका प्याला लिये नाच रही है। हम अपने

मुस्कराते होठोंपर कामनाकी प्यास लेकर उसे मस्तीके साथ पियेंगे। मनमें प्रसन्नताओंका यही क्रान्तिकारी तूफान आने दीजिये। आप इस सनकमें वही क़ीमती चीज़ प्राप्त करेंगे—जिसे आप बरसोंसे खोज रहे थे!

यह हमारी भूल है कि इस आनन्दमय संसारमें हम लोग उस रास्तेसे लापरवाहीसे चल रहे हैं, जहाँ प्रसन्नतायें हाथमें वरमाला लिये हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं। हमारे लिये उनका आनन्द भण्डार सब समय खुला है, मगर हम अपनी कोरी शानमें इस कदर चूर हैं कि उनकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। यदि हम उनके साथ हिलमिल जायँ, तो उनके सौन्दर्य प्रकाशसे हमारा जीवन जगमगा उठे और हमारी सफलताओंका सूर्योदय हो जाय।

आप आनन्दके खोजमें पागल हो जाइये। प्रसन्नताओंको ढूंढ़िये। वे झुण्डकी झुण्ड आपके पास घूम फिर रही हैं। ठीक सोचिये, सही रास्तेसे चलिये, छोटीसे छोटी वस्तुको स्वीकार कीजिये—बड़ीसे बड़ी क़ीमती चीज़ें खुद ब खुद आपके पास दौड़ी चली आयेंगी।

जिस आनन्दको पाकर मनका समस्त अन्धकार दूर हो जाता है, संसारके प्रत्येक मनुष्य सुन्दर दिखाई देते हैं, हृदयमें सहृदयता जन्म लेती है, संसार अमरावतीके रूपमें दिखाई देता है—आपको वही आनन्द प्राप्त करनेकी ज़रूरत है।

सच्चा आनन्द एक ऐसा नशा है, जिसका असर मनुष्यकी

नसों व मांसपेशियोंपर पड़ता है। अन्य नशीली वस्तुओंमें और आनन्दके नशेमें यह भेद हैं कि इसका नशा शरीरमे अपने आप उत्पन्न होता है, और सौन्दर्य भावनाओंसे उत्तेजित होकर दिन व दिन आगे बढ़ता है।

मगर सच्चा आनन्द कहते किसे हैं? वह हमे कैसे और कहाँसे प्राप्त होता है? मैं कहूंगा—सौन्दर्यसे, प्रकृतिसे, मनुष्योंके प्रेमसे—आपको सच्चा आनन्द मिलेगा।

आप ज़रूरतसे ज्यादा सुन्दर चीज़ोंको देखिये। यथाशक्ति अपने चारों ओर सौन्दर्यका वातावरण उत्पन्न कीजिये। सौंदर्यके उपासक बनिये। सौंदर्यका सच्चा आनन्द इन्सान ही ले सकते हैं, देवता और हैवान नहीं।

यदि आपको आनन्द नहीं मिलता, तो उसे मनमें ढूंढ़िये। जंगलों, पहाड़ों और बाग बग़ीचोंकी सैर कीजिये। जी भरकर हरियालीका आनन्द लूटिये, रंगीन फूल पत्तियोंका अध्ययन कीजिये। किस्म-किस्मके जानवरोंको देखिये और उनके रंग रूपको भावना पूर्वक ताड़िये। चिड़ियोंका गाना सुनिये, मयूरोंके साथ मन-मयूरीको नाचने दीजिये, नदी किनारे टहलिये और समुद्रकी लहरोमें अपनी उमंगोंको तैरने दीजिये।

नवीन श्याम शोभासे संसार उन्मत्त हो रहा है, सूर्यकी प्रत्येक किरणोंके साथ सौन्दर्यकी लहरें उठ रही हैं, हवाके प्रत्येक झोंकेके साथ सौरभकी तरंग छूट रही हैं। प्राकृतिक दृश्योंके

कण-कणमें आनन्द भरा हुआ है। आप अपने ही तपोबलसे अपने आनन्दकी सृष्टि कीजिये। आपकी इस साधनामें मानव जातिका महा कल्याण छिपा हुआ है।

मनुष्य मात्रसे प्रेम करो। इस प्रेममें वह जीवन है, वह आनन्द है—जिसमें विरह नहीं। एक मनुष्य जाता है, सूने सिंहासनपर दूसरे मनुष्यका राजतिलक होता है। वह भी जा सकता है, मगर मनुष्य जातिका संसारसे लोप होना असम्भव है। इसीलिये कहता हूं,—मनुष्य मात्रसे प्रेम करो, इस प्रेममें विरह नहीं है। यदि आप समस्त मानव जातिको, समस्त संसारको अपने विशाल हृदयमें स्थान देंगे, तो आपका जीवन स्वर्गीय आनन्दसे भर जायगा। यह स्वर्गीय आनन्द शत-शत विहंग कण्ठोंमें फूट रहा है, फूलोंमे खिल रहा है, ऊषाकी स्वर्ण रेखाओंमे नाच रहा है।

(तुम इस आनन्दकी खोजमे पागल हो जाओ। तुम्हारे मार्गमे चाहे बिजली कड़कती हो, चाहे पत्थर बरसते हों—तुम पीछे न लौटो, न लौटो, न लौटो।) बाधा, विपत्ति और दुःखोंके असली स्वरूपको देखो। इनकी आवश्यकता समझकर ही विधाता हमारे जीवनमें प्रचण्ड तूफान चलाते हैं, भूकम्पके प्रलयंकर धक्के मारते है और बाढ़ जैसी आफतोंमें हमें दूर बहा ले जाते हैं। तुम तकलीफोंसे ज़रा न घबराओ, यह शक्तियोंके प्रथम जागरणकी मत्ततायें हैं। इन मत्तताओंके समुद्र मन्थनसे तुम्हे जो अमृत

या विष प्राप्त हो, उसे निर्भीकता पूर्वक पी जाओ। तुम्हारे जीवन प्रदेशमें नवयुग और युगावतारका आरम्भ होगा।

हम जिस तरह ब्रह्म मुहूर्तमें जाग्रत होकर घरके बाहर न निकलनेसे ऊषाकी अमृत ज्योतिका सौन्दर्य रस नहीं पान कर सकते, उसी तरह बग़ैर अन्तर्जगतके जाग्रत हुये सब तरहके आनन्दोंके संस्कार भी हमारे जीवनमें नहीं प्रवेश कर सकते। हम नवयुग और युगावतारकी प्रकाश माधुरीके सम्भोगसे वंचित रह जाते हैं और मनुष्यजन्म तथा जीवनको सार्थक नहीं कर पाते।

आनन्द स्वभावतः मनुष्यका हृदयहारी क्यों होता है? इस प्रश्नके अनेकों उत्तर हो सकते हैं। जो वस्तु हमारे लिये संसारमें नहीं मिलती, आनंदमें हम उसे प्राप्त कर लेते हैं, जो चीज़ सबकहीं नहीं दिखाई देती—आनन्दकी दुनियामें हम उसीके दर्शन करते हैं।

दीपक जैसे घरको जगमगा देता है, आनन्द उसी तरह हमारे जीवनको उज्ज्वलताओंसे भर देता है। आनन्दकी अनुभूति जीवनकी समस्त जड़ताको मिटा देती है। आनंद हमारे लिये वह पारस है, जिसके स्पर्शसे जीवनकी प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है।

तुम आनन्दके ब्रह्मबलसे बलवान होकर संसारकी अशान्ति और अज्ञानताको दूर करो। भूमंडलमें स्वर्ग राज्यकी स्थापना करो। हम लोगोंमें यह अज्ञानता भरी हुई है कि संसार दुःखमय है। इन दुःखोंका कारण है हमारी इच्छा। जब तक हम अपनी इच्छाओंको सुन्दर नहीं बनाते—दुःखोंसे उद्धार पाना कठिन है।

कण-कणमे आनन्द भरा हुआ है। आप अपने ही तपोवलसे अपने आनन्दकी सृष्टि कीजिये। आपकी इस साधनामें मानव जातिका महा कल्याण छिपा हुआ है।

मनुष्य मात्रसे प्रेम करो। इस प्रेममें वह जीवन है, वह आनन्द हैं—जिसमें विरह नही। एक मनुष्य जाता है, सूने सिहासनपर दूसरे मनुष्यका राजतिलक होता है। वह भी जा सकता है, मगर मनुष्य जातिका संसारसे लोप होना असम्भव है। इसीलिये कहता हूं,—मनुष्य मात्रसे प्रेम करो, इस प्रेममें विरह नही है। यदि आप समस्त मानव जातिको, समस्त संसारको अपने विशाल हृदयमें स्थान देगे, तो आपका जीवन स्वर्गीय आनन्दसे भर जायगा। यह स्वर्गीय आनन्द शत-शत विहंग कण्ठोमें फूट रहा है, फूलोंमे खिल रहा है, ऊषाकी स्वर्ण रेखाओंमे नाच रहा है।

तुम इस आनन्दकी खोजमे पागल हो जाओ। तुम्हारे मार्गमे चाहे बिजली कड़कती हो, चाहे पत्थर वरसते हों—तुम पीछे न लौटो, न लौटो, न लौटो। वाधा, विपत्ति और दुःखोंके असली स्वरूपको देखो। इनकी आवश्यकता समझकर ही विधाता हमारे जीवनमें प्रचण्ड तूफान चलाते हैं, भूकम्पके प्रलयंकर धक्के मारते है और वाढ़ जैसी आफतोंमें हमे दूर वहा ले जाते हैं। तुम तकलीफोंसे ज़रा न घवराओ, यह शक्तियोंके प्रथम जागरणकी मत्ततायें हैं। इन मत्तताओंके समुद्र मन्थनसे तुम्हे जो अमृत

या विष प्राप्त हो, उसे निर्भीकता पूर्वक पी जाओ। तुम्हारे जीवन प्रदेशमें नवयुग और युगावतारका आरम्भ होगा।

हम जिस तरह ब्रह्म मुहूर्तमें जाग्रत होकर घरके बाहर न निकलनेसे ऊषाकी अमृत ज्योतिका सौन्दर्य रस नहीं पान कर सकते, उसी तरह बग़ैर अन्तर्जगतके जाग्रत हुये सब तरहके आनन्दोंके संस्कार भी हमारे जीवनमें नहीं प्रवेश कर सकते। हम नवयुग और युगावतारकी प्रकाश माधुरीके सम्भोगसे वंचित रह जाते हैं और मनुष्यजन्म तथा जीवनको सार्थक नहीं कर पाते।

आनन्द स्वभावतः मनुष्यका हृदयहारी क्यों होता है? इस प्रश्नके अनेकों उत्तर हो सकते हैं। जो वस्तु हमारे लिये संसारमें नहीं मिलती, आनंदमें हम उसे प्राप्त कर लेते हैं, जो चीज़ सबकहीं नहीं दिखाई देती—आनन्दकी दुनियामें हम उसीके दर्शन करते हैं। दीपक जैसे घरको जगमगा देता है, आनन्द उसी तरह हमारे जीवनको उज्ज्वलताओंसे भर देता है। आनन्दकी अनुभूति जीवनकी समस्त जड़ताको मिटा देती है। आनंद हमारे लिये वह पारस है, जिसके स्पर्शसे जीवनकी प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है।

तुम आनन्दके ब्रह्मबलसे बलवान होकर संसारकी अशान्ति और अज्ञानताको दूर करो। भूमंडलमें स्वर्ग राज्यकी स्थापना करो। हम लोगोंमें यह अज्ञानता भरी हुई है कि संसार दुःखमय है। इन दुःखोंका कारण है हमारी इच्छा। जब तक हम अपनी इच्छाओंको सुन्दर नहीं बनाते—दुःखोंसे उद्धार पाना कठिन है।

बूंद-बूंदसे घड़ा भरता है। कण-कण भापसे मेघोंकी सृष्टि होती है। क्षुद्र जल बिंदुको लेकर महा सिंधुकी उत्पत्ति हुई है— तुम ज़रा-ज़रा आनन्द संचित कर जीवनको आनन्दोंसे भर दो। आनन्दमय जीवनमें रूप, यौवन, प्रफुल्लता, सुख और आशाय सब आ जाती हैं। मनुष्य जीवन धन्य हो जाता है, पवित्र हो जाता हैं।

जिस तरह सधवा स्त्रीके सोहाग सिन्दूर बिना बाहरी चमक दमक और गहने-कपड़ोंकी शोभा नहीं बढ़ती, उसी तरह बग़ैर आनन्दमय जीवनके मनुष्यकी कहीं क़द्र नहीं होती। आनन्दकी खोज ही मनुष्यका सबसे बड़ा सौभाग्य है। बेशक़ीमती कपड़े या शृङ्गार तब तक सब फीके हैं, जब तक कि आपके हृदयमें सच्चा आनन्द न हो, शरीरमें शक्ति न हो, चेहरेमें चमक न हो। आपके आनन्दमय जीवनमें उस आकर्षणकी आवश्यकता है, जो आपको चुम्बक बना दे। फिर आप चाहे जिस सभामें जायँ, जिस एकान्तमें बैठे—लोग आपकी ओर खिचे बिना न रहेंगे।

क्या जीवनका ऐसा आकर्षण आपके पास है? क्या आपने आईनेमें अपने रूप रंगको देखा है? क्या आपको सन्तोष है कि आपके शरीरमें इतना लावण्य बल है कि आप दूसरोंपर मोहिनी शक्ति डाल सकते हैं? यदि नहीं, तो समझ लीजिये—आपको ऐसे आनन्द साधनकी आवश्यकता है, जिससे आपके स्वभावपर लोग मुग्ध हो जायँ, आपके शरीरमें अद्भुत चमक पैदा हो। आप

जहाँ कहीं जायँ और जिससे भी मिल भेंटें—आप अपने आनन्द बलसे हर एकको क़ाबूमें कर लें, और आपमें सच्चा आत्म विश्वास उत्पन्न हो जाय।

आनन्दकी खोजके लिये तुम्हारी स्वाभाविक गति जिधर जाना चाहती है, उसे उधर ही जाने दो। काल्पनिक धर्मका भार डालकर जीवनको पंगु न बनाओ। मनुष्यके अन्तरधर्मके ख़िलाफ़ पाप-पुण्य, नीति-अनीतिका पचड़ा दिखाना सबसे बड़ा अपराध है।

आजकल कुछ मनचले मनुष्योंमें यह भावना घुस गई है कि सच्चा आनन्द विलासितासे प्राप्त होता है; किन्तु यह भूल है। विलासिता हमारे जीवनमें सच्चे आनन्दका भाव नहीं जाग्रत कर सकती। विलासकी चमक-दमक बाहरी ऐश्वर्योंकी क्षणिक आभा है, उससे मानसिक आनन्दका स्थायी परिचय नहीं प्राप्त होता। विलासी मनुष्योंके हृदय खोखले वृक्षके समान होते हैं, जिसमें कितने ही ज़हरीले जानवरोंका भयानक अड्डा होता है और उनकी क्रीड़ा कल्लोलो द्वारा मनुष्य जीवनकी जड़ अपने हाथसे काटता है।

जो मनुष्य विलासिताके विषैले वायुमंडलसे दूर हैं, सच्चे आनन्दके वही साधक हैं, सिद्ध हैं और मनुष्य जातिके दिव्य नेत्र हैं। वह चाहे बाहरी बातोंमें आपको भयानक और पाषाणहृदय

दिखाई दें, मगर उनका अन्तर्जगत फूलकी तरह उ[illegible]घों है, उनके हृदयमें भोली अबलाओंके भोलेपनका शीतल भ[illegible]त झरता है। उनकी इच्छायें स्वभावतः संसारके दुःखोंका नाश करती हैं, उनकी कामनायें संसारकी हितसाधिनी हैं, उनकी आशायें वसंत समागम जैसी प्रिय संवाददायिनी और कोकिल-कण्ठों जैसी पीयूषवर्षिणी हैं।

आप जीवनके मानसिक बोझेको बहादुर मज़दूरकी तरह ढोइये। मनुष्य गौरवको चमकाइये। सड़कोंपर हमेशा आज़ादी और मस्तीके साथ, गरदन उठाकर, छाती निकालकर, सिंहकी चाल चलिये। खूबसूरत मकानों, विशाल अट्टालिकाओं, बाग़ बगीचों, पार्कों और सुन्दर वस्तुओंको भावनापूर्वक देखिये तथा मनमें इस बातकी सनसनी फैलने दीजिये—यह सब हमारे हैं, इन सबका मालिक मैं हूं।

मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं—जानते हैं? मनुष्य जीवनका सबसे बड़ा तत्त्व यह है कि वह जो कुछ देखता सुनता है और उन्हें गहराईसे सोचता है—भविष्यमें वही उसका भाग्य बन जाता है और वह उसी भाग्य द्वारा अपनी जीवन नौकाको संसार सागरमें खेता चलता है।

आइये, आज हम सब एक साथ मिलकर ईश्वरके सम्मिलित चमत्कारोंके आनन्दमय जीवनकी उपासना करें, उसकी आराधना पूजामें तल्लीन हो जायँ। हमारा भविष्य उज्ज्वल,—अत्यन्त उज्ज्वल है।

e word found only in the
ाने 'असम्भव शब्द मूर्खोंके ही

ानोंके पैगम्बर मोहम्मद साहब
-जो उन्हें मार डालने तकको
ुदा एक है' का उपदेश देते थे।
जदोंमे ठहरते और निर्भीकतापूर्वक
ा खण्डन करते थे। महात्मा
ं व्याख्यान देते, वहाँ मनुष्योंकी
ड़ती थी। यह क्यों? इसकी
ापुरुषोंके हृदयमे 'विलपावर' का
जिसकी लहरें अपने शयन कक्षसे
े सर पटकती थीं। वे कहतीं—
ा-जमुनामे स्नान कर जीवनकी
उसे पवित्र कीजिये।' इन
था कि मनुष्य सहज ही में
पाकर अपने दिलका समस्त

ा शक्तिशाली है। इस
ेनी है

याने ढोलके भीतर पोल है। आप संसारमें कोई अनोखा काम नहीं कर सकते।

किसीने 'विलपावर' वाले मनुष्योंके सम्बन्धमें ठीक ही कहा है :—

"बहादुर मर्द शेरे दिल कि जब कुछ करने आते हैं,
समन्दर चीर देते, कोहसे दरिया बहाते हैं।"

गीतामें भगवान श्रीकृष्ण अर्जुनसे कहते हैं—"हे कुरुकुलको आनन्द देनेवाले अर्जुन! कर्म योगका मूल तत्त्व दृढ़ संकल्प ('विलपावर') है। 'यह मेरा कर्तव्य है'—इतना ही जानकर दृढ़ताके साथ कर्म करते रहना चाहिये। जिसमें यह दृढ़ संकल्प ('विलपावर') नहीं है, वह कुछ नहीं कर सकता। क्योंकि उसके मनमें अनन्त कल्पनायें उठती रहती हैं, उन कल्पनाओंकी असंख्य शाखायें होती हैं। उस दशामें मनुष्य सन्देहमें ही रह जाता है।"

महावीर नेपोलियनको लीजिये। वह दुर्बल और कमज़ोर था, मगर उसने 'विलपावर' से सारे संसारमें तहलका मचा दिया। योरोपके शक्तिशाली मनुष्य भी नेपोलियनका नाम सुनकर नींदसे चौंक पड़ते थे। वह बहुत ख़ूबसूरत भी नहीं था, मगर उसके पास 'विलपावर' की सबसे बड़ी चाभी थी, जो अखंड यन्त्रके समान घूमती हुई उसके मनोबलको दृढ़ रखती थी। वह 'विलपावर' का पूर्ण भक्त—पूर्ण उपासक था। वह

कहता—"Impossible is the word found only in the dictionary of fools." याने 'असम्भव शब्द मूर्खोंके ही शब्दकोषमें पाया जाता है।'

बात ठीक है। मुसलमानोंके पैगम्बर मोहम्मद साहब अरबके जाहिल आदमियोंमे--जो उन्हें मार डालने तकको तैयार थे, एकेश्वरवाद याने 'ख़ुदा एक है' का उपदेश देते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती मस्जिदोंमें ठहरते और निर्भीकतापूर्वक मूर्तिपूजा तथा इस्लामो मतका खण्डन करते थे। महात्मा गांधो असहयोगके ज़मानेमें जहाँ व्याख्यान देते, वहाँ मनुष्योंकी भीड़ टीड़ी दलकी तरह उमड़ पड़ती थी। यह क्यों? इसकी क्या वजह है? असलमे इन महापुरुषोंके हृदयमे 'विलपावर' का महा समुद्र लहराया करता था, जिसकी लहरें अपने शयन कक्षसे उठ-उठकर मनुष्योंके मनमें अपने सर पटकती थी। वे कहतीं—'आप हमारे दृढ़ सिद्धान्तोकी गंगा-जमुनामे स्नान कर जीवनकी समस्त गन्दगीको धो बहाइये, उसे पवित्र कीजिये।' इन आवाज़ोंमें इतना आकर्षण होता था कि मनुष्य सहज ही मे उनपर मुग्ध हो जाते थे और उन्हें पाकर अपने दिलका समस्त दर्द दूर कर देते थे।

इसीलिये कहता हूं, 'विलपावर' महा शक्तिशाली है। इस 'पावर' को पाकर मनुष्योंमें निर्भयता जाग्रत होती है, वे संसारको बड़ेसे बड़ा लाभ पहुंचा सकते हैं। यह वो 'पावर' है, जो

सूर्य किरणोंसे ज्यादा गर्म और चन्द्र रश्मियोंसे ज्यादा शीतल है। मानव विज्ञानके विद्वानोंका कथन है :—'विलपावर' से मनुष्यके अन्तःकरणमें जिन इच्छाओंका विकास होता है, वह उसे अवश्य मिलती हैं।

लोकमान्य तिलक 'विलपावर'के सच्चे उपासक थे। उन्होंने एक ज्योतिषीसे कहा था—"यदि मैं फलित ज्योतिषपर विश्वास कर चुप बैठ रहता तो दुनियामें कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न कर सकता।"

एक दिन इसी 'विलपावर'को पाकर बंगालके विद्रोही कवि काज़ी नज़रुल इस्लाम शेरकी तरह गरज उठे थे :—

"जगदीश्वर ईश्वर आमि पुरुषोत्तम सत्य,
आमि ताथिया ताथिया मथिया फिरि ए स्वर्ग पाताल मर्त्य;
आमी उन्माद, आमी उन्माद
आमि चिने छि आमारे, आजिके आमार—
खूलिया गिया छे सब बाँध!"

अर्थात् "मैं जगदीश्वर हूं, ईश्वर हूं—पुरुषोत्तम सत्य हूं मैं ताण्डवनृत्यमें मत्त होकर स्वर्ग, पाताल, मर्त्य सबको मथता फिरता हूं। मैं उन्माद हूं—उन्माद! अपनेको पहचान गया हूं। आज मेरे सब बन्धन खुल गये हैं।"

'विलपावर' वाले मनुष्य बुद्धिमान, उद्यमी, स्वाभिमानी तेजस्वी, वीर और चरित्रवान होते हैं। वे नहीं चाहते कि उन

ऊपर कोई ताक़त रंग जमाये। ऐसे अवसरोंपर वह आगकी तरह धधक उठते हैं और अपने आसपासके लोगोंमें बिजली भर देते हैं। वे संकटके समय पहाड़की तरह अटल रहते हैं और डटकर उसका मुक़ाबला करते हैं।

हम लोगोंका सबसे बड़ा अपराध यह है कि हम किसी आदमीकी उन्नति देखकर बारूदकी तरह भड़क उठते हैं। लोगोंकी मुसीबतोंका मज़ाक उड़ाते हैं। सामने दोस्त बनते हैं, मगर अगल-बगल कैंचियां चलाते हैं। घमण्ड पूर्ण मात्रामें हमारे अन्दर भरा है। हमारी दुर्दशाओंका मूल कारण यही है। हम 'विलपावर' को भूल गये हैं!

'विलपावर' हरएक मनुष्यमें समान भागमें है। मगर जो उसे पहचानते हैं, अपनी जिन्दगीको चमका देते हैं। जो नहीं पहचानते—वह दुखी हैं, दीन हैं,—मुसीबतोंके शिकार हैं।

यदि आप 'विलपावर'को अभी तक नहीं पहचान सके, तो कमर कसकर डट जाइये, अपनेपर पूर्ण विश्वास कीजिये और अपनी मानसिक दुर्बलताओंको ढूंढ़िये। ज़रा भी अशान्त; उद्विग्न या अधीर होनेकी ज़रूरत नहीं। मानसिक शक्तियोंके दृढ़ संगठनका ही नाम 'विलपावर' है।

आप स्वावलम्बी बनिये। अपने कार्यकी सिद्धिके लिये दूसरोंपर भरोसा न कीजिये। 'विलपावर' आपको अवश्य प्राप्त होगा। वह आपके अन्दर आत्मोन्नतिका मन्त्र फूंकेगा, मधुर

और मनोहर दिव्यतायें फैलायेगा, आपको उत्साह तथा बल प्रदान करेगा, अपने मरहमसे आपके घावोंको भरेगा। फिर आपको किस बातका भय? किन काँटोंका डर? 'विलपावर' प्राप्तकर आप जिस काममें हाथ डालेंगे उसे पूरा करके छोड़ेंगे। चाहे वह काम सरल हो या कठिन, सम्भव हो या असम्भव। 'विलपावर' से आपके मनसे ईर्षा, द्वेष, घृणा, क्रोध, घमण्ड, उदासीनता, घबराहट, आलस्य, भय, चिन्ता और वहमकी बीमारियाँ काफ़ूरकी तरह उड़ जायँगी। ठीक वैसे ही, जैसे प्रचण्ड तूफानमें छोटे-छोटे तिनकोंका पता नहीं लगता

जिन मनुष्योंमें 'विलपावर' याने आत्मबल अथवा दृढ़संकल्प नहीं है, जो एक विचारधारासे दूसरी विचारधारापर छलांग मारते हैं, वह इस जीवनमें कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकते। उनकी हालत बिना पेंदीके लोटेके समान होती है, जो बेमतलब इधर-उधर लुढ़का करता है।

The wise man rules his stars---अर्थात् बुद्धिमान पुरुष अपने ग्रहोंपर शासन करता है।

यदि आप अपनी इच्छाओंकी पूर्ति चाहते हैं, तो दृढ़संकल्पका आश्रय लीजिये। 'विलपावर' का उपयोग कीजिये। आप अपने जीवनके स्वामी तथा अपने भाग्यके स्वयं निर्माता हैं, फिर दुःख और निराशा क्यों?

'विलपावर' कोई अरेबियन मैजिक, चीनका जादू या कामरू

देशका वशीकरण नहीं; यह सिर्फ आपके हृदयका महान सिद्धांत है, जो ख़ूनकी तरह तेज और संगीतकी तरह मधुर है। इसे पाकर सूर्यकी रोशनीमें रहनेवाली संसारमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसे आप न पा सकें। आजही दृढ़ निश्चय कर लीजिये—"हम आत्मोन्नतिके लिये 'विलपावर'से काम लेंगे, अपनी अभिलाषाओंको पूर्ण करेंगे और जब तक जियेंगे, ज़िन्दगीको चमकाकर रखेंगे।'

आपने अकसर कुछ ऐसे आदमियोंको देखा होगा, जो ज्यादातर मौन और गम्भीर रहते हैं। उनसे आप पचास प्रश्न कीजिये, वे चुप रहेंगे—जैसे गूंगे बहरे हों। मगर एक बार—सिर्फ एक बार वह आपको ऐसा ठकसे जवाब दे देंगे, जो आपके पचास प्रश्नोंका एक जवाब होगा। ऐसे मौन या गम्भीर व्यक्ति 'विलपावर'के बड़े तेज़ होते हैं। वह मन ही मन ख़ूब काम किया करते हैं।

'विलपावर' को सफल बनानेके चार रास्ते है। पहला यह कि आप अपने जीवनमे कोई 'सिद्धान्त' उत्पन्न कीजिये। दूसरा—सिद्धान्तसे कोई कामना या 'इच्छा' प्रकट कीजिये। तीसरा—इस बातकी 'प्रतिज्ञा' कर लीजिये कि मैं अपनी इच्छाको पूर्ण करके छोड़ूंगा। चौथा—इच्छापूर्तिके लिये 'प्रबल उद्योग' कीजिये। जहाँ इन बातोंकी आपको आदत पड़ी और आदतोंका असर आपके चरित्रपर पड़ा, तहाँ आपकी आत्मा जगमगा उठेगी! आप हर काममें महावीर नेपोलियनकी तरह सफल

होते जायँगे। 'विलपावर'में ख़ास बात यह है कि वह बुरी आदतोंको छुड़ाकर आपको अच्छी आदतोंका स्वामी बनाता है।

ज़माना बड़ी तेज़ीसे पलट रहा है, हर मनुष्य आगे बढ़ रहा है। आप अपनी काया पलट कीजिये, स्वभाव बदलिये—ठीक उसी तरह, जिस तरह आप बैलगाड़ी छोड़कर आज मोटरकी सवारी करते हैं, गाढ़ेकी मिर्ज़ई छोड़कर कोट डाटते हैं। उन्नतिकी रेसमें आपका नम्बर हमेशा पहला होना चाहिये और पहला नम्बर 'विन' करनेके लिये आपको 'विलपावर' द्वारा कमाल करना चाहिये।

'विलपावर' से विद्यार्थी परीक्षामें पास होते हैं, व्यापारी अपना व्यापार चमकाते हैं, ऐक्टर सुयश और सफलताके दर्शन करते हैं, ग़रीब रुपयोंका ढेर पाते हैं और अमीर राजे महाराजाओंकी श्रेणीमें बैठते हैं।

तुम 'विलपावर' प्राप्त करो। किसीके चरण-चिन्होंपर न चलो। पुण्यशील नहीं, वीर्यधारी बनो। सन्यासी नहीं, महा मानव बनो। साधारण नहीं, देवता बनो। अपनी नई दुनिया क़ायम करो, नई पद्धतियाँ निकालो तुम्हारे दृढ़संकल्पसे हिमालयसे लेकर कन्याकुमारी तक आनन्दका स्रोत उत्ताल तरंगोंसे प्रवाहित होगा। तुम्हारा देश राजर्षियों, महर्षियों और देव ऋषियोंसे भर जायगा। यह कविकी कल्पना नहीं, तुम्हारे दृढ़ संकल्पका प्रत्यक्ष चमत्कार है—जो एक दिन तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा।

भयका भूत

आपके दिमागमें एक ऐसा भयानक दुश्मन रहता है, जिसकी याद करते ही बदनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। शरीर थर-थर काँपने लगता है, ज़मीन चलती-फिरती नज़र आती है और हमारी हालत कुछ वैसी ही अन्धकारमय हो जाती है, जैसी पहले दिन मां के पेटसे जन्म लिये हुए बच्चेकी!

क्या आप जानते हैं—यह भयानक दुश्मन कौन है? यह है—भयका भूत।

'भय' ने मनुष्योंमे सैकड़ों ख़तरनाक बीमारियाँ फैलाई है। यदि आप श्मशानमें चिताओंकी राख बटोरकर उसे तेजस्वी आँखोंसे देखें, तो आपको साफ दिखाई देगा—अधिकांश राख कणोंमें भयका भूत निर्दयतापूर्वक पैशाचिक अट्टहास कर रहा है।

'भय!'—उफ़, यह नाम सुनते ही छाती फटती है। 'भय' हमारे जीवनके सुख, सौन्दर्य, स्वास्थ्य और मानसिक शक्तियोंको भूखे राक्षसकी तरह भोजन करता है। कः हमारे मनमें शंका,

द्वेष और प्रतिशोधकी भावनायें जाग्रत करता है, इन्साफ़की वहादुराना 'स्प्रिटों' को गर्म ख़ूनकी तरह गटागट पीता है। हाय! हाय!—आज संसारमें लाखों करोड़ों आदमी सोनेके सिंहासनपर वैठे दिखाई देते—यदि उनके दिमाग़में भयका भूत न समाया होता। आज ज़िन्दगीको चमकानेमें वहुतसे आदमी इसलिये 'फ़ेल' हो गये कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें उनके अंदर भयका भूत सुदर्शन चक्रकी तरह घूमता रहा!

'भय' जीवनका तीता ज़हर है। यह मनुष्योंसे प्रेम सम्बन्ध जोड़नेमें वाधायें उपस्थित करता है, हमारी समस्त ताक़तोंको खींचकर कमज़ोरियोंमें पलट देता है, सफलताके मार्गमें असफलताओंके काँटे विछाता है और प्रभावशाली व्यक्तित्वको चकनाचूर कर हमारी सुनहरी ज़िन्दगीमें कीचड़ लपेट देता है। इसके कुसंगसे मनुष्य ठीक वैसा ही हो जाता है, जैसा कालकोठरीमें लोहेकी जंजीरोंसे जकड़ा हुआ अभागा कैदी। जो मौतको पुकारता है, मगर मौत उससे घृणा करती है और कोसों दूर भागती है।

क्या आपने कभी भयकी ख़ूंख़ार सूरतको पहचाननेकी कोशिश की है? मैं समझता हूं सपनेमें भी नहीं।

'भय' क्या है? यह है—वहमकी वीमारी, कोरी कल्पनाकी महामारी और मनुष्यके सर्वनाशकी हत्यारी शक्ति!

देखिये, जव आप अच्छी और दिलचस्प वातें करते हैं, तव

आपके होठोंपर मुस्कराहट दौड़ जाती है, दिल गुदगुदा उठता है, आप बहुत ज्यादा खुश हो जाते हैं। मगर जिस समय आप ख़ून, डकैती और मौतकी कहानियाँ सुनते हैं, भूत-प्रेतके किस्से पढ़ते है, लड़ाई या फाँसीके भयानक दृश्य देखते हैं—तब ?—मैं समझता हूं आप घबरा जाते होंगे और आपके दिमाग़मे फौरन 'भय' समा जाता होगा। एक दिलचस्प किन्तु बेवकूफियोंसे भरी मज़ेदार घटना सुनिये :—

सन् १९३६ की बात है। कलकत्तेमे एक दिन यह अफ़वाह बड़े ज़ोरोंसे फैली कि अमुक दिन शामको भीषण भूकम्प आयेगा। सब आदमी इमारतोंके नीचे कुचलकर मर जायँगे। यह भूकम्प बिहारके भूकम्पसे ज्यादा भयानक और क्वेटाके ज़लज़लेसे ज्यादा प्रलयंकर होगा !

अब लीजिये जनाब ! इस तूफानी अफवाहसे कलकत्ता निवासी इतने भयभीत हो गये कि चन्द घण्टोंके अन्दर आधा शहर खाली हो गया। भयभीत भगोड़ोंमे अमीर, ग़रीब, शिक्षित, अशिक्षित सभी किस्मके लोग थे। स्पेशल ट्रेनें दौड़ने लगीं। घोड़ागाड़ी, रिक्शा और टैक्सीवालोंकी बन आई। उन्होंने मनमाने पैसे वसूल किये। जनाब, भगदड़ मच गई भगदड़ ! सैकड़ों मकानोंमे ताले जड़ गये। सड़कोंपर हड़तालका दृश्य नज़र आने लगा। जिधर देखिये उधर सन्नाटा—ख़ामोशी ! किलेके मैदान और पार्कोंमे नरमुण्डोका मेला लग गया। सबके

दिलमें एक ही सनसनाहट, एक ही बेचैनी, एक ही ख़तरा था—भूकम्प आया, आया और अब आया। बूढ़ोंने राम नामकी माला जपनी शुरू की, नौजवानोंकी आँखें आसमानमें ईश्वरको ढूंढ़ने लगी। औरतोंने मन ही मन देवी-देवताओंको टटोलना शुरू किया। अद्भुत दृश्य देखनेमें आये। मगर दोपहर मुस्कराती चली गई, सन्ध्या नाचती-नाचती सो गई, रातने विश्रामका बिगुल बजाया—न भूकम्प आया, न प्रलय हुई। लोग स्त्री-बच्चोंके साथ झेंपते हुये घर लौटे। शहरवाले उन्हें बनाने लगे—आप भी खासे बौड़म निकले!

देखा आपने? उस दिन इस मिथ्या भयसे कलकत्तेमें लाखोंका नुकसान हुआ।

एक दूसरी घटना सुनिये, जो कलेजेको हिला देती है :—

महात्मा गांधीके विदेशी बायकाटका आन्दोलन जोरोंपर था। स्वदेशी चीजोंका व्यापार करनेवाले मालामाल हो रहे थे और विदेशी कारबारी उजड़ रहे थे। मेरे एक आदरणीय मित्र थे। उनका विदेशी व्यापार खूब चमका हुआ था, किन्तु बायकाटकी वजहसे उन्हें लाखोंका नुकसान उठाना पड़ा। उनके व्यापारका चक्रा बिगड़ गया। वह ज़रूरतसे ज्यादा भयभीत हो गये। करता क्या न करता? उन्होंने अपनी विपत्तियों, तकलीफों और भयकी बातोंको हरएक आदमीसे कहना शुरू किया—यह सोचकर कि इससे मेरी मुसीबतें कम हो जायँगी।

लोग मेरे प्रति सहानुभूति प्रकट करेंगे और मुझे अच्छी मदद पहुंचायेंगे। मगर नतीजा उलटा हुआ। लोगोंने चारों तरफसे उनकी बदनामी शुरू कर दी। दोस्त दुश्मन हो गये। कारबार फेल हो गया। हजारोंकी डिक्रियाँ हुई और लाखोंका माल कौड़ियोंमे नीलाम हो गया।

वह भयसे पीले पड़ गये! शरीर सूखकर काँटा हो गया और चन्द दिनोंमें पागल होकर मर गये। उनकी मौत मेरे सामने हुई थी। उफ़, मैंने भयकी ऐसी भयानक मृत्यु न कभी देखी थी, न सुनी। ईश्वर यह मौत दुश्मनको भी न दे।

'भय'के ऐसे एक दो नहीं, हजारों उदाहरण मौजूद हैं, जिन्हें आपने भी देखा-सुना होगा। यदि मेरे यह दोस्त भयको अपने दिलमें जगह न देकर निर्भीकतासे काम लेते, तो शायद अकाल मृत्युसे बच जाते। मगर भयके भूतका चक्कर ही तो था—वह इस शैतानकी बदौलत अपना क़ीमती ज़िन्दगीसे भी हाथ धो बैठे!

हमें चाहिये कि हम अपने दिल और दिमाग़को सही रास्तेसे संचालित करें और कभी इस बातका ख़याल भी न आने दें कि हम कमजोर, भयभीत, कायर या बुज़दिल हैं। चतुर माली चुनकर बीज बोते हैं, उनमे कूड़ा-कर्कटका नामोनिशान नहीं रहता। इसीलिये उनके बग़ीचेमे सुन्दर फूल खिलते हैं।

मानसिक शक्तियोंको जोरदार बनाना या उन्हें अन्धे कूएँमें

धकेल देना हमारी विचारधारा तथा ज्ञान शक्तिपर निर्भर है। मान लीजिये आप जंगलकी सैर कर रहे हैं, एकाएक आपके सामने शेर आकर खड़ा हो गया तो शेरको देखकर आप चाहे कम डरें—मगर यदि मैं आपसे कह दूं—आगे न बढ़ियेगा, वर्ना ख़ूंख़ार शेर चट कर जायंगे, तो आप एक क़दम आगे न बढ़ सकेंगे। आपके होश ग़ायब, बोलती बन्द हो जायगी। क्यों? इसलिये कि आपके मनकी हालत बदल गई। मैंने आपके दिमाग़में भयका भूत घुसेड़ दिया।

'भय' मनुष्यके अस्थि पंजरोको अपने शैतानी पंजोंसे इस क़दर झकझोरता है कि उसके समूचे शरीरमें भूचाल आ जाता है और वह अपनी समस्त ज्ञान शक्ति खोकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है।

हज़ारों लाखों आदमी भूतके नामसे डरते हैं। सैकड़ों डर कर मर भी गये। मगर भूतका व्यर्थ भय करना मूर्खता है। क्योंकि इस नामका कोई जीव ज़मीन या आसमानमें नहीं रहता।

कितनेही आदमियोंको लीजिये, वे मनुष्योंसे भय करते हैं और संसारमें कोई अच्छा काम नहीं कर सकते। उनके मनमें यह सनक हमेशा सवार रहती है कि लोग मुझे क्या कहेंगे? मैं कहता हूं कि मनुष्योंसे भयभीत होना एकदम मूर्खता है—निरा पागलपन। लोग तभी तक आपको तरफ़ उंगलियां उठाते और

कटु वाक्य बोलते हैं—जबतक कि वह आपको पूर्णरूपसे पहचान नहीं लेते, आपके गुणोंकी क़ीमत नहीं परख लेते। यह सत्य है कि मनुष्य जीवन एक समुद्र यात्राके समान है, जिसमें हम लोग एक ही संकीर्ण नौकामें मिलते हैं। मनुष्यमात्र आपसमें भाई हैं, भाईसे भय कैसा?

और लीजिये—सौमें निन्यानबे आदमी मृत्युसे डरते हैं। मगर मृत्युका कितना सुन्दर रूप है—इसे वह शायद नहीं जानते। मृत्यु उस खूबसूरत देशकी देवी है—जो स्वर्गसे ज्यादा सुन्दर और अमरावतीसे अधिक मनोहर है। अन्त समय शान्तिमयी गोदमे सोकर मनुष्य मात्र उस सुन्दर देशका आनन्द लूटते हैं। मृत्युसे डरना सरासर मूर्खता है।

इसीलिये कहता हूं—आप निर्भीकताका पाठ पढ़िये। भयके वहमसे ज्ञानतन्तु निर्बल होकर नष्ट हो जाते हैं। यदि आपका मन भयभीत रहता है—तो उसे विनोद-विलासोंमें बहलाइये, एक मिनट बेकार न बैठिये, कुछ कीजिये, कोई मज़ेदार पुस्तक पढ़िये, किसीको प्रेम-पत्र लिखिये—सारांश यह कि भयको फौरन दिल दिमाग़से निकाल बाहर कीजिये। कल आनेवाली विपत्तियोंके विषयमे सोचना आजके क़ीमती दिनको मुसीबतोंसे भर देना है।

यह सच है कि मानव शक्तिमे दैव शक्तिका चमत्कार है। दैव शक्तिके ही बलपर सृष्टि और संहार लीला हो रही है। मनुष्य

यदि इस दैव शक्तिको पहचान ले, तो वह सृष्टि भी कर सकता है और संहार भी। हम लोगोंमें जो भयकी क्षुद्रतायें और व्यर्थतायें भरी हुई हैं, उसके संहारकी ताक़त भी हममें है। क्योंकि हम अमरत्वके अधिकारी हैं। क्षुद्र बनकर रहनेके लिये हमने मनुष्य जन्म नहीं धारण किया।

मैं अक्सर देखता हूं—माता पिता छोटे-छोटे बच्चोंमें ज्यादा भयका भूत उत्पन्न करते हैं। बच्चे जिद्दी होते हैं वह जब रोते चिल्लाते हैं, तो उन्हें चुप करानेके लिये भूत-प्रेत, शेर-भालू और कुछ ऐसे ही अंटसंट नाम लेकर उन्हें इस कदर भयभीत कर दिया जाता है कि बेचारा बच्चा चुप हो जाता है। यह कैसी अज्ञानता है—कैसी मूर्खता! जो माँ-बाप बच्चोंमें भयका भूत फैलाते हैं, वे अपनी सन्तानके भयानक दुश्मन हैं।

बच्चोंका दिल फूल जैसा कोमल होता है। भयकी बातें देख सुनकर उनकी क्या हालत होती है—एक ताजा समाचार सुनिये :—

शंघाईके एक प्रसिद्ध जापानी सज्जन सड़कसे अपनी बच्चीको लेकर जा रहे थे। चौराहेपर सिनेमाका एक सचित्र पोस्टर चिपका हुआ था, उसे देखते ही बच्ची चीख उठी और पिताकी छातीसे चिपट गई। घर पहुंचनेपर वह इतनी भयभीत हो गई थी कि उसका टेम्परेचर चढ़ गया, तेजीसे बुखार चढ़ आया और उसी दिन वह हमेशाके लिये ठंडी हो गई!

अब आप ही बताइये—उस कागजके पोस्टरमें क्या था ? मगर ख़याल ही तो हैं—भयके भूतने उस निर्दोष बच्चोके प्राण ले लिये ।

सो, यही बात हमारे और तुम्हारे लिये भी है। तुम निर्भीकताकी उपासना करो और जीवन संग्राममें निर्भय होकर युद्ध करो। देश-विदेशके लोग तुम्हारे चरण चूमेंगे। भय किस बातका ?

स्मरणशक्ति

हमारी योग्यता, प्रतिभा, कल्पना और महत्ता स्मरणशक्तिपर अवलम्बित है। आप संसारकी समस्त लायब्रेरियोंकी पुस्तकें पढ़ जाइये, पृथ्वीमंडलका चक्कर काट आइये, दुनियाभरके रोचक तथा अनोखे अनुभव कर लीजिये ; परन्तु आपने जो कुछ पढ़ा, देखा, सुना या अनुभव किया—यदि उसे याद न रख सके, तो आपकी सारी मेहनत बरबाद गई। आप कौड़ीके तीन हो गये। देश और समाजमें आपकी गिनती बेवकूफ़, रद्दी और भोंदू आदमियोंमें की जाने लगती है।

स्मरणशक्तिसे ज्ञानेन्द्रियाँ जाग्रत होती हैं, मानसिक शक्तियोंका विकास होता है और 'विलपावर' बढ़ता है। इसके उपहारस्वरूप हमें मिलती हैं—अमूल्य निधियाँ, मोहिनी शक्ति तथा ज़िन्दगीकी सफलता !

हममें से बहुतोंकी स्मरणशक्ति बहुत कमज़ोर है। इतनी कमज़ोर और भद्दी कि देखकर दंग रह जाना पड़ता है। यदि

ऐसे कमज़ोर आदमियोंके सामनेसे कोई जुलूस निकल जाय और उनसे पूछा जाय—जुलूसमे किस टाइपके आदमी थे? उनकी पोशाकें क्या थीं? कितने किस्मके बाजे बजते थे? साथमें ज्यादातर मोटरें थीं या घोड़ागाड़ियाँ? तो वे ठीक-ठीक इसका उत्तर न दे सकेंगे। मेरे कई मित्र ऐसे हैं, जिन्हें घूमने-फिरनेका बेहद शौक है। यदि मैं उनसे कभी पूछ बैठता हूं कि आपने पिछले सप्ताहके भ्रमणमे कौनसी अद्भुत वस्तु देखी, तो वह बगलें झाँकने लगते हैं और ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सकते। यही हालत अधिकांश सिनेमाप्रेमियों और थियेटरके शौक़ीनोंकी है। वह अभिनेता-अभिनेत्रियोंके सम्बन्धमें लम्बी चौड़ी डींगें हाँक देंगे; परन्तु यदि उनसे कहानी या नाटकका सारांश पूछा जाय, तो 'प्लाट' का ठीक-ठीक वर्णन न कर सकेंगे। एक और मित्रका हाल सुनिये—यह हज़रत पुस्तकें पढ़नेके इस क़दर प्रेमी हैं कि चार-चार लायब्रेरियोंके मेम्बर हैं। रोज एक मोटा उपन्यास दीमककी तरह चाट जाते हैं। यदि इनसे आप पूछिये कि किस उपन्यासमे आपको क्या ख़ूबी या आकर्षण प्राप्त हुआ तो मुस्कराकर रह जायँगे। इस तरहके संसारमे असंख्य भुलक्कड़ और अयोग्य आदमी भरे पड़े हैं, जो स्मरणशक्ति बहुत ज्यादा कमज़ोर होनेकी वजहसे जीवन-संग्राममे बराबर 'फेल' होते जाते हैं। वे स्वयं यह निश्चय नहीं कर पाते कि हम क्या हैं? दुनिया क्या है? और इस रहस्यमय संसारमें हम क्यों आये हैं?

मनुष्यका स्मृति-मन्दिर एक अनमोल वस्तु है—प्रकृतिका आश्चर्यभरा कांड। इस मन्दिरमें यह पता नहीं लगता—कहां क्या रखा है, किसने रखा है और कब रखा है? हाँ, जब जिसकी ज़रूरत होती है, तब सिर्फ वही चीज़ बाहर निकाल लेनी पड़ती है।

बहुत लोगोंकी आदत होती है—कोई चीज़ किसी जगहपर रख देते हैं, मगर ज़रूरतके समय जब उसे ढूंढ़ते हैं, तो स्थानकी याद नहीं आती—उसे कहाँ रखा था। किसी वस्तु या मनुष्यका नाम, कोई ख़ास शब्द, जब कि इनका प्रसंग आता है, तो बहुत कोशिश करनेपर भी अक्सर लोग भूल जाते हैं और सिरपर उँगली रखकर विचार प्रवाहको बड़ी तेज़ीसे दौड़ाते हैं, मगर होता कुछ नहीं। वह जितना अधिक याद करनेकी चेष्टा करते हैं, वह चीज़ उतना ही अधिक दूर भागती है। यह मनुष्योंकी कमज़ोरी है। ग्रेटब्रिटेनके लार्ड चेंसलर सुप्रसिद्ध एडवर्ड थरलो भी ऐसे ही मनुष्योंमें से थे। उनकी स्मरणशक्ति इतनी दुर्बल थी कि वह जो जलपान करते थे, उसे भी याद न रख सकते थे। मगर जब उन्होंने अपने जीवनकी प्रत्येक घटना, प्रत्येक बात, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक कार्य, प्रत्येक विषयको एक-एक करके वास्तविकरूपसे स्पष्ट देखना शुरू किया, तो अपनी स्मरणशक्तिकी इतनी अधिक उन्नति कर ली कि उनकी गणना सुविख्यात स्मृति-सम्पन्न पुरुषोंमें की जाने लगी।

स्मरणशक्तिको बहुत तेज़ बनानेके लिये प्राणायाम सर्वोत्तम उपाय है। प्राणायामसे साँसका संयम होता और आयुकी वृद्धि होती है। यदि ख़ास-ख़ास मौक़ोंपर याददाश्त काम नहीं देती, तो अच्छी तरह साँसको भीतर खींचिये और कुछ देर तक उसे रोककर बाहर निकाल दीजिये। इससे स्मृतिपर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। ज्यादातर स्मरणशक्ति उन मनुष्योंमें नहीं होती, जो या तो थके हुये होते हैं या जिनका स्नायुमंडल दुर्बल होता है। आप प्रत्येक कार्यको चाहे वह मामूलीसे मामूली ही क्यों न हो, ख़ूब एकाग्र मनसे कीजिये। प्रत्येक बातमें कला-कौशलका जादू उत्पन्न कीजिये। खड़े होना, टहलना, पढ़ना-लिखना, कपड़े पहनना, दोस्तोंसे मिलना, स्त्री-पुरुषोंसे बातें करना, ऐसे हज़ारों काम हैं—जिन्हें पूर्ण सावधानीसे ध्यानपूर्वक कीजिये। इन प्रयोगोंसे आपको स्मृतिकी वह अद्भुत शिक्षा मिलेगी, जो अन्य विधियोंसे प्राप्त करना दुर्लभ है।

स्मरणशक्तिसे दैवी शक्तिका प्रादुर्भाव होता है। जिसका एक बार अनुभव कर लेनेपर फिर उसे छोड़नेका कभी जी नहीं चाहता।

जो लोग स्मरणशक्तिकी चर्चा जितनी अधिक करते हैं, उनकी स्मरणशक्ति उतनी ही प्रखर होती है; किन्तु यदि इसकी चर्चा ही न की जाय, तो धीरे-धीरे ऐसी अवस्था उपस्थित होती है कि एक घण्टे पहले हमने क्या किया था—यह भी याद रहना कठिन हो जाता है।

प्रकृतिकी असंख्य शक्तियाँ आपके चारों तरफ झुण्डकी झुण्ड घूम फिर रही हैं। संसारकी हजारों घटनायें आपकी आँखोंके सामने घट रही हैं। आप इनसे ज्यादेसे ज्यादा फायदा उठाइये। आपके ज्ञानका विश्वविद्यालय प्राकृतिक सौन्दर्य है। आप इसी विद्यालयके विद्यार्थी बनकर ईश्वरीय चमत्कारोंका होशियारीसे अध्ययन कीजिये। शामके वक्त घरके भीतर या बाहर एकान्त स्थानमें चुपचाप स्वस्थ व निश्चिन्त होकर बैठ जाइये, वहाँ जो कुछ देखिये-सुनिये उसे नोट करते जाइये। किसी सुन्दर भू-प्रदेशका, जिसे आपने देखा हो—स्मरणशक्तिकी सहायतासे मनमें प्राकृतिक चित्र चित्रित कीजिये। उसके ऊबड़-खाबड़ पहाड़, कलकल करती हुई नदियाँ, हरे-भरे वृक्ष, धूप-छाया, ज़मीन और आसमान सभीको इस तरह देखिये—जैसे आप सचेत होकर इनमें सौन्दर्य ढूंढ़ रहे हैं। मनको प्रेम, आनन्द और सहानुभूतिके भावोंसे भर लीजिये। मधुर और दिलको गुदगुदाने वाले गाने गाइये। भँवरोंकी भनभनाहट, पत्तोंकी खड़खड़ाहट, पक्षियोंकी चहचहाहट, हवाके झोंकोंके मीठे शब्द, पशुओंकी उत्तेजक बोलियाँ और अन्य प्रकारकी आवाज़ोंको याद कर कल्पनामें सुनिये।

गड़े मुर्दे उखाड़नेसे कोई लाभ नहीं। शोक, सन्ताप, दुःख, विपत्तियाँ इत्यादि बीती बातोंको भूल जाइये। अतीतकी उन्हीं बातोंको याद रखिये—जिनमें सुख हो, आनन्द हो। ड्राम, बस

या रास्तेमें घूमते हुए खूबसूरत और प्रसन्नचित्त स्त्री-पुरुषोंको देखिये। कमसे कम आधा माइल रोज पैदल चलिये। पैदल चलनेसे हज़ारों फ़ायदे हैं। रास्तेमें दिलचस्प शक्लें, नई-नई बातें और नये-नये दृश्य देखनेको मिलते हैं। स्वास्थ्य भी बहुत सुन्दर रहता है। दुनियामें ऐसे हज़ारो आदमी हैं, जो साल-छै महीनेमें एक बार भी पैदल नहीं चलना चाहते। मोटर ही उनका जीवन है। उन्हें दो कदम भी रास्ता तय करना होगा, तो मोटरपर ही आपकी सवारी निकलेगी। ऐसे आदमो बुढ़ापेमे तरह-तरहकी बीमारियोंके शिकार हो जाते हैं और बहुत ज्यादा तकलीफें भोगते है।

यदि आप स्मरणशक्तिको तेजीसे नहीं बढ़ाते, तो आपकी मानसिक अवस्था क्या होगी—जानते हैं? आपके दिमाग़मे कोई भी मौलिकता, सुन्दर कल्पना या अनोखी प्रतिभाका चमत्कार नहीं पैदा हो सकता।

यदि आप स्मरण शक्तिको ज्यादा बलवान बनानेके इच्छुक है, तो ज्ञानेन्द्रियोंको शिक्षित कीजिये याने आँखें खोलकर चलिये। जो कुछ देखिये, उसमें सौन्दर्य और आकर्षण ढूंढ़िये। कानोंसे ज्यादा सुननेका अभ्यास कीजिये। जीभसे प्रत्येक स्वादका मज़ा लीजिये। नाकसे जो चीज़ सूंघिये, उसमे ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न कीजिये। आपके हाथोमे, उँगलियोंमें बिजलीका 'करेन्ट' है—जिस वस्तुको छुयें, उसमे जोरदार स्पर्श-शक्तिका विकास करें। इन्द्रियो द्वारा जो ज्ञान हम प्राप्त करते हैं, वही ज्ञान,

देखी-सुनी, स्पर्शकी हुई, चखी हुई और सूँघी हुई वस्तुओंके विचारों व अनुभवोंको हमारे मनके सम्मुख उत्पन्न करता है। इस संचित की हुई मानसिक शक्तिको ही स्मरणशक्ति कहते हैं। आपका ज्ञान-ध्यान जितना ही स्पष्ट और पूर्ण होगा—उतनी ही स्पष्ट और पूर्ण आपकी स्मरणशक्ति भी होगी।

इस बातको हमेशा याद रखिये—मनुष्य जो सोचता है, भविष्यमें वही बन जाता है।

अप्रिय, बदसूरत शक्लें तथा भद्दी वस्तुओंपर भूलकर भी ध्यान न जमाइये। रंग-बिरंगे फूलोंको देखिये और उनके तत्त्व तथा सौन्दर्यका अध्ययन कीजिये। हज़ारों किस्मके कीड़े-मकोड़े चींटे-चींटियाँ तथा दीमक बड़ी प्यारी, कोमल और मीठी बोलियाँ बोलते हैं—उन्हें कान लगाकर ग़ौरसे सुनिये। उनमें आपको एक नये किस्मके संगीतका मज़ा मिलेगा। रंगोंका अध्ययन कीजिये। किसीके घर या आफ़िसमें जाइये, तो वहाँकी खास-खास आकर्षक चीज़ें मनमें नोट कर लीजिये। परिचित अपरिचित तथा उन आदमियोंके नाम याद रखिये, जिनकी तसवीरें अख़बारोंमें निकला करती हैं। धुरन्धर विद्वानों और महापुरुषोंके सिद्धान्तोंको सावधानीसे पढ़िये और उन्हें मनके 'स्टाक' में इकट्ठा करते जाइये। यदि हो सके तो अपने दोस्तोंको सिर्फ पैरोंकी आवाज़से पहचानिये कि मेरा फलाँ दोस्त आ गया पिछली अच्छी बातें, नये और लुभावने दृश्य, वैज्ञानिकचमत्कार,

स्त्री-पुरुषोंकी मुलाकात, इरादे तथा भविष्यमें आपने उन्नतिका क्या प्रोग्राम बनाया—हफ्तेमें एक या दो बार इसकी पूर्ण समालोचना कीजिये। यह सब वैज्ञानिक अभ्यास है।

इन अभ्यासोंसे आपकी सिर्फ स्मरणशक्ति ही तेज़ न होगी, बलिक आपमें एकाग्रता, ध्यानशक्ति, इन्द्रियबोध, कल्पना और विलपावरका आश्चर्यजनक विकास होगा। इस तरह आप आहिस्तः-आहिस्तः पूर्व जन्म तकका हाल जान सकते है। धैर्य और निरन्तर अभ्याससे ही सफलता प्राप्त होती है—

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें सिलपर परत निसान॥"

स्मरणशक्तिमें कल्पना सबसे विलक्षण है। मनुष्यके जितने भी कार्य हैं, सबकी धारणा कल्पनामें की जाती है। एक व्यक्ति अपनी माताके लिये चाय बनाते समय चायके बर्तनपरके ढकनको उछलता देखकर कल्पना करता है कि भापके फैलनेसे ढकना उठ जाता है। उसकी यह कल्पना इंजिनकी सृष्टि करती है और दुनियामें रेलगाड़ी दौड़ा देती है। विज्ञान, चित्रकारी, कविता, साहित्य और कला कौशल आदि सबमें कल्पनाशक्तिकी बहुत ज्यादा ज़रूरत है। जिनमे कल्पनाशक्तिका अभाव है, वे संसारमे साधारण, अप्रिय और अयोग्य मनुष्य सिद्ध हुये हैं। विवेकी और परिश्रमी होनेपर भी कल्पनाशक्तिके अभावसे वे भावी जीवनके उच्चतम उपहारोंसे वंचित रह जाते हैं।

स्वामी दयानन्द शिवरात्रिके दिन शिवमन्दिरमे बैठे हुए यह कल्पना कर रहे थे कि जो शिव अपनी रक्षा चूहोंसे नहीं कर सकता, वह मेरी सहायता कब करेगा ? उन्हें इस कल्पना शक्तिसे महान ज्ञान उत्पन्न हो गया और वह घर छोड़कर देश-कार्यके लिये जंगलोमे चले गये। ठीक इसी प्रकार महात्मा बुद्ध, मीराबाई और गुरु नानककी भी कल्पनाओंने उनकी ज़िन्दगीमें महान परिवर्तन कर दिया। इन महापुरुषोंके जीवनके चमकनेका रहस्य और कुछ नहीं, स्मरण तथा कल्पनाशक्ति थी !

कोई घटना हो, कोई अभ्यास हो, कोई विचार या सिद्धान्त हो—सबमें स्मरण तथा कल्पना शक्तिकी आवश्यकता है। रातको सोते समय, निद्राके पहले, इन विचारोंका चिन्तन कीजिये-"मैं शक्तिशाली मनुष्य हूं। मेरी स्मरणशक्ति खूब तेज़ है। मेरा दिमाग़ दिन-प्रतिदिन बलवान होता जा रहा है।" इनविचारोंसे आपकी सचेत इन्द्रियोंमे सनसनी फैलेगी। दिमाग़मे खलबली उत्पन्न होगी और प्रसन्नतासे आपका मुखमण्डल चमक उठेगा।

जीवनको तकलीफोंका कारख़ाना न बनाकर उसे चिड़िया-घरकी तरह चहकने दीजिये। आपकी ज़िन्दगीमें चमत्कारपूर्ण अभिनय हो रहा है, उसमे आनन्दका क्षणिक तूफ़ान नहीं—स्थायी शक्ति है। पिछली ग़लतियोंको सुधारिये। वर्तमानको शक्तिशाली तथा भविष्यको प्रतापी बनाइये। किसी तरहका वहम न कीजिये। वहम मनुष्यताको जड़ मूलसे नष्ट कर देता है।

दिमाग़

हमारा दिमाग़ एक ज़बरदस्त कारख़ाना है। इसमे असंख्य डिपार्टमेण्ट हैं, जिनमें काम करनेवाले बड़ी मुस्तैदीसे अपनी ड्यूटी अदा करनेमें तन्मय रहते हैं। यहाँसे हुक्मनामे जारी होते हैं, ग्रामोफोनकी तरह बाहरी शब्दों और आवाज़ोंके रेकार्ड तैयार होते और बजते रहते है, इनकी मधुर ध्वनियाँ बाहरी आदमियोंको अपनी ओर आकर्षित करनेमें हमेशा अग्रसर रहती है। इन सब कारबारोंकी हलचलको लेकर यह महान इन्स्टीट्यूशन बरसों चला करता है; किन्तु ज्यों ही कर्मचारियों में से किसीने प्रधान कार्यकर्ताकी आज्ञा या अपनी ड्यूटीकी अवहेलना की, त्यों ही सारा कारबार नष्ट हो जाता है।

आकाशके अनन्त तारोंकी तरह दिमाग़के अन्दर एक रहस्यमय ज्योतिसमूह है, जिसके कारण ही मनुष्य, मनुष्य कहलाता है। हमारे देशमे महात्मा गांधीकी सपाट खोपड़ी या पं० जवाहरलाल नेहरूका चमकता मस्तिष्क बड़े महत्त्वका है। वस्तुतः प्रत्येक

देशकी सभ्यतायें इन्हीं दिमाग़दार खोपड़ियोंसे निर्मित होती हैं।

यदि आप राजनैतिक हैं, तो जर्मनीके हिटलर, अमेरिकाके रूज़वेल्ट, रूसके स्टैलिन और इटलीके मुसोलिनोके दिमाग़का अध्ययन कीजिये। यदि आप साहित्यिक हैं, तो डा० रवीन्द्रनाथ टैगोर, मैक्सिम गोर्की, एच० जी० वेल्स और बर्नार्ड शा की खोपड़ीके रहस्योंको समझिये! यदि आप रुपयेके भक्त हैं, तो राकफ़ेलर, हेनरी फोर्ड, बाटा, बिड़ला ब्रादर्स तथा सर सोराबजी पोचखानावालाके दिमाग़का इतिहास पढ़िये। आपको क़ीमती बातें मालूम होंगी। इन लोगोंके दिमाग़ शक्तियोंके धुरन्धर कारख़ाने हैं।

ईश्वरने समस्त प्राणियोंमें मनुष्यको श्रेष्ठ बनाया है। मगर मनुष्यकी श्रेष्ठता केवल दिमाग़पर निर्भर है—

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च
समान मेतत् पशुभिर्नराणाम्।
ज्ञानं हि तेषा मधिको विशेषो,
ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः॥

आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये चार बातें मनुष्य तथा पशुमें बराबर होती हैं। ज्ञान न होनेसे मनुष्य और पशु दोनों समान हैं।

दिमाग़में ज्ञान-बुद्धिको चमकाना या उसमें ठूँस-ठूँसकर

मूर्खताकी मिट्टी भरना हमारे हाथका काम है। वह एक ऐसा कोमल पौधा है, जिसे हम जिस तरफ चाहें मोड़ दें। उसमें करोड़ों सूक्ष्म तन्तु रहते हैं। इन्हीं तन्तुओंसे विचार-शक्तियाँ उत्पन्न होती है और इन्हीं विचार-शक्तियोंकी कान्तिसे हमारे दिमाग़में विलक्षण बुद्धि उत्पन्न होती है। जिसके द्वारा हम बहुत जल्द नवीनताओंके आविष्कारक, साहित्य क्षेत्रके महारथी, देश और समाजके भाग्यविधाता, धनकुबेर तथा मनुष्य मात्रके प्रेमी बन जाते हैं और एक दिन उच्च शिखरपर चढ़कर मानव जीवनको धन्य बनाते हैं।

ध्यान रखिये, जिन आदमियोंसे आप मिलते-जुलते हैं, उनका दिमाग़ एक-एक सुनहरा इतिहास है। उनके मस्तिष्कमें बड़ी-बड़ी लायब्रेरियाँ और ख़ूबियोंके ख़ज़ाने है। प्रत्येक मनुष्यसे दिल खोलकर बातें कीजिये। आपका दिमाग़ उन्नतशील लाइनोंमें तूफानमेलकी तरह दौड़ेगा, और आपको सफलताके स्टेशनमें पहुंचते ज़रा भी देर न लगेगी।

वर्तमान वैज्ञानिक युगमे यह बात बड़े तर्कसे सिद्ध हो चुकी है कि दिमाग़की सोई हुई शक्तियोंको जगानेवाली हमारे पास पाँच ताक़तें बड़ी ज़बरदस्त हैं। मन, विलपावर, आँखें, कान और नाक याने प्राणशक्ति। यदि हम इन शक्तियोंको अच्छी तरह अध्ययन और अभ्यास कर सकें, तो हमारा दिमाग़ सूर्य-किरणोंकी तरह जगमगा उठे।

दिमाग़को सुतीक्ष्ण और सजीव बनानेकी सबसे शानदार ताक़त है—मनुष्यकी घ्राण-शक्ति। जिन चीज़ोंको आप सूँघते हैं, उनमें ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न कीजिये और घ्राण-शक्तिको अधिक तीक्ष्ण बनाइये।

आजकलके सभ्य समाजमें बिरले ही आदमीको घ्राण-शक्तिका महत्त्व मालूम होगा। मगर जंगली आदमियोंका प्रधान दिमाग़ है—घ्राण-शक्ति। अपनी इस शक्तिके सहारे वे बड़ी दूर तक मनुष्योंका पीछा करते हैं, और जंगली जानवरोंसे हमेशा सावधान रहते हैं। अभी हालमें इस विषयकी जो वैज्ञानिक गवेषणायें हुई हैं, उनसे पता चला है कि सिर्फ जंगली मनुष्य ही मनुष्य और पशुओंका घ्राण-शक्ति द्वारा पीछा नहीं कर सकते, सभ्य मनुष्य भी इस कामको बिलकुल ठीक-ठीक कर सकते हैं। आजकल विदेशोंमें कुछ लोग घ्राण-शक्तिका आश्चर्यजनक रूपसे व्यवहार करते हैं। मनोविज्ञानवेत्ता डाक्टर पी० मूरका दावा है कि वह किसी कमरेकी गन्धसे बता सकते हैं कि एक घण्टा पहले उस कमरेमें कोई आया था या नहीं। कपड़ेकी गन्ध सूँघकर वह यह भी बता सकते हैं कि कपड़ा किसका है। ऐसे कई आदमी हैं। इसके अलावा आजकल वहाँके बहुतसे डाक्टर रोगके निदानमें घ्राण-शक्तिका उपयोग करते हैं, और रोगीके कमरेमें प्रवेश करते ही ताड़ लेते हैं कि रोगकी गति कैसी है और रोगी कितने दिनोंमें स्वस्थ हो सकता है।

दिमाग़को तेजस्वी बनानेका दूसरा रास्ता है विद्याध्ययन। मनुष्यमें पशुता भी है—देवत्व भी। पशुतासे धीरे-धीरे विकास करके पहले वह मनुष्य होता है और मनुष्यतासे ऊँचे उठकर वह देवपद प्राप्त करता है। पशुता पतन है और मनुष्यता उत्थान। मनुष्यको जितने साधन पशुत्वसे ऊपर उठानेमें सहायक होते हैं, उनमें शिक्षा प्रधान है। अतएव आप जितना ज्यादा अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ेंगे, उतना ही आपका दिमाग़ तेजस्वी होगा।

ज़िन्दगी और संसारमें सफलता पाना उच्च विचारों, दुरुस्त ख़यालों, बढ़ी-चढ़ी योग्यताओं और दिमाग़की संचालन-क्रियाओं पर निर्भर है। यदि स्कूल और कालेजोंके विद्यार्थी, अध्यापक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, व्यापारी और नौकरी पेशेके लोग उपरोक्त बातोंपर ग़ौरसे विचार करेंगे, तो उन्हें पता लग जायगा कि दिमाग़ कोई दूकान नहीं, जिससे नफ़ा या नुकसानका हिसाब जाना जा सके। दिमाग़ वह चमकता हुआ भण्डार है, जिसमें एकसे एक अच्छी चीज़ें भरकर आप सुरक्षित रख सकते हैं और मानव जीवनको चुम्बक बना सकते है।

हम तक़दीरके नामपर रो रहे हैं। विपत्तियाँ हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ी है। क्यों?—इसका एक ही जवाब है—हमारे दिमाग़की कमज़ोरी।

अपनी इन कमज़ोरियोंके कारण हम नरक-कालकी तरह

दुनियाकी चमकती बाज़ारोंमें घूम फिर रहे हैं। हमारी सम्पूर्ण शक्तियाँ मुर्दा हैं। हम शर्मसे किसीको अपना मुंह नहीं दिखा सकते। देश और समाजमें अपनी कोई आवाज़ नहीं पैदा कर सकते। हमारी आँखोंके आगे अँधेरा छाया रहता है। हम व्यापारकी दुनियामें 'फेल' हो जाते हैं, परीक्षाओंमें पास नहीं होते और नौकरीमें ज़रा भी तरक्की नहीं कर सकते।

इसके अतिरिक्त दिमाग़की कमज़ोरियोंके दूसरे कारण हैं— सड़ी-गली गलियोंमें घूमना; भद्दे, बदसूरत और अनपढ़ आदमियोंकी सोसायटीमें बैठना; गूँगे, बहरोंके साथ दोस्ती जोड़ना; घृणा, घमण्ड, द्वेष, शंका तथा गुस्सेकी आगमें जलना। अनुभवकी शून्यता, ऐयाशी, व्यभिचार तथा सुन्दर विचारधाराओंको ठीक रास्तेसे न ले चलना।

दिमाग़की कमज़ोरी और निपुणता कैसा रंग लाती है, आँखों देखी घटना सुनिये :—

सन् १९२८ की बात है। उन दिनों मैं एक सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रका सहकारी सम्पादक था। आफ़िसमें दो क्लर्क थे। दोनों ही बहुत पुराने थे। एकाएक इन दोनोंमें एकका दिमाग़ अच्छा निकल गया। वह न्यूज़ एडीटर बना दिया गया। उसकी तनख्वाहमें तरक्की हो गई। जब दूसरे क्लर्कको इस बातका पता चला, तो वह ईर्षाकी आगमें जल-भुनकर ख़ाक हो गया। एक दिन वह गुस्सेकी हालतमें मैनेजिंग डायरेक्टरके

पास पहुंचा और बड़े घमण्डसे बोला—"आपके आफ़िसमें सबसे ज्यादा काम करने वाला मैं हूं। आपने मेरे सहकारी की तरक्की कर दी—मेरी भी तनख्वाह बढ़ा दीजिये।"

मैनेजिंग डायरेक्टरने कहा—"तुम्हें मेरे यहाँ नौकरी करते ज़माना गुजर गया। मगर तुमने आज तक मेरे सामने अपने दिमाग़का कोई नया चमत्कार नहीं पेश किया। मैं तुम्हारी तनख्वाह बढ़ानेमें लाचार हूं।"

क्लर्क महाशय अपना सा मुँह लेकर चले आये। उन्होंने अपने सहकारीसे बोलना तक बन्द कर दिया। उनके मिज़ाजमें चिड़चिड़ाहट आ गई। वह जरा जरा सी बातपर गुस्सा हो जाते और आफ़िसके नौकरोंको डांटते फटकारते। इसका नतीजा यह हुआ कि, उनका रहा सहा दिमाग़ भी चौपट हो गया। वह नौकरीसे अलग कर दिये गये। लेकिन उनका सहकारी योग्यता, शान्ति तथा लगनके साथ सब काम संभालता गया। कुछ ही दिनोंमें वह प्रधान सम्पादककी कुर्सीपर डट गया। उसके अण्डरमें लगभग २०-२५ आदमी काम करने लगे।

दरअस्ल दिमाग़की कमजोरियाँ हमे जरा भी आगे नहीं बढ़ने देतीं। दिमाग़में विद्याकी रोशनी फैलाइये। उसे स्वस्थ्य होकर प्रसन्नता तथा सफलताकी सीढ़ियोंपर चढ़ने दीजिये।

हालीउडकी एक फिल्म कम्पनीका ज़िक्र है। वहां एक ग़जबकी नाचने वाली नवयुवती आई। उसके कलापूर्ण नृत्यमें

इतनी अधिक सौंदर्य-मादकता थी, कि लोग उसपर मुग्ध हो गये। उसके गानेमें जादूका असर था। लोगोंने सुना और मस्तीसे झूमने लगे। मगर वह थी बड़ी बद्सूरत। लोग उसके गुणोंके तो भक्त बन गये मगर सूरतसे सबको नफरत थी। जिस समय वह स्टूडियोमें आती—लोग उसे देख कर आपसमें कानाफूसी करते और उसके रूपसौंदर्यकी हँसी उड़ाते। परन्तु नर्तकी इन बातोंसे कभी न चिढ़ती। क्रोधके बदले वह सब पर प्रेमका जादू चलाती और हमेशा मुस्कुराया करती, किन्तु यार लोग फँसनेवाले न थे—उसे बराबर तंग किया करते। वह इन मुसीबतोंसे छुटकारा पानेका रास्ता ढूँढ़ने लगी। एक दिन उसने अभिनेताओंको भरी मीटिंगमें कहा—"आप चाहे मेरी जितनी हँसी उड़ायें, मैं कभी नाराज न होऊँगी। क्योंकि मैं जानती हूं—गुणके सामने रूपकी कोई क़ीमत नहीं होती।"

सब लोग ठहाका मार कर हँस पड़े।

नर्तकीने कहा—"मेरी आंखोंमें शेरके ताक़तकी चमक है। होठोंमे फूलोंकी मुसकान खिल रही है। गानेकी मधुर आवाज़ सुनिये—कोयलें शर्मसे मुंह छिपाती हैं। मेरा दिल प्रेमका दरिया है।"

नर्तकीने यह स्पीच इस ढंगसे दी, कि भीड़में सन्नाटा छा गया। लोग एक दूसरेका मुंह ताकने लगे। बद्सूरत नवयुवतीका रंग जम गया।

इसे कहते हैं—दिमाग़से काम लेनेका तरीक़ा। यदि यही नर्तकी झेंपती और चिढ़ता तो ज़िन्दगीके मैदानमें बुरी तरहसे हार जाती। मगर वह थी बड़ी चतुर। अपने दिमाग़को जिस बुद्धिमानीके रास्तेसे ले गई—उसकी कौन प्रशंसा न करेगा ?

यदि आप सफलताके पुजारी हैं। आपका उद्देश्य सिर्फ कमाना या मर जानाही नहीं—मनुष्य जीवनको चमकाना है तो ज्ञानेन्द्रियोंको जाग्रत कीजिये। पुस्तकालयों, क्लबोंके मेम्बर बनिये। शक्तिशाली मनुष्योंके जीवन चरित्र पढ़िये और दिमाग़-दार आदमियोंका सत्संग कीजिये। आप एक दिन सर्वश्रेष्ठ मनुष्य और श्रेष्ठ नागरिक होंगे।

जिस तरह भागीरथी गंगा अपनी असंख्य लहरोंसे कलकल निनाद करती हुई महासागरमे मिल जाती है। उसी तरह मनुष्यका शिक्षित दिमाग़ भी धीरे-धीरे संसारके प्रेम, श्रद्धा, कृतज्ञता तथा देवत्वके पवित्र सुख-सम्मिलनमे दूध पानीकी तरह मिल जाता है। उसे ऊंचे उठते देर नही लगती। संसारमें जितने मनुष्य साधारण मनुष्योमे जन्म लेकर सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं—उसका सबसे बड़ा रहस्य है, उनका शिक्षित दिमाग़। मनुष्य शिक्षित दिमाग़को लेकरही शक्तिशाली होता है। संसारमें भयानकसे भयानक, विचित्रसे विचित्र उथल-पुथल होते है। पुरानी सृष्टि नई होती है और नयी सृष्टि पुरानी। इन सबके अन्दर मनुष्योका दिमाग़ कुम्हारके चाकेकी तरह घूमता

रहता है। दिमाग़हीन मनुष्य पशु हैं। दिमाग़दार मनुष्यका जीवन हमेशा नया, ताज़ा और जवान रहता है।

तुम मनुष्य हो, इस महा सुन्दर पृथ्वीपर दुःख और आपत्तियोंके तूफ़ान लेकर छायाकी तरह न चलो। जीवनकी मंज़िलमें उज्वल धूपकी तरह दौड़ो। जो सोचो; होशियारी, मौलिकता और तर्कके साथ। एक दिन तुम्हारा दिमाग़ गंगाजलसे बढ़कर पवित्र, हिमालयके हिमसे ज्यादा स्वच्छ, चन्द्रमाकी चाँदनीसे कई गुना शीतल और सूर्यके प्रकाशसे ज्यादा देदीप्यमान होगा। तुम्हारे प्रतिभाशाली दिमाग़से तुम्हारा गौरव है। तुम्हारे देशकी जय है।

आँखोंका जादू

मैं कोई जादूगर नहीं, आपकी ही तरह एक चलता-फिरता मनुष्य हूं। मगर मुझे आपसे बड़ी दिलचस्पी है!

क्यों दिलचस्पी है? मैं किसलिये आपकी दिलचस्पीका तूफ़ान उठाये घूमता हूं?—

आपकी आंखोंमें आत्माका दिव्य प्रकाश, दिनकी निर्मलताका सजीव कोलाहल और रातकी काली अँधियारीका मौन हाहाकार है—

क्या कहें आपकी आँखोंको,
चालाक भी है, हुशियार भी है।
सीधी है कभी, तिरछी हैं कभी,
यह तीर भी हैं, तलवार भी हैं॥

मैं आपकी आंखोमें जलवये-कुदरत देखता हूं, क़यामत देखता हूं, प्रेमका नशा देखता हूं।

आपकी ज़िन्दगीमे दिलचस्प नाटक हो रहा है, किन्तु आप रंगमंचको छोड़कर, स्टेजके पीछे धूल भरे परदे ताकते हैं,

सजावटका नकली सामान देखते है। जब नाटक समाप्त हो जाता है, दर्शक अपने-अपने घर चले जाते हैं, रंगमंचकी रोशनी बुझ जाती है—तब आप बाहर निकलते हैं और अँधेरेमें सफलताके रहस्योंको टटोलते हैं। कितनी बड़ी भूल है यह !

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण—आपके चारो तरफ, आपकी आँखोंके सामने हर समय बेशकीमती चीजे चमकती चली जाती है। मगर आप न तो उन्हें पहचानते हैं, न उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं। यह क्यों ? मैं कहूंगा—"आप आँखे खोलकर नहीं चलते। आपकी आँखोंमे जो जादू है, उसका सुन्दर रूपसे प्रयोग नहीं कर सकते।"

संसारमे सौ में नब्बे आदमी आँखे खोलकर नही चलते। उन्हें इस बातका पता तक नही, कि हमारी आँखोंमें क्या जादू है और उसके ज़रिये हम कैसे विश्व विजयी बन सकते हैं।

मैं कहता हूं, आप सुखके इन्तज़ारमें आँखोंको पत्थर न बनाइये। हयाका पर्दा उठाकर उन्हे खूबसूरतीके बाज़ारमें टहलने दीजिये। न मालूम किससे आपकी आँखे लड़ जायँ और एका-एक आपकी तक़दीर जाग उठे !

आँखें आत्माकी रोशनी हैं। वे संसार और ईश्वरके चमत्कारोंको देखनेके लिये धराधामपर अवतीर्ण हुई हैं। इसलिये दुनियामें आँखें खोलकर चलिये। आपकी ज़िन्दगीका भेद आईनेकी तरह आपके सामने खुल जायगा।

संसार एक सुन्दर कली है। सूर्योदय होतेही वह फूलकी तरह खिल उठता है। आप उस फूलकी खूबसूरतीको होशियारीसे अध्ययन कीजिये। अविश्वास, भय और सन्देहके काँटोंको कुचल डालिये। विश्वास पूर्वक निगाहोंकी सर्चलाइटको चारों तरफ घुमाइये। दिनको सूर्योदयका रंगीन दृश्य देखिये, रातको चाँदनी रातका मौन संगीत सुनिये। आँखोंमें जादू उत्पन्न करने की यह वैज्ञानिक कला है। इसकी शिक्षासे आपका जीवन नवीन सन्देशोंसे भर जायगा।

कमज़ोर आदमी इन शिक्षाओंसे घबराते हैं। मगर शक्तिशाली लोग खुश होकर मुस्करा देते है। इसका सबसे बड़ा रहस्य यह है, कि दुर्बल दिल हमेशा बीती बातें सोचते है। वे अपनी सारी ज़िन्दगी बहस और वहममे बरबाद कर देते है। उनके जीवनमे हमेशा दुख और शोकको काली घटाये घिरी रहती हैं। मगर शक्तिशाली और उन्नतशील मनुष्य भूतकालकी तरफ जरा भी ध्यान नहीं देते। वे वर्तमानके भक्त बनते हैं और भविष्यको भगवानके रूपमे पूजते है। उनकी आँखोंका जादू वर्तमान और भविष्य दोनो पर चलता है। वे हर वक्त अपने सिद्धान्तोंकी जड़ मजबूत करते है और असम्भव ताक़तोंके प्रति चैलेंज देकर कहते है :—

छुपने को छुपो सौ परदो मे,
इस छुपने से क्या होता है?

हम ढूंढ़ निकालेंगे उनको,
हम खोजमें उनके रहते हैं।

मजनूसे एकवार किसीने कहा—"लैली बड़ी बदसूरत है। तुम उसपर दीवाने क्यों हो?"

मजनूने जवाब दिया—"तुम उसे मेरी आँखोंसे देखो—सब समझमें आ जायगा।"

मैं समझता हूं, मुसीबतोंका तमाशा देखते-देखते आपकी आँख बेज़ार हो गई होंगी। अतएव आप अपनी इच्छित वस्तुओंको मजनूकी आँखोंसे देखिये। बाहरी दुनियाकी समस्त विद्या आँखों द्वारा प्राप्त होकर हमारे दिमाग़में उथल-पुथल मचानेवाली हलचलकी सृष्टि करती है और हमारा चेहरा रेशमकी तरह चमक उठता है।

आप चाहे देहातमें रहते हों या शहरमें। आँखोंकी सर्चलाइटको अपनी मुसीबतोंपर फेंकिये, अपरिचित मार्गोंमें फैलाइये। स्त्री-पुरुषोंको दिलचस्पीसे देखिये। एक-एक मनुष्यके चेहरेमें एक-एक अद्भुत संसार छिपा हुआ है, जिनके रहस्योंको समझकर बड़े-बड़े वैज्ञानिक आविष्कार किये जा सकते हैं।

रास्तेमें चलते हुए हर चीज़को ग़ौरसे देखिये। उनमें कितने ही हीरे मिलेंगे, कितनेही काँचके टुकड़े। कितनेही पत्थर प्राप्त होंगे—कितनेही फूल। हीरोंको दिलके ख़ज़ानेमें दाखिल कीजिये,

फूलोंको हृदय—देवतापर चढ़ा दीजिये। पत्थर और कांचके टुकड़े आपका कोई उपकार नहीं कर सकते।

घरोंमें बैठकर ज़िन्दगीको आलस्यके नशेमे सराबोर करना मूर्खता है। आप अपने शहरकी उन खूबसूरत सड़कोंपर चक्कर काटिये—जहाँ सभ्य, पढ़े-लिखे, होशियार और सुन्दर स्त्री-पुरुष आते जाते हैं। खास आदमियोंकी पोशाकोंका अध्ययन कीजिये, उनके चेहरेकी बनावट देखिये—आँखोंकी सञ्चालन क्रिया पहचानिये। एक मनुष्यकी दूसरे मनुष्यके साथ तुलना कीजिये। ज्यों-ज्यों आप मनुष्योंको दिलचस्पी और मस्तीके साथ अध्ययन करेंगे—त्यों त्यों उनके नज़दीक पहुंचते जायंगे। सबके गुण, आनन्द और सौंदर्य ज़िन्दगीके ख़ज़ानेमे भरते जाइये। आखों द्वारा जीवनमें जादू भरनेका यह महान आकर्षक तत्व है।

यह क्या बात है, कि कवि, दार्शनिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिकोंकी आँखोंमें विशेष जादू होता है। वे साधारण मनुष्योंसे ज्यादा हर चीज़में अद्भुत सौंदर्य-रस प्राप्त करते हैं। असलमें वे चुम्बक तत्वोंके महारथी हैं। उनके हृदयमें प्रेमका तूफ़ान लहराया करता है। उनका मार्ग हमेशा आत्माको सत्य ज्योतिसे जगमगाता है। आप अपनी आत्मामे, अपने सुन्दर संसारमें इस सत्य प्रेमको गहराईसे ढूंढ़िये। महापुरुषोंमे बग़ैर सत्य-प्रेम के महानता नहीं उत्पन्न होती।

यदि कोई आपको उपदेश देता हो, तो आंख बन्द कर

लीजिये, पर कान खोल दीजिये। यदि कोई बुरी बात कहता हो, तो कान बन्द कर लीजिये—पर आँखें खोल दीजिये। किसी वस्तुमें सौंदर्य ढूंढ़ना उसके वास्तविक तत्वोंसे लाभ उठाना है।

संसार और मनुष्योंको लोग दो तरहसे देखते हैं। एक आँखसे, दूसरा मनसे। आप दोनोंमें दोस्ती उत्पन्न कर एक निराले रंगका आविष्कार कीजिये। आज मैंने फलाँ विलक्षण चीज़ देखी, 'उसने' मेरे दिलको चुम्बककी तरह अपनी ओर खींच लिया। हर रोज रातको गंभीरता पूर्वक सब बातों पर विचार कीजिये और फायदेमें आनेवाली चीज़ोंसे ज्यादा लाभ उठाइये।

क्रूरता, निर्भयता, बेईमानी, दग़ाबाजी, प्रेम, दया, धर्म, उदारता इत्यादि हर बातोंका पता आँखो द्वारा लगाया जा सकता है। आंखें मनुष्यके दिलका अफ़साना आपके सामने पेश करती हैं। उनकी चमकमें हृदयकी रोशनीका प्रतिबिम्ब झिलमिलाता है।

आपने सुना होगा—जंगलमें मंगल करनेवाले साधू संतोंके पास खूंखार शेर आते हैं और बिल्ली बनकर चले जाते हैं। इसमें क्या रहस्य है? असलमें इन महर्षियोंकी आँखोंमें ऐसा मनोहर जादू रहता है, कि बेचारा शेर उनकी शक्तियोंके आकर्षणसे बलहीन हो जाता है। उसका हृदय आनन्द तथा प्रेमसे नाच उठता है। साधू संतोंका यह सुन्दर जादू प्रत्येक मनुष्यके पास

है। उसे प्रेममय पवित्र हृदयोंमें ढूंढ़िये। जब आप उसे अपना लेंगे—तब आपका जीवन सच्चाई, शुद्धता, ईमानदारी तथा विश्वासके रत्नोंसे चमक उठेगा। उस समय आप भयानकसे भयानक चेहरेको देखकर भयभीत न होंगे। किसीसे खुलकर बातें करनेमें आपको जरा भी संकोच, भय या शर्मका सामना न करना पड़ेगा। दुनियाके हर मनुष्य आपसे प्रेम करेंगे—फिर आपको कमी किस बातकी रहेगी ?

अगर आपको किसी आदमीपर प्रभाव डालना है, किसी खास आदमीसे दोस्ती गांठनी है, तो आप जब उससे बातें कर—उसकी नाकके बिचले भागमे, ठीक भवोंके बीच, अपनी मोहिनी आँखे जमा दें, पलक न मारें और खूब मस्तीसे बात करते रहें। चन्द मिनटोंमें ही आपको मालूम हो जायगा कि आपका उस मनुष्य पर पूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। वह आपके प्रति आकर्षित होकर आपका प्रेमी बनता जा रहा है। मगर होशियार ! बाते करते समय आँखोको न तो काढ़िये, न ज्यादा फैलाइये; नहीं तो उस आदमीके मनमे सन्देह उत्पन्न हो जायगा और आपका वैज्ञानिक जादू काफूरकी तरह उड़ जायगा। बातें करते समय मौके-बेमौके पलके मारनेके लिये नज़रको होशियारीसे पलटते रहिये। कमरेकी छत और दीवालों पर टंगी हुई तस्वीरोंको ताड़िये। ज़मीनकी कोई चीज़ न देखिये, जो उस मनुष्यकी आंखोके नीचे है। आँखोकी ऊपरवाली चीज़ोंको मौज़से

घूरिये, आँखोंको घुमाइये और उन्हें पुनः उसकी भवोंके बीच जमा दीजिये—वह मनुष्य आपका भक्त बन जायगा।

यह कोई धोकेबाजी नहीं, आत्माकी रोशनीका परस्पर आदान-प्रदान है। मनुष्योंमें पवित्र प्रेम उत्पन्न करनेका क़ीमती अभ्यास है। इस अभ्यासमें वही सफल हो सकते हैं, जिनका हृदय सचाई, ईमानदारी और आनन्दके ललित तरंगोंसे लहराया करता है। ख़ूनी, दग़ाबाज, विश्वासघाती, चोर और डकैत इन अभ्यासोंमें कभी सफल नहीं हो सकते, क्योंकि उनका दिल हलाहलसे बढ़कर ज़हरीला और कोयलेसे ज्यादा काला होता हैं।

मैं कहता हूं—आँखोंसे बड़ी-बड़ी बूंदे बरसाकर उन्हें सुर्ख़ न बनाओ। उनमे प्रेमका काजल लगाकर उन्हें बाज़ारे हुस्नमें टहलने दो। तुम्हारी तेजस्वी निगाहोंसे महफ़िलकी प्रत्येक आँखें तुमपर झुक जायंगी। किसीने क्या ख़ूब कहा है :—

"आँखोंमें समा जाना,
पलकोंमें रहा करना।
दरिया भी इसीमें है,
मौजोमें बहा करना॥"

कानोंका रहस्य

कान हमारे गुरुदेव हैं। यह हमें संसारका समस्त ज्ञान देते हुए जीवनी शक्ति प्रदान करते हैं और हमारे चरित्रको ऊंचा उठाते हैं।

यदि हम संसारमें आँखे खोलकर चलते हैं और कानोसे ठीक-ठीक सुनते हैं, तो इसका यह मतलब हुआ कि हम प्रकृतिकी असंख्य शक्तियोंपर कब्जा कर रहे हैं, अपनेमें सैकड़ों गुणोंको उत्पत्तिके मूल रहस्योको जगा रहे हैं, हमारी आत्मा आनन्द लोकमें प्रवेश कर रही है—और हम ठीक उसी तरह आनन्दमे मत्त हो रहे हैं, जिस तरह ऊषाकी स्वर्ण किरणें पड़ते ही गुलाब अपने दलोंको खोलकर खिल उठता है; सुन्दर वसन्तके आगमनसे पक्षी चहचहा उठते हैं। उस समय हमारे आनन्द-प्रवाहोंको संसारकी कोई भी ताक़त, बाधा या विपत्ति नहीं रोक सकती। हम जीवन संग्राममे निर्भय होकर आगे बढ़ते जाते हैं।

हमारे कानोंमें मधुर या कर्कश, छोटी या बड़ी—जितनी

आवाज़ें आती हैं—सबमें आश्चर्यजनक सनसनी रहती है; मगर आप उस सनसनीसे फायदा इसलिये नहीं उठा सकते कि आपको पता नहीं—हमारे कानोंकी क्या ख़ूबियाँ हैं। आप उनकी तरफ़ कभी ध्यान भी नहीं देते, और आपके लिये कानोंकी ठीक उतनी ही क़ीमत हो जाती है, जितनी कि एक बन्दरके हाथमें बहुमूल्य हीरेकी!

जिस समय आप संसारमें कान खोलकर चलेंगे, उस समय आपकी आँखोंके सामने आश्चर्य बातोंसे भरी हुई प्रकृतिकी किताब खुल जायगी, और आप उसे पढ़कर जीवन तथा संसारके अनन्त रहस्योंको बड़ी सुगमतासे समझ लेंगे।

आप कानोंकी अद्भुत शक्तियोंको जगानेके लिये मधुर संगीत सुनिये, समुद्रके किनारे टहलिये और उसकी भीषण गर्जनाओंका आनन्द लीजिये। बीहड़ जंगलमें दरख़्तोंकी पत्तियोंकी खड़खड़ाहट, पशुओंकी विचित्र बोलियाँ और चिड़ियोंके चुटीले राग दिलमें भरिये। गंगाकी अनन्त धारापर दृष्टिपात करते हुए उसके कलकल निनादोंकी बहारें लूटिये। बिजलीकी कड़कती आवाज़, बादलोंकी रणभेरियाँ तथा निशीथ तारोंके मौन-संगीत हमारे कानोंकी शक्तियोंको जगाते हैं, मानसिक बीमारियोंपर रामबाण जैसा असर करते हैं और हमारे दिमाग़में शक्तिशाली विज्ञान भरते हैं।

यदि आपके कानोंमें किसी शक्तिकी सनसनाहट नहीं, उनमें

आपको कोई रहस्य नहीं मालूम होता—तो सोती हुई शक्तियोंको जगानेके लिये आप सबसे पहले संगीतके प्रेमी बनिये। संगीतका प्रभाव बड़ा विचित्र है। अनादि कालसे उसका असर मनुष्यकी आत्मापर पड़ता चला आ रहा है। जंगलीसे जंगली मनुष्यसे लेकर सभ्यातिसभ्य मनुष्य उसके प्रभावसे वशीभूत हो जाते हैं। पशु-पक्षी तक उसका अनुशासन मानते है। पेड़-पत्तियाँ तक उसका आदर करती हैं।

फारसमे मिरज़ा मोहम्मद नामके एक सज्जन वीणा बजानेमें उस्ताद थे। जब वह वीणा बजाते, आसपासके दरख्तोंमें बुलबुल फुदकने लगतीं। उनपर वीणाकी मधुर ध्वनिका विशेष प्रभाव पड़ता था। वे आनन्दके आवेशमें गिर पड़तीं और बेहोश हो जाती थीं। ये सब उस समय तक बेहोशीकी हालतमे पड़ी रहतीं, जब तक कि वह दूसरे स्वरका प्रयोग न करते। ज्योंही वह स्वर बदलते—बुलबुलें होशमें आकर उड़ जाती थीं।

साँप जैसे ज़हरीले जानवरको मदारी किस तरह तोंबीके स्वरमें आकर्षित कर लेते हैं, इसका सबको पता है।

दरअस्ल संगीत सुननेके लिये अचल सचल सभीके कान होते है। देखिये न, बैजू बावरा मेघ-मल्लार राग गाते, तो बादल खुश होकर पानी बरसा देते थे। वह जब दीपक राग अलापते तो दीपक आपसे आप मोहिनी 'लौ' के साथ जल उठते थे। बात यह है कि संगीतका प्रभाव बड़ा अद्भुत है। वह हमारे

हृदयमें आनन्दकी धारा बहाता है। वह बिजलीकी चमक, वर्षाकी कड़क, संग्रामकी रणभेरी, वसन्तकी बहार, तलवारकी झनकार, तोपकी आवाज़ और संसारकी समस्त सुन्दरताका सार हमारी आँखोंके सामने प्रत्यक्षकी तरह रख देता है। भगवान स्वयं संगीतके उपासक हैं। वे कहते हैं—"मैं न तो वैकुण्ठमें रहता हूं, न योगियोंके मनमें। मुझे तो वहाँ रमनेका अभ्यास है, जहाँ भक्त लोग संगीत द्वारा मेरी उपासना करते हैं।"

नौ-दस वर्ष पहलेकी बात है। मेरे एक बी० ए० पास मित्रके पिताजीका हृदयकी गति रुक जानेसे अचानक देहान्त हो गया। परिवारमें चार-पाँच विधवा औरतें और सात-आठ छोटे बच्चे थे। उनपर विपत्तियोंका पहाड़ आ टूटा। घरमें पैसोंका अभाव—गृहस्थीका खर्च कैसे चले? वह कमज़ोर दिलके आदमी थे, बहुत ज्यादा घबरा गये। पासमें ऐसी पूँजी भी न थी कि कोई छोटा-मोटा रोज़गार कर लेते। बेचारे नौकरीकी तलाशमें दर-बदरकी ठोकरें खाने लगे; मगर लाख कोशिशें करनेपर भी उन्हें कहीं नौकरी न मिली। उनकी योग्यता, बेचैनी और घबराहटके प्रति किसीने सहानुभूति तक न दिखाई। जहाँ जाते अपमानित होते और कुत्तेकी तरह दुतकारे जाते। फूलको छूते, तो वह काँटा हो जाता और सोनेकी तरफ उंगली उठाते, तो मिट्टीका ढेर नज़र आता।

इस मुसीबतमें उन्हें छ महीनेसे ज्यादा बीत गये। उनकी

रत बरसों जेलमें पड़े हुए कैदीकी तरह हो गई। शरीर ड्डियोंका कंकाल बन गया। मुंहमें जैसे किसीने स्याही पोत । हो। आँखोंमें निराशा और भयके भाव भर गये। बदनके टे चीथड़े इस कदर गन्दे हो गये थे कि रास्तेके भिखारी भी न्हें देखकर नफ़रतसे मुंह फेर लेते थे।

एक दिन वह इसी विक्षिप्त अवस्थामें घरसे एक ग्लास चुरा ाये। बाज़ारसे अफीम ख़रीदी, एक पार्कमें घुस गये और सन्नाटेमें अफीमको ग्लासमे घोल डाला। उन्हें इस समय सब मुसीबतोंसे उद्धार पानेका एक ही मुक्ति माग दिखाई दिखाई दे रहा था—आत्महत्या!

सन्ध्याका समय था। सूर्यदेव इस नवयुवककी वेवकूफीको घृणाकी दृष्टिसे देखते हुए अस्ताचलकी ओर चले जा रहे थे। चिड़ियाँ बसेरा लेनेके लिये आपसमे चोंचें चला रही थीं। मेरे मित्रने अफीमसे भरा हुआ ग्लास उठाया—उसे छाती तक ले गये, फिर धीरे-धीरे मुंहके पास। वह ज्यों हो उसे पीनेको तैयार हुए—उनके कानोंमें एक मधुर संगीत-ध्वनि सुनाई दी। संगीतका भाव यह था :—

"तुम्हारे आसपास राम रम रहे है। तुम उन्हें ढूंढ़ो। उनके दर्शन-आनन्दसे तुम्हारे सब संकट दूर हो जायेंगे।"

इस संगीतमें मिठासका जादू था। उसमें स्वरोंका इतना प्यार और रागोंका इतना आनन्द उछल रहा था कि मेरे मित्र

मस्त हो गये। उनके हाथसे ग्लास छूटकर ज़मीनपर गिर पड़ा और अफीमके सारे ज़हरको पृथ्वी पी गई!

मेरे मित्र उस संगीत-ध्वनिपर पागल हो गये। आत्महत्याकी जगह कानोंने उनके मनमें प्रेमकी दरिया वहा दी। वह शराबीकी तरह लड़खड़ाते हुए उठे—पार्कसे निकलकर सड़कपर आये। कुछ दूर भिखमंगोंकी एक छोटीसी टुकड़ीके बीच एक दस ग्यारह वर्षकी वद्सूरत लड़की उपरोक्त गाना गा रही थी। एक आदमी हारमोनियम बजा रहा था। चारों तरफ तमाशबीनोंकी भीड़ जमा थी।

मेरे मित्र भीड़ चीरकर लड़कीके सामने जा खड़े हुए। लड़कीने उन्हें देखा और भयसे चीखकर हारमोनियम बजानेवालेसे चिपट गई। संगीत बन्द हो गया। भीड़में कोलाहल मच गया। एक तरफसे आवाज़ आई—मार सालेको। दूसरी तरफसे एक आदमीने कहा—गुण्डा है। हारमोनियमवालेने न आव देखा, न ताव—खींचकर एक गहरा तमाचा मेरे मित्रके मुंहमें जड़ दिया!

तमाचा तेज़ था; मगर मेरे मित्रपर उसका उलटा असर हुआ। वह आनन्दसे झूमने लगे और खिलखिलाकर हँसते हुए लड़कीके चरणोंमें लोट गये।

भीड़में और तहलका मचा। लोगोंने इसे बदमाशी समझकर लात-घूँसोंसे मेरे दोस्तकी पूजा करनी शुरू कर दी।

उसी तरफसे एक फ्रेंचकट दाढ़ीवाले सज्जन जा रहे थे। उन्होंने बड़ी मुश्किलसे भीड़के चंगुलसे मेरे मित्रको छुड़ाया। वह किसी कालेजके प्रोफेसर थे। उन्होंने मेरे मित्रसे इस मारका सबब पूछा। मित्रने लड़खड़ाती ज़बानसे अपनी समस्त रामकहानी कह सुनाई।

प्रोफेसर साहबको बड़ा ताज्जुब हुआ, मगर किसीको विश्वास न था। लोग पार्कमें आये। पागलने अपनी सचाईका प्रमाण उँगलीके इशारेसे दिखा दिया। प्रोफेसरने काले पदार्थको सूंघकर देखा—वह सचमुच अफीम थी।

प्रोफेसर साहब दार्शनिक थे। उन्हें इस युवकपर बड़ी दया आई। वह उसे अपने घर ले गये। दो दिन बाद मैंने इस घटनाको धड़कते दिलसे सुना। उस समय मेरे मित्र साहबी लिबासमें एक सोफ़ापर बैठे हुये मेरी ख़ातिरदारीका इन्तज़ाम कर रहे थे। उन्हें सौ रुपये महीनेकी नौकरी मिल गई थी। वह प्रोफेसर साहबके प्राइवेट सेक्रेटरी थे!

ऐसा है विचित्र कानोंका रहस्य। कान संगीतकी सनसनी द्वारा हमारी ज़िन्दगीको चमकाते हैं और हमें कीमती अनुसन्धानोंका पता देते हैं।

बच्चे आमकी गुठली बजाते हैं, पहले घिसते हैं—फिर बजाते हैं। घिसते-घिसते जब स्वर बज उठता है, तब वे उसे और नहीं घिसते। अधिक घिसनेसे वह और बजेगी है। क्यों?

मनुष्य भी जब जीवन प्रेमके अमर संगीतको सुनकर अपनी दुःख गाथाओंको क्षय कर डालते हैं—तब उन्हें आत्महत्या जैसे भयानक पाप करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। वे अपने चारों तरफ ईश्वरके चमत्कारोंका दर्शन करते हैं, आत्माकी आवाज़ सुनते हैं—उस आवाज़के आघातसे वे एकाएक जाग उठते हैं। यह आवाज़ भवसागरमें डूबते हुये मनुष्योंको हाथ पकड़कर उठा लेती है; क्योंकि वह स्वयं प्राणोंकी आत्मा बनकर मनुष्य जीवनके साथ लिपटी हुई है।

यदि आप सूखी तबीयतके हैं, संगीतसे नफ़रत करते हैं, तो कान लगाकर मनुष्योंकी भीड़का कोलाहल सुनिये। किसी मीटिंगमें चले जाइये और वहाँ ज़ोरदार व्याख्यान सुनिये। घड़ीकी टिकटिक आवाज़, टेलीफोनकी घण्टी, मोटरका हार्न, जहाज़ या रेलकी सीटी तथा किस्म-किस्मके बाजोंकी ध्वनियाँ भी आपके बड़े फ़ायदेकी चीज़ें हैं। यह सब आपकी मानसिक मुसीबतोंके जंगलको काटकर साफ़ कर देंगी और उसकी जगह छोड़ देंगी—वासन्ती उपवन तथा भिन्न-भिन्न किस्मके खिले हुये फूलोंके झुण्ड! जिनकी मतवाली खुशबूसे आपका दिल व दिमाग़ हर समय हरा, ताज़ा और नया बना रहेगा।

सुननेवाले मनुष्य यदि बेवकूफ़ीसे अपने कान बन्द कर लेते हैं, तो इसके यह माने हुए कि वह आलस्यरूपी साँपको दूध पिलाकर पालते हैं, क्योंकि आलस्यके चिरसंगी हैं—निर्बलता

तथा अपमान। जो मनुष्य जीवनकी स्फूर्ति, उन्नति तथा जागृतिको नाश कर देते हैं। इसलिये कानोंके कपाट खोलनेके लिये आप जागिये और ब्रह्मचर्य व्रतका पालन कीजिये। ब्रह्मचर्यके माने है ईश्वरके साथ चलना। इस बलसे आपके अन्तःशरीरमे महाशक्ति आ जायगी, दुर्बलताओंके बन्धन टूट जायगे और आप कमज़ोर तथा बहरे मनुष्योंमे प्रकाशमयी शक्तियाँ पहुंचानेके प्रधान साधन बन जायँगे।

मनुष्य जो कुछ बोलते हैं, उन्हें ध्यान देकर सुनिये। उनसे कितने ही तरहकी आवाज़ें निकलती हैं। मनुष्यकी आवाज़से उसके चरित्र तथा वर्तमान स्वभावका पता लगता है और उससे आप हज़ारों फ़ायदे उठा सकते हैं।

यह सब क़ीमती अभ्यास है। सच्चा ज्ञान हमे आँखों और कानों द्वारा प्राप्त होता है, जो हमें अन्धकारके कैदखानेसे निकालकर प्रकाशकी दुनियामे घूमनेकी आज़ादी देता है। इसलिये कानके रहस्योंको समझनेमें ज्यादेसे ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न क़ीजिये। संसारके सौन्दर्यका संगीत, नृत्य और भावपूर्ण कविता है—हमारे कानोकी चैतन्यता, मानसिक शक्तियोंकी जागृति और हमारी सफलताका सुन्दर चिह्न!

आप जागते है, परन्तु नींदसे ज्यादा बेहोश हैं। सब कुछ सुनते हैं—मगर इस कानसे सुनते हैं, उस कानसे निकाल देते हैं। मै कहता हूं, जब आपके कानोंकी सभी तन्त्रियोंके स्व-

ठीक हो जायगे, तब आपकी हृदय-वीणा झनझना उठेगी और उससे सफलताओंके अमर संगीत निकल-निकलकर आपको मुग्ध करने लगेंगे।

जिस तरह सन्ध्या शान्त होकर मूक वृक्षोंके बीच अपने सौन्दर्य—आनन्दका तमाशा दिखाती है, उसी तरह अपने शोक और दुःखोंमें शान्त रहकर आप भी मनुष्यताके चमत्कारोंको संसारमें फैलाइये। चिन्ताओंका स्वागत कर यदि आप अपने कान बन्द कर लेंगे, तो जीवनकी उन्नतिका संगीत भी न सुन सकेंगे और आपका मनुष्य जीवन असमयमें ही मुर्दा हो जायगा।

लक्ष्य या सिद्धान्त

आपका जीवन कुरुक्षेत्रका मैदाने जंग है। इसमे रोज ही तोपके गोले छूटते है, विषाक्त गैसें चलती हैं, सनसनीखेज़ वायुयान उड़ते हैं और भीषणसे भीषण बन्धाड़े होते रहते है। ज़िन्दगीके इस महा संग्राममे जो कायर, निकम्मे, आलसी और सिद्धान्तहीन है—कुत्तोकी मौत मरते हैं; परन्तु कर्मवीर तथा बहादुर सैनिक झुण्डके झुण्ड देवदूतकी तरह नित्य इस महासमरमे अवतीर्ण होकर आगे बढ़ते हैं। इनका रण-संगीत मुर्दोमे जान फूंकता है। ये तोप तीरोके घमासानमें और भी जोशीले बन जाते हैं। इन्हे कुरुक्षेत्रका युद्ध क्या, संसारका कोई भी महासमर नहीं पराजित कर सकता। सिद्धान्त स्वयं इनकी रक्षा करनेमे तेज़ घुड़सवार सेनासे बढ़कर काम करता है। यह अपने लक्ष्यपर बेचूक निशाना मारते हैं और विजयके स्वर्ण-सिंहासनपर जा बैठते हैं।

यदि आप ज़िन्दगीको सोनेकी तरह चमकाना चाहते हैं

संसारके सिरमौर बनना चाहते हैं, तो किसी लक्ष्य या सिद्धान्तक निर्वाचन कीजिये। सच्ची लगनके साथ कार्यक्षेत्रमें उतरिं आपका सौभाग्य-सूर्य चमकनेकी प्रतीक्षा कर रहा है। सि काले मेघोंके फटनेकी ज़रूरत है।

आपकी ज़िन्दगीका लक्ष्य क्या होना चाहिये?—को अनोखी कामना, कोई चमत्कारसे भरी अभिलाषा। यदि आप कलाकार, कवि, दार्शनिक या वैज्ञानिकोंकी श्रेणीमें आना चाहं हैं, व्यापारकी दुनियामें चमकनेका इरादा है, देश और समाजमें धूम मचानेकी भावना है; जज, बैरिस्टर, इंजीनियर, डाक्ट प्रोफेसर और ऐसी ही किसी दूसरी ऊँची कुर्सीपर उटनेक ख़याल है—अमीर बनना चाहते हैं, तो अपने लिये कोई दिलचस्प काम चुनिये। उसका 'प्लान' बनाइये और आत्मबल, प्रसन्नता, उत्साह, लगन तथा मानसिक ताक़तोंके साथ आगे बढ़िये—सफलता आपके चरण चूमेगी।

यदि आप विचारपूर्वक देखें, तो ज़िन्दगीकी सुन्दर दिलचस्पी आपको लक्ष्य तथा सिद्धान्तोंमें मिलेगी। ग़ौरसे मनुष्योंकी उन्नतिके इतिहास पढ़िये। योद्धा, साहित्यिक, व्यापारी राजनैतिक तथा धनी-मानी पुरुषोंके जीवनचरित्र अध्ययन कीजिये। आपको स्पष्ट मालूम हो जायगा कि उनकी सफलताका महान वैज्ञानिक तथ्य था—लक्ष्य या सिद्धान्त! वे किसी न किसी उद्देश्यको लेकर ही कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुये थे

मुसीबतके काँटोंको उन्होंने फूलसे अधिक कोमल समझा। वे जीवन-संग्राममें हमेशा मैदान सर करते गये। संसारकी कोई भी विरोधी ताक़त, कोई भी विद्रोही शक्ति उन्हें विजय मार्गसे पीछे नहीं हटा सकी।

आज भी इस चिन्ताशील संसारमे सैकड़ों हज़ारों औरत-मर्द ऐसे मिलेंगे, जो किसी न किसी सिद्धान्तको लेकर ही जीवनकी कठिन मंज़िल तय कर रहे है। उन्हें दिलचस्पीसे देखिये, होशियारीसे पहचानिये। उनके श्रीमुखमें आत्माभिमानकी अमर ज्योति जगमगा रही है। अख़बारोंमें धड़ाधड़ उनके नाम निकल रहे हैं। वे देश और समाजमे हथेलीमे तूफ़ान लेकर हलचल मचाते हैं। समस्त भूमंडल उनके सिद्धान्तोका भक्त है—विचारोंका उपासक है।

यह सत्य है कि बग़ैर सिद्धान्तके सिद्धि नहीं प्राप्त होती। आज हज़ारों लाखों स्त्री-पुरुषोंके दिल टटोलकर देखिये—उनके जीवनका कोई सिद्धान्त नही। वे लक्ष्यहीन हैं—उद्देश्यसे खाली। वे दुनियामें पैदा होते है, खाते हैं, कमाते हैं और रात दिन सोकर हमेशाके लिये अनन्तके गर्भमें अन्तर्द्धान हो जाते है। इन्हींकी देखादेखी, इन्हींके चरण-चिह्नोंपर चलकर आज हम मूर्ख और निकम्मे मनुष्य मुसीबतों तथा बेकारियोंके हाहाकारमे अपनी अमूल्य ज़िन्दगीको मिट्टीमे मिला रहे हैं। हमारी नादानीका इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है?

ज़िन्दगीमें किसी लक्ष्य या सिद्धान्तका न होना दुर्भाग्यकी बात है। आप सिद्धान्तके जहाज़पर चढ़कर संसारकी सैर कीजिये। मानस नदीके किनारे लक्ष्यका किला बनाकर वीर सेनापतिकी तरह डट जाइये। मगर एक बातका ख़ूब ख़याल रखिये—एक ही सिद्धान्तकी उपासना कीजिये। जब तक एक न पूरा हो जाय, दूसरेकी तरफ़ नज़र न उठाइये। नहीं तो आपके लिये वही कहावत चरितार्थ होगी—"दुविधामें दोनो गये माया मिली न राम।" दो नावोंमें पैर रखनेवाले मनुष्य डूब जाते हैं—उन्हें कोई नहीं बचा सकता।

अब यहाँ आपको यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि आपके जीवनका सिद्धान्त शक्तिशाली और अकेला होना चाहिये। यह नहीं कि आप शेख़चिल्लीकी तरह सोचने लगें—'मैं मज़दूरी करके चार पैसे कमाऊँगा, पैसोंको मुर्गियाँ ख़रीदूंगा, मुर्गियाँ सोनेके अण्डे देंगी—अण्डे बेचकर महल बनाऊँगा इत्यादि।' यह कोई लक्ष्य या सिद्धान्त नहीं, विचारोंकी निरर्थक लहरें हैं—जो आँधीकी तरह दौड़कर आपके जीवनकी चट्टानोंसे टकराती हैं और फौरन उलटे पैरों लौट जाती हैं। ऐसी निर्जीव विचार-धाराओंसे कोई फायदा नहीं। इनसे आपका मन घूमने लगता है, आपकी ध्यानशक्ति कई भागोंमें बँट जाती है और आप किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं।

सिद्धान्त दो तरहके होते हैं—अच्छे और बुरे। भले और

बुरे सिद्धान्तोंको कभी दिलमें जगह न दीजिये, क्योंकि उनकी सनसनाहट और सन्देहपूर्ण आन्दोलनसे जिंन्दगीका सारा रस सूख जाता है और आप फौरन मैदान छोड़ भागते हैं। अच्छे सिद्धान्तोंको ग्रहण कीजिये। जो आत्मा अच्छे सिद्धान्तोंको जानती है, वह जीवन-संग्राममें अपनेको कभी अकेला नहीं देखती। वह अपनी तकलीफोंको एक ओर पटक देती है और जीवन भण्डारसे चैतन्यता प्राप्त कर ऐसी उन्नतशील शक्तिको पकड़ती है, जिसका पहले उसे कभी ज्ञान तक न था।

आपकी आँखोंके सामने दुनियामें जो चीज़ है, जिसे आप हासिल करना चाहते है, जो आपके दिलमें प्यारके पौदेकी तरह लहलहा रही है—एक न एक दिन आपको अवश्य मिलेगी। हाँ, आपको सिद्धान्तके एकान्त जंगलमें तपस्या करनेकी ज़रूरत है—सच्चे दिलसे उसीके नामकी माला फेरनेकी आवश्यकता है।

यह न सोचिये—'मैं भला क्या कर सकता हूं?' उलटे यह भावना बनाइये—'मैं क्या नहीं कर सकता!' आप प्रायः ऐसे जन्मान्ध आदमियोंको देखते होंगे, जिनमे कोई न कोई ...हान गुण होता हैं, जिसे देख-सुनकर सबको चकित रह ...पड़ता है। आप सोचेंगे—इस बिना पढ़े-लिखे, बिना ...ा देखे अन्धेमे इतनी करामात कहाँसे आ गई? इसमें ...श्य कोई न कोई दैवी शक्ति है। सचमुच उसमें दैवी शक्तिकी कला प्रकट है। अन्धा होनेके कारण वह प्रायः आत्मसंसारमें

ही भ्रमण किया करता है और उसे आत्म-चिन्तनसे अपने लक्ष्य या सिद्धान्तोंका बोध होने लगता है; तब वह एक महान गुण लेकर हम लोगोंके सामने प्रकट हो जाता है!

सिद्धान्तोंकी सफलताके लिये हमें अपनी इस मंगलमयी आत्माको पहचानना होगा। यह आत्मा दैवी निधियोंकी कल्याणी है। जिस प्रकार दैव शक्तिमान और समर्थवान है, उसी प्रकार आत्मा भी हममें से प्रत्येकको दैवी विभूति प्रदान करती है। यदि आप अपनी आत्माके लक्ष्य, बल और विश्वासको लेकर कर्तव्य-पथपर अग्रसर होंगे, तो आपको नदी भी मार्ग दे देगी; पर्वत भी अपने सिर आँखोंपर उठा लेंगे। लक्ष्य या सिद्धान्तसे जीवनकी कोई ऐसी ग्रन्थि नहीं, जो खोली न जा सके।

आपको ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे, जिनसे ज्ञान होगा कि जिनकी गणना पहले ग़रीब, मूर्ख और कमजोरोंमें होती थी, वही सिद्धान्तको लेकर अमीर, विद्वान और बहादुर बन गये। गोल्डस्मिथको लीजिये—उनकी गंवारोंमें गिनती थी; पर Vicar of the Wake field और Deserted Village उन्हींके दिमाग़की रचना है। लार्ड क्लाइव स्कूलमें सबसे ज्यादा कमज़ोर और मूर्ख समझे जाते थे; पर इतिहासके पन्नोंमें वह अंग्रेज़ जातिके गौरव हैं। स्काट, बायरन, नेपोलियन—सभी इस समझे जाते थे; पर उनकी प्रतिभा सिद्धान्तोंको लेकर खूब चमकी। किसीने ठीक ही कहा है—"जिसने अपनी आत्मा

और गुणोंको चमकानेका कोई उद्देश्य बना लिया है, दुनियामें वही धन्य है।"

बहुतसे लोग परिश्रम करते हैं, मगर उन्हें सफलता नहीं मिलती। यदि उनसे पूछा जाय कि आपका सिद्धान्त क्या है, तो वह मुंह बिगाड़कर कहेंगे—"सिद्धान्त-फिद्धान्त मैं नहीं जानता। मुझे मेहनतमे विश्वास है—कुछ न कुछ हो ही जायगा।" ऐसे लोग बड़े हज़रत होते हैं। इनके जीवनका कोई लक्ष्य नहीं। इन्हें तो बस फावड़ा चलानेसे मतलब—ज़मीनसे चाहे कुछ निकले या न निकले। अब आप ही बताइये, जिस मल्लाहको यह ख़बर नहीं कि उसे किस बन्दरगाहमे पहुंचना है, उसकी आँधी और तूफ़ानमे क्या हालत होगी?

कारलाइलने लिखा है—"कमज़ोरसे कमज़ोर आदमी भी अपनी शक्तिको एक लक्ष्यपर रखकर कुछ न कुछ कर दिखाते हैं; पर ताक़तवरसे ताक़तवर अपनी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर कुछ नही कर पाते।"

डिकेन्ससे उनकी सफलताका रहस्य पूछा गया, तो आपने फ़रमाया-—"मैं ऐसा कोई काम नहीं करता, जिसमें मैं अपने आपको दृढ़तासे न लगा दूँ।" सर जगदीशचन्द्र बसुकी गणना सफल व्यक्तियोंमें की जाती है, क्योंकि उन्होंने संसारकी ज्ञान-वृद्धिके लिये अपना जीवन दृढ़तापूर्वक दरख्तों और पौधोंके अध्ययनमे बिता दिया।

सिद्धान्तको ऊँचा रखिये। जीवनमें नवीन ज्योति जगाइये निशाना ताककर तीर फेंकिये। कुतुबनुमाकी सुई, कितना भी प्रयत्न किया जाय, एक ही सिद्धान्तको एकाग्र चित्तसे बतलाती दिखाई देगी। फिर हम क्यों न उसे अपना गुरु बनायें ?

आज ज्यादातर नवयुवकोंका पतन क्यों हो रहा है ? इसका प्रधान कारण यह है कि वे लक्ष्य पथसे हटकर अन्धविश्वासों, रूढ़ियों और बुरी भावनाओंके उपासक हो रहे हैं। उनका मन परिश्रमसे हिम्मत हारकर बैठ जाता है। आत्मा उत्साहहीन होकर दब जाती है। इसलिये आत्मापर ध्यान देनेकी सख्त ज़रूरत है। यदि आपको आत्माका शरीरपर शासन स्थापित करना है, यदि मनको इन्द्रियरूपी घोड़ोंका सारथी बनाना है, तो उसे बलवान और स्वस्थ रखनेके लिये आपको कोई न कोई जीवनका महान सिद्धान्त बनाना चाहिये। आत्माको—दैनिक भोजन, सनसनी उत्पन्न करनेवाले समाचारपत्रों, चटपटे मनोरंजनों, जोशीली गपशप और दिखावटी दिलचस्पियोंसे ज्यादा आगे बढ़ाइये। फिर देखिये, इसकी शक्ति किस तेज़ीसे आगे बढ़ती है। लक्ष्यहीन जीवन और तुच्छ विचार मन आत्माको भ्रष्ट करते हैं।

सरसब्ज़ दरख़्त अकेला मैदानमें खड़ा है, उसपर कड़ी धूप पड़ती है, मूसलाधार वृष्टि होती है, तूफानके झोंके उसे

झकझोरते है। मनुष्योंके झुण्ड ढेले मार-मारकर उसके फलोंको तोड़ते हैं, फिर भी वह सर्द आहें नहीं भरता, किसीसे अपनी मुसीबतें नहीं रोता। उसे परमात्माने जिस उद्देश्यके लिये पैदा किया है, वह अपने उसी उद्देश्यको पुरा करनेमे तल्लीन है। आप इस दरख्तसे अपना लक्ष्य पूरा करनेकी कला सीखिये। मगर इस चिन्तामें कभी न डूबिये—दुनिया मुझे क्या कहेगी ?

आप अपना काम किये जाइये—दूसरोंकी न सुनिये। सुननेसे मतलब ही क्या है ? दुनियामे हर मनुष्य अपने दुःख-सुखका साथी आप है। उसे अपनी मुसीबतें स्वयं भोगनी पड़ती है। लोगोके कहनेका ख़याल छोड़िये। जिस कामको करनेमें आपको दिलचस्पी हो, फ़ायदा हो, आसानी हो, आराम हो—वही कीजिये। दुनिया बके, तो बकने दीजिये। आप हरएकको खुश नहीं रख सकते—न कोई आज तक दुनियाके हरएक चलते-फिरते इन्सानको खुश रख सका है। लोग परमात्मा तकमें दोष निकालते हैं और उसे गालियाँ देते हैं।

तुम अपने सिद्धान्तके आगे लोकभय, समाजभय और मृत्युभयको हृदयसे निकाल दो। चिन्ता किस बातकी ? तुम्हारे सिद्धान्त-रथके सारथी स्वयं भगवान—कर्मयोगी श्रीकृष्ण है !

हिम्मत करो और किसी महान सिद्धान्तको लेकर आगे बढ़ो :—

"सामिलमें पौरमें शरीरमें न राखै भेद,
हिम्मत-कपाटको उघारै तौ उघरि जाय।
ऐसी ठान ठानै तो बिनाहू किये जंत्र मंत्र,
साँपके ज़हरको उतारै तौ उतरि जाय॥
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानौ जग,
हिम्मत कियेते कहो काह ना सुधरि जाय।
चारि जने चारिहू दिसा ते चारो कोन गहि,
मेरुको हिलायके उखारैं तौ उखरि जाय॥"

समयका मूल्य

रुपये कमानेमें व्यस्त रहनेवाले धनी-मानियोंका कथन है—

Time is money अर्थात् समय रुपया है। बात सच है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो समयकी क़ीमत रुपयेसे भी ज्यादा है। समयका सदुपयोग करनेसे मनुष्यके ज्ञान, स्वभाव और चरित्रकी उन्नति होती है। उसमें नियमबद्धता आ जाती है और उसे लोकप्रिय होते ज़रा भी देर नहीं लगती। आप ज्यों-ज्यों समयकी गहराईमें पैठते जायँगे, त्यों-त्यों आपको उसकी क़ीमत अधिक जान पड़ेगी। इसे हमेशा ध्यान रखिये—ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है, त्यों-त्यों आयुकी घड़ियाँ भी समाप्त होती जा रही हैं।

समय क्या है? समय ईश्वरका दिया हुआ शुभ जीवन और लक्ष्मीका अक्षय भंडार है। ईश्वरने हमें सब कुछ दिया है, मगर उसने 'समय' देनेमें बड़ी कंजूसी की है। वह दो क्षण या दो दिन भी एक साथ नहीं देता। जब पहला दिन देकर छीन

लेता है, वह दूसरा दिन देता है। मगर तीसरे दिनको अपने ही कब्ज़ेमें रखता है—इसलिये कि मनुष्य आँखें खोलकर वर्तमान समयकी क़ीमत पहचाने। जो मनुष्य आजके दिनका मूल्य समझता है, उसके लिये कलका दिन और भी क़ीमती हो जाता है। महात्मा तुलसीदासने अपने अमूल्य समयके नष्ट होनेपर पश्चात्ताप करते हुये खेदपूर्वक कहा है :—

"अब लौं नसानी अब ना नसैहौं।
रामकृपा भवनिशा सिरानी, जागे फिर न डसैहौं।"

मगर हम अँधेरेमें सो रहे हैं। समयके मूल्यको नहीं पहचानते। यदि महात्मा तुलसीदासकी तरह हमारे हृदयमें भी समय नष्ट होनेपर पश्चात्तापके आँसू उमड़ आयें, तो जीवन सुख और सुधार मार्गपर अटल हो जावे।

एक अंग्रेज़ कविने समयकी उपमा वेगवती नदीसे दी है। उसकी गूढ़ता और अर्थगौरवको देखिये। वह कहता है—"वेगवती नदी जैसे अनन्त सागरमें चुपकेसे जाकर मिल जाती है, वैसे ही समय भी अपना एक-एक पल चुपकेसे अनन्त कालमें संचित करता जाता है। नदीकी धारा बह जानेके बाद फिर कभी नहीं लौटती। समय भी व्यतीत हो जानेपर फिर हाथ नहीं आता। परन्तु इतनी समता होते हुये भी दोनोंमें एक भेद बड़ा भारी है। नदीके दोनों ओरकी भूमि उपजाऊ और हरी-भरी होती है; किन्तु समयका प्रवाह जिधरसे बह निकलता है, उधर

अपने पीछे केवल मरुस्थल ही छोड़ता जाता है—बालू, कंकड़ और पत्थरोंका मैदान।"

कविकी इस मार्मिक उक्तिमें कितना गहरा तत्त्व छिपा हुआ है, यह समयकी क़ीमत जाननेवाले मनुष्य ही समझ सकते है। सब लोग यदि सिर्फ इतना ही सोच लिया करें कि समयका सदुपयोग करनेसे अनेकों लाभ होंगे, तो बहुत कुछ उपकार हो सकता है; किन्तु हमारे देशके अन्धकारग्रस्त मनुष्योंकी दशा यहाँ तक गिरी हुई है कि वे अपने मतलबकी बात तक नहीं समझते। उलटे समयका दुरुपयोग तथा उपहास किया करते हैं। देखिये न, प्रति दिन लोग ढेरके ढेर मुर्दे श्मशानकी तरफ जाते देखते हैं; मगर जो जीते है, वे समझते हैं—हम हमेशा जीते रहेंगे। इससे बढ़कर आश्चर्यकी बात और क्या होगी?

समयका वेग अमोघ है, अबाधित है। वह न दिन देखता है, न रात। वह एक-एक सेकेण्डसे शताब्दियाँ बनाकर अविश्रान्त भावसे अनन्त पथपर चला जाता है। इसलिये जो समयको गलेसे लगाते हैं, भविष्य उन्हीके दोनो हाथोंमे लड्डू देता है।

लार्ड सिनहासे किसीने पूछा कि आपको सफलता कैसे प्राप्त हुई? उत्तरमे उन्होने कहा कि सिर्फ योग्यतासे ही सफलता नहीं मिलती। उपयुक्त समयका उपयोग सफलताके लिये एक सजीव साधन है। संसारमे प्रत्येक मनुष्यके साथ उसका भाग्य भी उत्पन्न होता है; पर जब तक कोई चेष्टा नहीं की जाती,

कोई कार्य फलीभूत नहीं होता। समय देखते रहनेकी मुस्तैदी, समयको काममें लानेकी होशियारी, समयसे मुमकिन कार्य निकालनेकी सामर्थ्य आदि ऐसी बातें हैं, जिनसे कामयाबी हासिल होती है। मनुष्यको अपना काम अंजाम देनेके लिये रास्ता ढूँढ़ निकालना चाहिये। न हो तो पैदा करना चाहिये। कोई वक्त ऐसा नहीं, कोई दिन ऐसा नहीं, जब कोई न कोई अच्छाई करनेका मौक़ा न पेश आये।

बेंजामिन फ्रैंकलिन जैसे महापुरुषने कहा है—"यदि तुम अपने जीवनको बहुत प्यारा समझते हो, तो समय बरबाद न किया करो। क्योंकि समयके खम्भेपर ही तुम्हारी ज़िन्दगीकी इमारत टिकी हुई है।"

इतिहासमें उन मनुष्योंके हज़ारों उदाहरण मिलेंगे, जिन्होंने समयको हाथसे नहीं जाने दिया और असम्भव कार्योंमें सफलता पाई। आप असाधारण समयकी प्रतीक्षामें क्यों वक्त बरबाद करते हैं? मामूली समयका उपयोग कीजिये और उसे बड़ा बनाकर दिखाइये। कमज़ोर आदमी समयका इन्तज़ार करते हैं, पर सामर्थ्यवान पुरुष उसे पैदा करते हैं। खुली आँखोंसे समय दिखाई दिये बिना नहीं रह सकता। खुले कान समयकी आवाज़ सुने बिना नहीं रह सकते। खुले दिलोंके वास्ते काम करनेके लिये बढ़िया वक्त आये बग़ैर नहीं रह सकता।

पश्चिमी नई दुनिया कब नहीं थी? वह कौनसा महाद्वीप था,

जिसके आगे यह समय मौजूद न था ; पर अमेरिकाको ढूँढ़ निकालनेका श्रेय कोलम्बसको ही प्राप्त हुआ। पेड़ोंसे सेब गिरते किसने नहीं देखे ? पर इन सेवोंका गिरना देखकर प्रकृतिके नियमोंको पहचानने और बतलानेका यश न्यूटनको ही मिला। बिजली चमकती किसने नहीं देखी ? पर उसकी उपयोगिता सिद्ध करनेका श्रेय फ्रैंकलिनको ही मिला।

पाश्चात्य देशोंके लोग समयका सदुपयोग करना खूब जानते हैं। कारण, वे इसका मूल्य समझ गये हैं। मगर हमारे देशके लोग समयका महत्त्व नहीं जानते। अगर कुछ लोग जानते हैं, तो बहुत कम। जिस दिन हम लोग समयका मूल्य समझने लग जायँगे, उस दिन हमारी उन्नतिके मार्गमे रोड़े नज़र न आयगे। समयमें उन्नतिका रहस्य छिपा हुआ है। समयका ही दूसरा नाम जीवन है। जीवनकी सार्थकता इसीमे है कि आप एक क्षण भी व्यर्थ बरबाद न कीजिये। सुन्दर विचार-धाराओंमे बहिये। नित्य नये 'चान्स' ढूँढ़िये और ज़िन्दगीमें नये परिवर्तन कीजिये। याद रखिये, हम लोग इसी जन्ममे अनेकों अवतार ले लेते है।

समय 'विलपावर' का प्रश्न है। जो लोग समयके चिन्होंको नहीं पहचानते, उनके 'विलपावर' मे ज़ंग लग जाता है और वे ज़िन्दगीमें कोई चमत्कार नही पैदा कर सकते। ट्राम, बस या मोटरमे कभी बेकार न बैठिये—कुछ न कुछ पढ़ते रहिये या

सोचते रहिये। ज़िन्दगीको रोज़ चेक कीजिये। मैंने कितनी उन्नति की? मैं कहाँ तक पहुंच गया? कल मेरा दिन कैसा था और आज कैसा है? रोज़ रातको इसका पूरा हिसाब कीजिये। परिश्रमका फल अपने आप मिल जायगा।

यदि आपको यह सब काम करनेमें कठिनाई हो, तो एक रोजाना या साप्ताहिक 'टाइम टेबुल' बना लीजिये और उसीके अनुसार समयका सदुपयोग कीजिये। वह आपको पथप्रदर्शकका काम देगी। अगर आप समयको ठुकरा देंगे, तो आप भी गलीके ठोकरे ही रह जायंगे—आपको कोई न पूछेगा।

समयके सदुपयोग और दुरुपयोगके विषयमें एक उर्दू शायर फरमाते हैं:—

"नफ़ेकी क्या ख़ाक हो उम्मीद हमको बर्फ़में,
देर बिकनेमें लगी तो गलके पानी हो गया।"

समयकी दशा ठीक बर्फ़की-सी समझिये। यदि आप उसका वास्तविक उपयोग न कर सके, तो आप ईश्वरकी दी हुई एक अमूल्य सम्पत्तिके लाभसे वंचित रह जाते हैं।

मैंने अपने बहुतसे दोस्तोंको देखा है, वे सूर्यकी रोशनीमें टांगें पसारकर सोते हैं। कुछ लोग व्यर्थके तर्क, मनुष्योंकी निन्दा स्तुति और भगड़े फ़सादोंमें अपना क़ीमती समय बरबाद करते हैं। होटलोंमें, नाचगानोंमें, नाटकखानोंमें, शराब और जुओंके अड्डोंमें, मैखानोंमें चले जाइये—हज़ारों बेकार

कबूतर उड़ते दिखाई देंगे। यदि इन कबूतर उड़ानेवालोंसे कहिये—भाई, कोई अच्छा काम करो, दुनियामें नाम कमाओ—अख़बार और अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ो, तो वह मुंह बनाकर उत्तर देंगे—मुझे समय नहीं मिलता! ऐसे मनुष्य दयाके पात्र हैं। आवश्यक, विश्वासपूर्ण और ऊँचे दर्जेके कामोंको हाथमें लेनेके सर्वथा अयोग्य। एक बार वाशिंगटनके सेक्रेटरी साहबको ठीक समयपर कामपर न पहुंचनेके लिये देर हो गई। आपने अपनी इस ग़लतीके लिये उनसे माफ़ी माँगते हुये कहा—"मेरी घड़ी सुस्त चलती थी, देर होनेका यही सबब है।" वाशिंगटनने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया—"कलसे या तो आपको अपनी घड़ी बदल देनी होगी या मुझे दूसरे सेक्रेटरीका इन्तज़ाम करना पड़ेगा।"

मनुष्यके पास जब रुपया रहता है, तब वह उसे पानीकी तरह बहाता है, मगर जब रुपयोंका स्रोत सूख जाता है, तो उसे रुपयोंकी असली क़ीमत मालूम होती है। यही बात उन आदमियोंपर भी लागू होती है, जो समयका मूल्य वक्त चले जानेपर समझते हैं, हाथ मलमलकर पछताते हैं. तथा मरनेके कुछ घण्टे पहले समयके सदुपयोगकी बातें सोचते हैं और पश्चात्ताप करते है—हाय, मैंने कितना ही समय व्यर्थ खो दिया!

समयकी एक-एक घड़ी जागरणकी बिगुल-ध्वनि है।

समयका एक-एक ज़र्रा ज्ञान-विज्ञानका चमत्कार है। समयका एक-एक सेकेण्ड मौतका काला परवाना है :—

सुबह होता है शाम होती है,
उम्र यों ही तमाम होती है।

समय मनुष्यको विश्वके ख़ज़ानोंका पता देता है। धन, यश, प्रतिष्ठा सभी कुछ समयाधीन है। रोज एक घण्टा फ़िज़ूल बरबाद करनेसे बचाकर एक साधारण मनुष्य भी किसी विज्ञानका ज्ञाता हो सकता है। एक घण्टा प्रतिदिनके अध्ययनसे एक मूर्ख और अज्ञान व्यक्ति बुद्धिमान बन जाता है। एक घण्टा रोज़ पढ़नेसे कोई भी विद्यार्थी एक सालमें दस हज़ार पेज पढ़ सकता है। एक घण्टा रोज काम करनेसे भूखों मरता आदमी रोज़ी कमा सकता है। एक घण्टा रोजके उद्योगसे एक अज्ञात व्यक्ति सुविख्यात हो सकता है। इसी तरह अगर सुकर्मोंमें हमारा सारा समय व्यतीत होता रहे—तो हमारी जीवन-लता रसीले फूल-फलोंसे लद जाय और हमारा मनुष्य जन्म सार्थक हो जाय।

समयका उचित रूपसे न उपयोग करनेसे हरदम दिक्कत उठानी पड़ती है। अगर आप अपने कामको पूरा करना चाहते हैं, तो उसे अपने हाथोंसे कीजिये—यदि पूरा नहीं करना चाहते, तो उसे दूसरोंको सौंप दीजिये।

सफलताके लिये समयकी पाबन्दी और उपयोग बड़ा

आवश्यक वस्तुयें हैं। देर लगाने या टालमटोल करनेसे संसारमें बड़े भयानक अनर्थ होगये हैं और होते रहते हैं। इसकी एक-एक घड़ी भाग्यशाली है, इसका एक-एक पल बीत जानेसे निश्चित कार्य फिर नहीं हो सकता। जैसे लोहा ठंडा हो जाने पर पीटनेसे कोई लाभ नहीं, इसी तरह जो कार्यशक्ति कलपर टालकर नष्ट कर दी जाती है, फिर नहीं वापस आ सकती। कौन विद्यार्थी नहीं जानता कि परीक्षाके समय देरसे आनेपर क्या हानि होती है? कौन विद्यार्थी एक बारमें उत्तीर्ण न होकर यह चाहेगा कि अबकी दफा देखा जायगा, और जो अबकी दफा देखनेवाले हैं, उन्हें सफल होते कभी नहीं देखा गया।

हम चारों तरफ अपनी मुसीबतोंका रोना रोते हैं कि हम बेकार हैं, हमारे बाल-बच्चे भूखों मर रहे है। यह कमज़ोरियां हैं। दुनियामें विशाल कार्यक्षेत्र पड़ा हुआ है। चारों तरफ कारू का ख़ज़ाना चमक रहा है, मगर उसे प्राप्त करनेवाला चाहिये। हमारी सबसे बड़ी कमज़ोरी तो यह है कि हम जानते हुये भी समयका उपयोग नही करना चाहते। हम धन, नाम या योग्यता प्राप्त करनेके लिये किसी असाधारण समयकी प्रतीक्षा करते हैं, बग़ैर शागिर्दीके उस्ताद बनना चाहते हैं, बिना पढ़े-लिखे विद्वान होना चाहते हैं और कर्ज़ लेकर धनवान बननेकी इच्छा रखते हैं।

यह भयानक भूलें है। आप किसी ख़ास समयकी प्रतीक्षा न करें, बल्कि उसे पैदा करें। सुनहरे मौक़े सुस्त आदमीके

लिये कुछ भी नहीं; पर मिहनती मनुष्यके मामूली काम भी सुनहरे मौक़ोंके समान हैं। गया वक्त फिर हाथ नहीं आता। खोया हुआ धन कंजूसी और परिश्रमसे, खोया हुआ ज्ञान पढ़ने और अध्ययनसे, खोया हुआ स्वास्थ्य अनुपान और औषधिसे फिर मिल सकता है; पर खोया हुआ समय हमेशाके लिये हाथसे निकल जाता है। किसीने ठीक ही कहा है :—

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पलमें परलै होयगी, बहुरि करोगे कब्ब?"

आपने जिस आदमीसे जिस समय मिलनेका वादा किया हो—सौ काम छोड़कर उससे ठीक 'टाइम' पर मिलिये। यदि आप ऐसा न करेंगे, तो लोगोंमें आपकी तरफसे विश्वास उठ जायगा। ठीक समयपर मिलनेकी आदत उच्च चरित्रका सुन्दर चिन्ह है।

यदि आप किसी मीटिंग, कान्फ्रेंस, थियेटर, क्लब या बायस्कोपके संचालक हैं, तो उन्हें ठीक समयपर आरम्भ कीजिये। बहुतसे लोग स्टेशनपर उस समय पहुंचते हैं, जब गाड़ी छूट जाती है। सुस्ती भरे कामोंमें भयानक गोलमाल उठ खड़े होते हैं।

समय ईश्वर और प्रकृतिका उच्च क़ानून है। प्रकाण्ड सूर्यसे लेकर धूलिकण तक, अनन्त नक्षत्रसे लेकर जुगनू मंडल तक, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, जल, अग्नि, वायु—सब समयके नियमोंके

पालन करते हैं। देखिये, सूर्य ठीक समयपर उदय होता है और ठीक समयपर अस्त। उसमें क्वार्टर सेकेण्डका भी हेर-फेर नहीं होता। आजकी बताई तारीखसे ठीक पचास वर्ष बाद भी 'ग्रहण' का वही समय होगा—उसमें आप ज़रा भी फ़र्क न पायेंगे।

तुम समयका ठीक ठीक उपयोग करो। उसके चिन्होंको पहचानो। समय-सागरके पास आकर प्यासे न लौटो। श्वास-श्वासमें इस परमानन्द-रसका पान करो। जब चिड़ियोंका झुण्ड हरा-भरा खेत चुन जायगा, तब पछतानेसे कोई फ़ायदा न होगा :—

"दीबो अवसरको भलो, जासों सुधरे काम।
खेती सूखे बरसिबो, घनको कौने काम॥"

असली और नकली मनुष्य

ईश्वर सर्व शक्तिमान है। वह वर्तमान समयका सबसे बड़ा इंजीनियर, गणितज्ञ, वैज्ञानिक, प्रोफेसर और हमारा पिता है। उसकी समस्त रचनायें मौलिक चमत्कारोंसे भरी हैं। उसकी अनन्त लीलायें, अद्भुत कलायें विशाल और अखण्ड हैं। परन्तु मनुष्य—?

मनुष्य ईश्वरकी कृतियोंमें सर्वश्रेष्ठ, होशियार और सुन्दर प्राणी है। वह ईश्वरका प्रतिनिधि और पुत्र है। ईश्वरने उसे प्रचण्ड बुद्धि प्रदान की है। पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाशके तत्वोंसे उसके शरीरकी रचना कर वह स्वयं उसमें आत्माके परमात्मा रूपमें समा रहता है। वहींसे वह मनुष्यके प्रत्येक कार्यकी रिपोर्ट लेता है। वह मनुष्योंका उत्थान करनेके लिये उसपर कृपायें डालता है। उसने मनुष्यमें एक निराला

पृथ्वीपर इसलिये भेजा है कि वह उसकी बनाई हुई समस्त चीज़ोंका रस ले, प्राकृतिक सौंदर्यका आनन्द लूटे, संसारके रहस्य भेदोंको समझे और मानसिक शक्तियों द्वारा अपने भाग्यका स्वयं संचालन करे।

किन्तु मनुष्यकी विचित्रतायें देखिये—वह संसारमें आते ही दो भागोंमें विभक्त हो जाते हैं। एक असली रास्ता चुनता है, दूसरा नकली। दोनों ही अपनी जीवन-नौका संसार-सागरमें खेते हैं; मगर दोनोंमें भारी भेद है।

असली मनुष्य वे हैं, जो अपने अलौकिक जन्म-रहस्य और कर्म-तत्त्वोंको समझ गये हैं। वे सौन्दर्यके पुजारी बनकर भीतरी सुखका आनन्द लूटते हैं और उसके प्रकाशमें ईश्वरीय कलाओंका दर्शन करते हैं। ये विद्याप्रेमी, साफ़ तबीयत, आज़ादी पसन्द, सत्यके अन्वेषक, उदार और सरल हैं। समदर्शी इतने कि संसारके प्रत्येक मज़हबको, हरएक मनुष्यको—एक निगाहसे देखते हैं। ये न शेरको बड़ा मानते हैं, न सियारको छोटा। इनके लिये कुत्ते और हाथीका वजन बराबर है। ये एक ही दिशामें आगे पैर नहीं बढ़ाते; परन्तु हज़ारों दिशाओंमें विद्युत् वेगके समान आगे बढ़ते जाते हैं। ये यदि आज एक वस्तु प्राप्त करनेकी इच्छा करते हैं, तो कल उसी वस्तुकी प्राप्तिका प्रयत्न करते हैं और परसों वह उसे प्राप्त कर लेते हैं। इनकी इच्छायें और प्रयत्न असम्भवको भी सम्भव कर दिखाते हैं।

ईश्वर अपने इन असली प्रतिनिधियोंके वर्तमान तथा भविष्यको सुनहरी किरणोंसे सजाता है और मौके-बेमौके इनकी इतनी आकर्षक सहायता करता है कि लोग देखकर दंग रह जाते हैं।

दूसरे नकली मनुष्य हैं। उन्हें ईश्वरकी ज़रा भी परवा नहीं। ये उसकी सत्तापर बहुत कम विश्वास करते हैं। इनके लिये ईश्वरके क़ानून-क़ायदे फ़िज़ूल हैं। ये ज़रूरतसे ज्यादा घमण्डी, स्वार्थी, झूठे, दूसरोंकी उन्नति देखकर जलनेवाले और क्रोधी हैं। ये चलते तो हैं ज़मीनपर, मगर इनका मिज़ाज सातवें आसमान पर चक्कर काटा करता है। इन्हें मानसिक शक्तियोंका ज़रा भी ज्ञान नहीं, ये अज्ञानसे अन्धे होकर ज़ोर-ज़ोरसे बोलते हैं और कोरी शेख़ी बघारा करते हैं। इनका उद्देश्य और पेशा चोरी, उठाईगीरी, दग़ाबाज़ी और भयानकसे भयानक बुराइयोंसे लबालब भरा हुआ है। ये डाके डालते हैं, स्वार्थके लिये मनुष्योंका ख़ून करते हैं, बड़ेसे बड़े व्यभिचारी और नशेबाज़ हैं। क्रूर कामनाओं और गन्दी अभिलाषाओंसे इनका मन पागल होकर चारों तरफ़ घूमा करता है। ये हृदयके कपटी हैं और ज़बानके मीठे। ईश्वर इन नकली मनुष्योंको मनकी शक्तियों तथा प्राकृतिक घटनाओंके ज़ोरदार इशारोंसे सदा सावधान किया करता है, मगर ये अपनी मस्तीमें इस क़दर चूर रहते हैं कि उस तरफ़ इनका ध्यान ही नहीं जाता। ये अपने दैनिक

कृत्योंमें बराबर बुराइयाँ ग्रहण करते जाते हैं, और रातदिन पाप वृत्तिमे मशगूल रहते हैं।

देखा आपने ? जो असली मनुष्य हैं, वह स्वयं अपने भाग्यके विधाता हैं। मगर जो नकली आदमी हैं, वे भाग्यके हत्यारे, बेवकूफ़, अपराधी और कलंकी हैं !

आप प्रत्येक मनुष्यके चेहरेको ग़ौरसे देखिये। कितने ही आदमी दो-दो तीन-तीन तरहकी शक्लें रखते हैं। किसीका चेहरा सुर्ख़ है, किसीका पीला। कोई दोनों सूरत लिये घूमता है, किसीके चेहरेमें हँसी खिलखिला रही हैं ! प्रत्येक मनुष्य अपना अलग-अलग रंग रखते हैं। इनमें असली और नकली दोनों ही तरहके मनुष्य हैं। चतुराईसे इनका अध्ययन कीजिये। ईश्वर और संसार दोनों ही असली मनुष्योंके ग्राहक हैं। इनके हृदय मन्दिरमें नकली मनुष्योंके लिये कोई स्थान नहीं।

यदि कोई मनुष्य यह दावा करता है कि मैं ईश्वरको प्यार करता हूं—परन्तु व्यवहारमें वह अपने किसी मनुष्य भाईसे घृणा करता है—तो वह झूठा है। क्योंकि जब वह अपने मनुष्य भाईसे, जो कि स्थूल रूपसे दृश्य है, प्यार नहीं कर सकता, तो वह ईश्वरसे, जो कि अदृश्य है, किस तरह प्यार कर सकता है ? ईश्वरका आदेश है कि मुझसे प्यार करनेके लिये अपने भाइयोंसे प्यार करो।

मैं पूछता हूं, इतनी महान आत्माको पाकर आपने क्या

हमारे विचार पवनकी पीठपर सवार होकर उस लोकमें पहुंचते हैं, जिसका हम निर्माण करनेके इच्छुक हैं। यदि आप लक्ष्य या सिद्धान्तको लेकर आगे बढ़ेंगे, तो जिस तरह कमल पानीमें रहकर नहीं भींगता, उसी तरह आपको भी मुसीबतोंकी मूसलाधार वृष्टि न भिगो सकेगी।

फ़रिश्तेसे बढ़कर है इन्सान होना,
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज़ियादा।

कौन कहता है, अयोध्या है—मगर उसमें राम नहीं। समयके चिन्होंको पहचानिये। मनुष्य और ज़मानेको देखिये। भगवान रामचन्द्र आज दिन भी जीवित रहकर करोड़ों स्त्री-पुरुषोंके हृदय-सिंहासनपर राज्य कर रहे हैं। जहाँ हृदयके साथ हृदयका सम्मिलन है, आत्माके साथ आत्माका प्रेमालाप है—वहाँ आज, इस समय भी साँवलिया श्रीकृष्णकी मोहिनी बाँसुरी बज रही है, सरस्वतीकी मधुर वीणा झंकृत हो रही है।

ग़ौरसे चमकते हुये शीशेमें अपना मुंह देखकर सोचिये—"मैं कौन हूं—असली मनुष्य या नकली?"

प्रेमका परिस्तान

यह प्रेमका परिस्तान है !

हाँ, प्रेमका परिस्तान । यह संगमर्मरकी सीढ़ी है—चिकनी, सफेद, साफ और सुन्दर । हम बहुत दूरसे चलकर आ रहे हैं । आइये, ज़रा विश्राम करें, गप-शप लड़ायें और प्रेमके अखंड रस-प्रवाहमें बहें ।

प्रेम ! प्रेम !!

यह वही प्रेम है, जिसमें आकर्षण है, वेदना है, और है अमृत-सी मिठास । इसका एक घूंट पीकर सती सीताने भगवान रामचन्द्रके मुखचन्द्रकी उपासना की थी ; पार्वतीने प्रलयंकर शंकरकी मूर्तिपर मानस-प्रसून चढ़ाये थे ; सावित्रीने सत्यवानके दर्शन किये थे ; रोमियोने जुलियटसे आँखें लड़ाई थीं ; मजनू लैलीपर फिदा हो गया था और फरहाद शीरींपर मर मिटा था ।

संसारका यही सबसे बड़ा सार तत्व है, धर्मकी यही मज़बूत जड़ है । इस पुण्य तपोवनमें आकर मनुष्य-जीवनके

समस्त पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं, शोक-कालिमायें धुल जाती हैं और दुःख-दैन्यके स्थानपर हृदयमें आनन्दका शीतल झरना झरने लगता है।

शक्तिकी इसी सुधा-माधुरीको पीकर महाकवि कालिदासने शकुन्तलाकी रचना की थी; उमरख़य्यामने रुबाइयोंकी दीपमालिका जलाई थी; शेक्सपियर हैमलेटपर मुग्ध हो गये थे और जयदेव गीतगोविन्दकी रसीली बाँसुरी बजानेमें मस्त थे।

प्रेम अनोखा शान्ति-निकेतन है। इसे पाकर नास्तिकोंके मनमें परमात्माके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है। यहाँ पंडित-मूर्ख, अमीर-ग़रीब, छोटे-बड़े, काले-गोरे, ब्राह्मण-शूद्र, पारसी-यहूदी, शिया-सुन्नी, हिन्दू-मुसलमान, अंग्रेज-ईसाई—सब समान हैं। यहाँ जो रामका मतलब है, वही रहीमका। ईसा और मूसामें कोई भेद नहीं। यहाँ जो स्थान महात्मा तुलसीदासका है—वही भवभूति, वेद व्यास, ग़ालिब और ज़ौकका। यहाँ एक ही रस है, एक ही नशा। सब आनन्दविभोर होकर झूमते हैं, एक ही राग अलापते हैं, सबके दिलका एक ही तराना है—प्रेम, मुहब्बत, लभ! उफ़, यहाँ आकर मैं प्रेमका पागल बन गया। क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा!

हाँ, यह प्रेमका परिस्तान है।

यहाँके स्वर्गीय सुखोंको देखकर मन न जाने कैसे-कैसे हो रहा है। यहाँ सब सुन्दर हैं, सब पवित्र। दूसरी जगह

बादशाह होनेकी अपेक्षा यहाँ एक परवाना, एक कीड़ा, एक पतिंगा होना करोड़ दर्जे अच्छा है। यहाँ सबके होंठोंपर हँसी नाच रही है। हृदय-सागरमें प्यारके तूफ़ान लहरा रहे हैं। दुश्मनोंको भी प्यार करनेकी इच्छा होती है।

यहाँ हमारे मन-मन्दिरमें सौभाग्यका दीपक जगमगा उठा है, हृदयाकाशमें चन्द्रमा उदय हो रहा है, मानस-नदीमें झिलमिलाते नक्षत्र नाच उठे हैं, मरु-जीवन सुगन्धित फूलोंसे भर गया है, सौन्दर्य, आँखोंमें सुर्मेकी तरह समा गया है। मैं इस परिस्तानको देखूंगा, जी भरकर देखूंगा, देखते-देखते पागल हो जाऊंगा और रोने लगूंगा। मेरे पास यही कीमती धन है। मैं इसे किसीको न दूंगा। मगर मैं भी कैसा भुलक्कड़ हूँ—क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा!

हाँ, यह प्रेमका परिस्तान है।

यहाँ शौक़ो तमन्नाकी सैर करते हुये महाकवि दाग़ फ़रमाते हैं :—

"मैं तो हर अन्दाज़े माशूक़ानाका दीवाना हूँ,
गुल पे बुलबुल हूँ अगर तो शमापर परवाना हूँ।
जिस पे आशिक़ है ख़ुदा उस शक्लका ज़र्रा हूँ मैं,
वह जिसपर लोट है उस गंजका दाना हूँ मैं।"

उनकी आँखें हर तरफ़की मस्ती बटोर रही हैं। वे कहते हैं :—

"हर रंगमें जलवा है तेरी कुदरतका,
जिस फूलको सूंघता हूं बू तेरी है।"

यहाँ हमारी आँखोंमें प्रेमकी तस्वीरें नाच रही हैं। जिधर देखिये—उधर ही आशिक-माशूकोंकी चहल-पहल, चुहलबाज़ियाँ, नाज़ो नखरे, चोंचले—यहाँ हर वक्त हँसीके फौआरे छूटते हैं, हर समय खुशीकी दरिया बहती है। यहाँ फ़कीर भी मस्त, अमीर भी मस्त। यहाँ न कैद है, न फरियाद। यहाँका ज़र्रा-ज़र्रा आज़ाद है, आबाद है।

इधर परियोंने क़यामतकी खिड़कियोंके पर्दे खोल दिये, उधर हुस्नके गुलजार खिल उठे। मजलिसोंकी तैयारियाँ हो रही हैं। यहाँ मय भी है, मीना भी है। साग़िर भी है, साक़ी भी है। अजीब मयख़ाना है यह। यहाँकी नशीली लड़ती हुई आँखोंमें ऐयारी और तिलिस्मका मज़ा है। यहाँ तो यह कहनेका जी चाहता है:—

"फ़ाख़ता हूं गुल-सी सूरतका,
सर्वे आज़ाद हूं मुहब्बतका।"

हम लोग बाहरी दुनियामें परस्पर अपरिचित थे, किन्तु यहाँ आते ही हम एक दूसरेके प्रियपात्र बन गये। यहाँके स्त्री-पुरुषोंमें देवताओं और ऋषियोंकी आभा झलक रही है। यहाँकी समस्त चीज़ोंको मैं हृदयके ख़ज़ानेमें बटोरकर रक्खूंगा। वे स्वर्गीय हैं, सुन्दर हैं, कोमल और विचित्र हैं।

जीमें आता है, यहाँ वसंत-माधुरीके साथ कामदेव बनकर

होली खेलूँ। मुझमें आकर्षण शक्ति जागृत हो रही है। उफ़, मैं कितना पागल, दीवाना और ख़ब्ती हूं। आपसे क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा!

हाँ, यह प्रेमका परिस्तान है।

एक दिन इसी परिस्तानमें आकर मैं प्रेमका पागल बन गया था। उस दिन आजकी तरह न मुझमें मस्ती थी, न मुहब्बतका नशा। उन दिनों मैं निराशाके तूफ़ानमें टक्कर खा रहा था। मेरी ज़िन्दगी मुसीबतोंका पहाड़ बन गई थी। मुझे संसारसे घृणा थी, मनुष्योंसे नफ़रत। मेरी आँखोंके सामने एक-एक मनुष्यका चेहरा भूत, जिन्न और प्रेतकी तरह चल फिर रहा था। मेरे जीवनके तार टूटकर छिन्न भिन्न हो गये थे। मैं आत्महत्याके लिये ज़हर ढूंढ़ता फिरता था।

एकाएक न मालूम किस दैवी शक्तिने, किस ईश्वरीय प्रेरणाने किस उच्छ्वासकी गुप्त हलचलने मुझे इस परिस्तानकी प्यारी सीढ़ीपर ला पटका। मैंने देखा—इस सीढ़ीपर एक क़ीमती हीरा चमक रहा है। आँखोंमें लालच और दिलमें प्रेमका महासागर उमड़ पड़ा। मैंने झुककर उसे उठाया और कंगालके धनकी तरह उसे दिलकी मज़बूत तिजोरीमें छुपाकर रख लिया। बस, फिर क्या था?—

"थे कि क़तरे दरिया थे, जब तक [illegible] सागरमें थे।
मेरे होंठों तक पहुंचना था कि [illegible] हो गये।"

देखते - देखते घृणाके अंधकारमय आकाशमें प्रेमका इन्द्रधनुष उदय हो गया। निराशाके रहस्यमय पर्देको भेदकर आशाके रंग-बिरंगे आलोक जगमगा उठे। प्राण-कुंजमें कोकिलायें कूकने लगीं, दिलमें गंगा-जमुनाकी पवित्र तरंगें उछलने लगीं, कानोंमें दिव्य संगीत हिलोरें लेने लगा, हृदयमें जैसे किसीने अमृत उँडेल दिया हो। मनमें अमर होनेकी इच्छा उत्पन्न हो गई। जीमें आया कि पपीहा बनकर उड़ जाऊँ और नीले आकाशके एक छोरसे दूसरे छोर तक प्रेम-संगीतका मधुर राग अलापूं।

उस समय मेरी सारी मलिनता धुल गई, अपवित्रता नष्ट हो गई। मैं उस रत्नको पाकर सब कुछ पा गया, मेरा मनुष्य जीवन धन्य हो गया। किन्तु मैं भी कैसा रमता योगी और बहता पानी हूं—आपसे क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा!

हाँ, यह प्रेमका परिस्तान है।

यहां किसीको मुस्कराते देखकर जली हुई खेतियां सरसब्ज हो जाती हैं, आसमानमें बरसातकी घटायें घिर उठती हैं। बहारोंके ख़जाने बँटने लगते हैं। मयकी प्यालियाँ नई दुलहिनकी तरह दिलमें तासीरे इश्क़ पैदा करती हैं। हमें ठण्डी आहोंको ज़रूरतसे ज्यादा गरमानेकी ज़रूरत है।

आइये, प्रेमके मयख़ानेमें आइये। यहाँ हुस्नकी बिजलियाँ

चमक रही है, रूपके ख़ज़ाने जगमगा रहे हैं, रिन्दोंका मेला लगा है। आइये, इन्हींमें हम भी शामिल हो जायँ और जी भरकर प्रेमके फेनिल प्याले पियें।

आज साक़ी वादये ख़ुश रंग दे जी खोलकर,
कल ख़ुदा जाने कहाँ जाये घटा बरसातकी।

आइये, यहाँ आतिशे रुख़सारपर आँखें सककर मुहब्बतके प्याले चढ़ायें। एक दो नहीं—सैंकड़ों, हजारों, करोड़ों! हमारे पैमानेमें माशूककी अँगड़ाइयोंका लुत्फ़ है। एक-एक पैमानेमें एक-एक तूफ़ान बन्द है। यहाँ मौत भी मस्तीसे ज़िन्दगीके मज़े ले रही है। यहाँकी ज़मींपर लोग आसमान बनकर चलते हैं।

नज़र आता है आलम हुस्नका एक-एक ज़र्रेमें,
ख़ुदाने बिजलियाँ मिट्टीमें भर दी हैं क़यामतकी।

मगर मैं भी कैसा भुलक्कड़ हूँ, फिर भूल गया। आपसे क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा।

हाँ, यह प्रेमका परिस्तान है।

आइये, हम नशेकी झोंकमें झूमते हुये हुस्नके बाज़ारमें घूमें। यहाँ असंख्य सुन्दर चीज़ें हैं। उफ़, हमपर मोहिनी मंत्र चल रहे हैं। हम ढेरका ढेर हुस्न ख़रीदेंगे, कोई जवानीका सौदा करेंगे। यहाँ सैंकड़ों, हज़ारों, लाखों रत्न हैं। करोड़ों चाँदके टुकड़े, अरबों नए यौवन और आनन्द!

सब इस बाज़ारमें बिक रहे हैं—बिना मूल्य । यहाँ आकाशका चन्द्रमा ख़रीद लीजिये, प्रभातकी सुनहरी किरणें मोल ले लीजिये, तारोंको झोलीमें भर लीजिये और निगाहके तीरोंसे मुहब्बतके गुलामोंको घायल कर डालिये ।

यहाँ जिस रूपको हम प्यार करते हैं, वह रूप इस संसारका नहीं । जहाँ शोककी घटायें घिरती हैं, चिन्ताकी चितायें जलती हैं, जहां अभिमान, स्वार्थ, छल, कपटका दौरदौरा है, जहाँ मनुष्यको मनुष्य खा रहे हैं, जहाँ अपवित्रता है, पाप है—यह रूप उस संसारका नहीं । यह रूप किसी दूसरे लोकसे, किसी ख़ास चीज़की खोजमे रास्ता भूलकर हमारे सामने जादूकी तरह चमक उठा है । इसीलिये कहता हूं—प्रेम ! तुम धन्य हो । देवता हो । तुममें ईश्वरको सत्ताका आभास है ।

प्रेम ! प्रेम !

रूखा सरवर त्याग कर, हँस कहीं ना जाय ।
पहली प्रीति बिसारके, पत्थर चुन चुन खाय ॥

प्रिय मित्र, जब मेरी मृत्यु हो जाय—तब तुम मुझे प्रेमके परिस्तानकी धूलका एक कण बनाकर उस रास्तेमें फेंक देना, जहाँ तुम्हारे चरण चलते हों । मैं तुम्हारी प्रभुतामें अपनेको मो दूंगा—विलीन कर दूंगा !

मेरे जीवनका एकमात्र आधार है—प्रेम !

ख़तरनाक दुश्मन

मनुष्य जीवन देवताओंकी क़तारमें बैठने लायक होता, यदि उसमें कुछ ख़तरनाक दुश्मन खंजर लेकर न बैठे होते।

यह कौन हैं? मैं कहूंगा—ईर्ष्या, क्रोध, घृणा, घमण्ड, सन्देह और निराशा।

इनके अलग-अलग रूप देखिये और सावधान रहिये।

ईर्ष्या

ईर्ष्याकी लाल लपटें ज्वालासे अधिक उग्र और क्रान्तिकारिणी हैं। दूसरोंको नीचा दिखाने, दूसरोंकी उन्नतिसे कुढ़ते रहनेकी आदतसे मनुष्य अपने जीवनको आप जलाता है। क्या इसकी ज़रूरत है?

राजा भोजके यहाँ कुछ लोग एक जर्जर रोगीको पकड़ लाये। राजाने उससे पूछा—"तुम्हारी यह दशा क्यों है?" रोगीने कहा—"बचपनमें हम तुम एक साथ पढ़ते थे। तुम्हारी

योग्यता और बुद्धिमानीसे मैं ईर्ष्या करता था। यह ईर्ष्या मुझमें उस समय और भी बढ़ गई, जब तुम राजसिंहासनपर बैठ गये। आज जब मैं तुम्हारा इतना वैभव देखता हूं, तब बदनमें आग लग जाती है।''

राजा भोजने उसे रहनेके लिये एक बढ़िया मकान तथा सेवाके लिये कई सेवक दिये। वह हाथी घोड़ेपर चलने लगा और एक परमा सुन्दरीसे उसकी शादी भी हो गई। कुछ दिनों बाद राजाने उसे बुलाकर देखा, तो वह पहले ही की तरह जर्जर और रोगी था। कारण पूछनेपर उसने कहा—"मेरे पास सब सुख-सामग्री है, सिर्फ अधिकारोंसे वंचित हूं।"

राजाने उसे ऊँचे पदपर नियुक्त कर उसकी यह इच्छा भी पूरी कर दी। पर इससे भी उसकी दशा न बदली। उसने कहा—"मेरी हालत उस समय पलटेगी, जब मैं उज्जैनके राज-सिंहासनपर बैठूँगा।"

राजाने समझ लिया, ईर्ष्याके कारण इसका जीवित रहना कठिन है। रक्षाका अब कोई उपाय नहीं। अन्तमें हुआ भी वही—वह मनुष्य ईर्ष्याके कारण कुढ़-कुढ़कर मर गया!

संसारमें इस तरह कुढ़-कुढ़कर मरनेवालोंकी संख्या कम नहीं है। देहातोंमें ईर्ष्या-द्वेषका बोलबाला है। शहरोंमें, बड़े-बड़े आफिसोंमें, होटलोंमे, फिल्म कम्पनियोंमें, कल कारख़ानोंमें, ईर्ष्याकी लबालब छुरियाँ चल रही हैं। मनुष्य

मनुष्यको खाये जा रहे हैं। किसीने दो पैसे कमा लिये—पड़ोसी जलता तवा बन गया। किसीने नौकरीमें तरक्की कर ली—दूसरोंका खाना-पीना हराम हो गया। कोई ऊँचे चढ़ गया, तो लोग द्वेषकी लाठियाँ लेकर दौड़े—इसकी ज़िन्दगी ख़त्म कर दो।

कैसी भयानक मूर्खतायें हैं ये। क्या आप ऐसा जीवन पसन्द करते है? याद रखिये, ईर्ष्यासे हम अपनी क्षुद्रताका परिचय देते है; किन्तु अपनी इष्ट-सिद्धि नहीं कर पाते। कभी कभी जिससे हम ईर्ष्या करते है—उलटे उसीको हमारी ईर्ष्यासे लाभ हो जाता हैं।

हाँ, ईर्ष्या न होते हुये भी कभी-कभी हमें दूसरोंकी ईर्ष्याका शिकार बन जाना पड़ता है। किन्तु यदि हम जीवनके असली सुखको समझ लें, हृदयकी शान्तिको परख लें, आडम्बरोंसे दूर रहें—तब कोई भी ईर्ष्या हमारा पीछा नहीं कर सकती। नूरजहाँने ऐसे ही ईर्ष्यापूर्ण विषाक्त वायुमंडलसे ऊबकर अपने प्रथम प्रियतम शेरखां से कहा था—"चलो नाथ! हम इस हिंसापूर्ण संसारको छोड़कर भाग चलें; बहुत दूरके किसी जंगली गाँवमें जाकर किसानोंकी तरह अपना जीवन व्यतीत करें, सम्राट जहांगीरका डाह इतने नीचे उतरकर हम लोगोंका पीछा न कर सकेगा।

ईर्ष्या वह काली नागिन है, जो समस्त पृथ्वीमंडलमें अपनी

ज़हरीली फुफकारें छोड़ रही है। यदि आप ग़ौर कर देखें, तो आपको साफ मालूम हो जायगा कि यह ग़लतफहमियोंकी एक गर्म हवा है, जो शरीरके अन्दर 'लू' की तरह चलती है और मानसिक शक्तियोंको झुलसाकर राख बना डालती है।

इस 'लू' ने लाखके घर ख़ाकमें मिला दिये। तुम दूसरोंकी बढ़ती देखकर कभी न जलो। जो लोग ईर्ष्याकी चपेटमें पड़ जाते हैं, वह अपने घरमें अपने ही चिराग़से आग लगाते हैं। ख़ुद शीशेकी झोपड़ीमें बैठकर दूसरोंके महलपर पत्थर फेंकते हैं।

तुम इसकी परवा मत करो कि दूसरे तुम्हें देखकर जलते हैं। तुम स्वयं सोचो कि तुम क्या हो। जब तक तुम आत्म-विश्वासी न बनोगे, तब तक दुनियामें कुछ न कर सकोगे।

क्रोध

क्रोध भी क्या अजीब 'शै' है। यह मनुष्यताकी सारी शक्तिको छीनकर पशुताके हाथोंमे दे देता है। उस समय मनुष्य बाघसे ज्यादा भयानक और साँपसे ज्यादा ज़हरीला हो जाता है। गीतामे भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं:—

"क्रोधसे अविचार होता है। अविचारसे भ्रम, भ्रमसे बुद्धि-नाश और बुद्धिनाशसे सर्वनाश होता है।"

क्रोध याने गुस्सा वह शैतान है, जो मनुष्य-शरीरके कोने

कोनेमें ताण्डव नृत्य किया करता है। उसकी रक्तवर्ण आँखें मौक़ेको ताड़ती हैं। जहाँ आपके दिमाग़का पारा गर्म हुआ, यह आपके सरपर भूतकी तरह चढ़ बैठा। अब आप काँपते हैं, मित्रोंका अपमान करते हैं, दोस्तोंका गला दबाते हैं, मनुष्योंको गालियाँ देते हैं और न-जाने क्या-क्या अनर्थ कर बैठते हैं। किसीने ग़लती की—आप आँखें लाल-पीली करने लगे। आनन्द रूपी कपूरके टुकड़े-टुकड़े कर उसे ऊसरमें बो दिया, देवतुल्य मानव जीवनको नष्ट कर डाला, मनमें अप्रसन्नताओंका विष भर गया—सारी आकर्षण-शक्ति नष्ट हो गई।

यह सब सर्वनाशकी बातें हैं।

क्रोध वास्तवमें हमारे हृदय-सागरका प्रचण्ड तूफ़ान है। यदि आप इसपर विजय प्राप्त करना चाहते हैं; तो आत्मबल और साहसके साथ जीवनकी किश्तीपर खड़े रहिये। क्रोधके असंख्य झोंके आयेंगे और आपसे टकराकर हवामें विलीन हो जायँगे। किन्तु जहाँ आप इसकी चपेटमें पड़े—आपका संसार मुसीबतोंमें पलट जायगा। सरपर विपत्तियोंके बादल मँडराने लगेंगे और आप स्वयं पैनी कुल्हाड़ियोंसे अपने पैर काटनेकी कोशिश करेंगे।

क्रोध एक भूल है। यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसे क्रोधकी प्रत्येक भूल कुछ न कुछ सिखला देती है। ठोकरें मारनेसे ज़मीनसे सिर्फ़ धूल उड़ती है—खेती नहीं उग सकती।

मैं पूछता हूं, आप बुद्धिमान होकर भी क्रोधकी तरंगोंमें क्यों बहते हैं ? किसलिये मुसीबतोंसे नाता जोड़ते हैं ? आपको क्रुद्ध देखकर जीवनके सारे आनन्द, यौवनके समस्त विज्ञान, सफलताओंकी तमाम ऋद्धि-सिद्धियाँ उलटे पैरों लौट जाती हैं। उनके मनमे क्रोधी मनुष्यकी कोई क़ीमत नहीं, वे शान्त मनुष्योंको प्यार करती हैं—प्रेमियोंके कण्ठमें वरमाला पहनाती हैं।

तुम क्रोधको पतंगकी तरह प्रेमकी आँधियोंमें उड़-उड़कर धक्के खाने दो—तुम्हारी सब आफतें कट जायँगी। यदि तुम्हारी ज़िन्दगीमें आनन्दोंकी शीतल बयार नहीं बहती, तो मैं कहूंगा—तुम महामूर्ख हो। तुम्हारी ज़िन्दगीमे कोई चमक नहीं पैदा हो सकती।

घृणा

मैं ब्राह्मण हूं; अछूतोंसे घृणा करता हूं। मैं बंगाली हूं; मारवाड़ियों, खत्रियों और देशवालियोंसे नफ़रत करता हूं। मैं तीसमार खां हूं; हिन्दुओंकी दूकानसे कोई सौदा नहीं ख़रीदता। मैं गोभक्त हूं; मुसलमानोंको देखकर घृणासे मुंह फेर लेता हूं। मेरी जवानीमें चन्द्रमाकी चमक है; वृद्धोंको देखता हूं और व्यंगसे खिलखिलाकर हँस पड़ता हूं।

घृणाको बाज़ारमें छोटे-बड़ेका कोई ख़्याल नहीं। यहाँ

हीरा और पत्थर एक भाव बिकते हैं; जो कीमत फूलोंकी है, वही बबूलके काँटोंको।

यह कैसी बेवकूफ़ी है, कैसे गन्दे ख़यालात हैं। घृणा अप्राकृतिक हलचलोंकी मनहूस बर्बरता है। जानवरोंमें यह वृत्ति नहीं पाई जाती। मगर मनुष्योंको देखिये—वह जानवरोंसे ज्यादा बुद्धिमान, चिड़ियोंसे ज्यादा उड़नेवाले, संगीतसे ज्यादा मीठे तथा वेदोंसे ज्यादा विद्वान हैं। उनके हृदय टटोलिये, मनकी थाह लीजिये—घृणाके सैकड़ों घोंघे आपके हाथ लगेंगे।

मैं कहता हूं—आप घृणासे दूर भागिये—बहुत दूर—प्रेमके तूफ़ानपर चढ़कर भागिये। ख़ूबसूरत चीज़ें देखिये और मानसिक शक्तियोंको कब्ज़ेमें कीजिये।

यदि आप ऐसा न कर सकेंगे और दिमाग़में घृणाकी गन्दगी भरे रहेंगे, तो आपके शरीरकी समस्त मैशीनरियोंके पुर्ज़े टूट जायँगे। चुम्बक शक्ति नष्ट हो जायगी। आप सरपर पापका बोझ लादे दर-ब-दर की ठोकरें खाते फिरेंगे। उस समय आपसे किसीको सहानुभूति न होगी। कोई आपका साथ न देगा।

घृणा घृणित बर्बरता है। यह उन्हीं मनुष्योंके दिलमें टिक सकती है, जो शरीरके दुर्बल, आलसी और गँवार हैं।

तुम पापियोंसे नहीं, उनके पापसे घृणा करो। क्योंकि पापी इन्सान हैं—पाप शैतान!

तुम हृदयमे 'विलपावर' भरो और उसका एक-एक टुकड़ा ग़रीब, दीन दुखी भाइयोंमे बाँट दो। वे बहुत भूखे है। घृणासे उनपर अत्याचार न करो, मुसीबतोंके पहाड़ न ढाओ। वे ख़ुद अन्धकारमें लोटते हुये विपत्तियोंके शिकार हैं।

घमंड

मैं एक ऐसे आदमीको जानता हूँ, जिसका वृद्ध पिता कई लाख रुपयेके कर्जभारसे दबकर दर बदरकी ठोकरें खा रहा है। उसके नालायक लड़केने बहुत सी दौलत रण्डीबाज़ीमें फूंक दी। सैकड़ों मन शराब गलेके नीचे उतार गया। इसकी आंखें सुर्ख है और मुँह गोल। इसे मैंने मनुष्योंपर अत्याचार करते देखा है। यह बड़ा घमण्डी और शरारती है। सीधे मुँह किसीसे बात भी नहीं करता।

मैं ही क्या? आप, आपके सैकड़ो दोस्तोंने, समस्त पृथ्वी मंडलके भाइयोने ऐसे बहुतसे घमण्डी मनुष्य देखे होंगे—बल्कि बहुत सी बातोंमे इससे भी ज्यादा बढ़ बढ़ कर।

घमण्डके नशेमे चूर होकर आज हम किसी भाईको पैरोंसे कुचल डालते है। किन्तु कौन जाने? कल ऐसा दिन भी आ सकता है, जब हमपर एक कमज़ोर बच्चा भी दुलत्तियां लगाने लगे और हमे उसके मुक़ाबलेमे खड़े रहना मुश्किल हो जाय। अहंकार क्यो? अहंकारने महा दार्शनिक रावणको मिट्टीमें मिला

दिया। शक्तिशाली कंसकी खोपड़ी चूर-चूर कर दी। अभिमानी दुर्योधन इसी प्रवाहमे पड़कर अन्तर्ध्यान हो गया। फिर हम आप और हमारे दोस्त किस खेतको मूली हैं?

मनुष्यके लिये विद्याका अहंकार, प्रभुताका अहंकार, धन और सौंदर्यका अहंकार, ज्ञान तथा प्रतिभाका अहंकार—सब व्यर्थ है। दुनियामें भाग्यको नष्ट करनेवाले दो सबसे बड़े कारण हैं—घृणा और घमंड। परमात्मा बढ़े-चढ़े घमंडी साम्राज्योंसे मुख फेर लेता है, किन्तु सरलता और सादगीसे भरे हुये छोटे-छोटे फूलोंसे कभी खिन्न नहीं होता। दूसरोंको लाशोंपर महल खड़ा करनेके बदले उन्हें अपने कन्धेपर बिठाना मनुष्यका मुख्य धर्म है।

आप धनी हैं, ठीक है। ऊँचे महलोंमे नवाबज़ादोंकी तरह ऐयाशी कीजिये—मगर ग़रीबोंकी झोपड़ियोंमें आग न लगाइये। आपके पास मोटरें हैं, आरामसे हवाखोरी कीजिये—मगर पैदल चलने वालोंपर पेट्रोलका धुआँ न छोड़िये। आप ग़रीब हैं, चुपचाप अपना काम कीजिये—मगर अमीरोंके वैभवपर विद्रोहकी आहें न छोड़िये। अमीर आपके बड़े भाई हैं। आप रास्तेकी फुटपाथोंपर आरामसे मीठी नींद सोते हैं—वह मखमली बिछौने पर भी करवटें बदलते रहते हैं। कुछ सोचिये, कुछ समझिये। मनुष्यतामे कैसा घमण्ड, कैसा द्वेष, कैसी घृणा?

मनुष्य जीवन एक पहेली है—एक नाटक। उसमें सभी तरहकी हलचल होती हैं। उन हलचलोंकी शक्ल क्या है? इसपर

गंभीरता पूर्वक विचार कीजिये। फरिश्ता होना आसान है, इन्सान होना मुश्किल। आदमी वही है। जो घमण्डसे कोसों दूर है। मनुष्य वही है, जिसमें मनुष्यता है।

सन्देह

मनुष्य जीवन मधुर संगीत है। जिसका राग है प्रेम! यह प्रेम देह और मनको अनन्त तृप्ति प्रदान करता है, यदि इस प्रेममे राहु जैसी कोई चीज़ है, तो वह है सन्देह। सन्देहसे जीवन-माधुर्य सूखकर अग्निदाहका भयानक नर्क कुण्ड वन जाता हैं।

मुझसे एक बार एक नवयुवतीने पूछा—"स्वामीके प्रति मेरे आनन्दका नशा इतना शीघ्र क्यों उतर गया? हम लोग कलह, विरोध और गन्दी गालियोंके फेरमे क्यों फँस गये? मनमें ज़रा भी शान्ति और सुख नहीं। स्वास्थ्य दुवल हो गया है और मुझे ऐसा जान पड़ता है, मानो मेरी समस्त दुनिया दुख और निराशासे भर गई है।"

मैंने पूछा—"क्या तुम्हें अपने स्वामीके प्रति सन्देह है?"

उसने कहा—"जी हाँ, वह अकसर रातको ग़ायब रहते हैं। मुझे शक है कि वह किसी दूसरी स्त्रीसे प्रेम करने लग गये हैं।"

मैंने कहा—"तुम इस सन्देहको प्रेमरूपी मोहन मन्त्रसे जीतो! तुम जितना ही उन्हें प्यार करोगी, उतना ही तुम्हें फायदा होगा। यदि तुम्हारे स्वामी सैकड़ों स्त्रियोंसे भी प्रेम करने लगें, तो भी

वह तुम्हारे प्रेमको पराजित न कर सकेंगे। तुम अपनेको पहचानो—प्रेमकी उपासना करो।"

उस नवयुवतीने सच्चे दिलसे स्वामीपर अपने प्रेमका प्रदर्शन शुरू किया। मैंने देखा—दो महीनेके अन्दर उसका चेहरा गुलाबके फूलकी तरह खिल उठा है और उसकी निराश दुनियामे प्रेमके सुनहरे दीपक जगमगा उठे हैं।

यह है प्रेमका तत्त्व! यदि तुम प्रेमको अच्छी तरह न समझ सकोगे, तो सन्देहके काँटे तुम्हारे शरीरको चलनी बना डालेंगे।

सन्देहकी भावनायें मनुष्यमे उस समय जाग्रत होती हैं, जब हमारे प्रति हमारे प्रेमीके मनमे तुच्छताओं और नीचताओंके बीज उगने लगते हैं। हम यह देखकर जल उठते हैं कि हमारा प्रेमी हमें ठुकराकर दूसरेकी प्रशंसा कर रहा है। हम उसकी नज़रोंमें छोटे हैं। यह मूर्खता भरी चिन्तायें हमारे मनमें सन्देह उत्पन्न करती हैं और हम हिंसाके मैदानमें उतरकर संहारलीला आरम्भ कर देते हैं, बेहूदी बातें बकते हैं और कलहकी मशालसे मनुष्योंका मन जलाया करते हैं। इस तरह हम अपने जीवनको कमज़ोर ही नहीं बनाते, बल्कि जिसे प्यार करते हैं, जिसपर जान देनेको तैयार रहते हैं, उसे अनंत यंत्रणाओंसे जर्जरित कर डालते हैं।

सन्देह कैसा ख़तरनाक ज़हर है? हम जिसपर सन्देह करते हैं, उसकी प्रत्येक बातमें, प्रत्येक कार्यमें, हमें त्रुटियाँ दिखाई देती हैं। उस समय उस मनुष्यके प्रति हमें ऐसा जान पड़ता है, जैसे

यह आदमी हमें प्रत्येक बातमें धोखा दे रहा है, झूठ बोल रहा है, और हमारे विरुद्ध षड्यंत्र कर रहा है! हम उसकी प्रत्येक नज़रको, उसके प्रत्येक आचरणको अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं। यह क्या कुछ कम ज्वाला है?

मान लीजिये अपनी पत्नीके प्रति हमें संदेह उत्पन्न हो गया, तो पत्नी चाहे जैसा सुन्दर शृङ्गार करे, चाहे जैसे क़ीमती गहने-कपड़े पहने, हमारे मनमें फौरन इस बातकी ज्वाला जाग उठेगी कि उसका यह शृङ्गार हमारे प्रेम-प्रदर्शनके लिये नहीं, परपुरुषको रिझानेका कोरा आडम्बर है। उस समय उसकी मुस्कराहट हमें ज़हर मालूम होती है, हम उसकी प्रसन्नताओंसे जल-भुनकर ख़ाक हो जाते हैं।

सन्देहके इस भयानक ज़हरसे कितनी ही स्त्रियोंके पतियोंने उन्हें व्यभिचारिणी क़रार देकर उनका ख़ून कर डाला। सन्देहके इस भीषण पापने कितने ही मित्रोंको एक दूसरेसे अलग कर दिया। सन्देहकी इस धधकती ज्वालाने कितने ही निरपराध मनुष्योंको अपराधी ठहराकर फाँसीके तख्तेपर लटका दिया। उफ़, सन्देहकी भावनायें कितनी भीषण, निष्ठुर और निर्दय होती हैं!

आप दोनों ही हालतोंमें दौड़ते हैं। दोनों ही हालतोंमें आप तेज़ दौड़ना चाहते हैं, अपनी मंज़िल जल्दीसे जल्दी तय करना चाहते हैं। लेकिन आपके दिल और दिमाग़की हालत दोनों हालतोंमें एक नहीं रहती। पहली हालतमें आपके दिलमें कोई सन्देह रहता है। यह डर ही—यह शक ही आपको ज़मीनपर पटक देता है, यह शुबहा ही आपके पैरोंको तोड़ देती है। शक-शुबहाका आदमी कभी मुश्किलों और मुसीबतोंका सामना नहीं कर सकता। एक रोड़ा उसकी सारी तेज़ी और मज़बूतीको ख़त्म कर डालता है।

तुम अपनी आँखोंमें प्रेम, शान्ति, सौन्दर्य और गम्भीरताका भण्डार खोल दो। हमेशा सावधान रहो। जहाँ तुम्हारे मनमें सन्देहका पौदा उगने लगे—तुम उसे निर्दय हाथोंसे तोड़-मरोड़ कर फेंक दो। पूर्ण शक्तियोंसे मनके साथ युद्ध करो। अपनेको कभी कमज़ोर या तुच्छ न समझो। यदि तुम सन्देहकी तुच्छताको दूर नहीं कर सकते, तो मनुष्योंका साथ छोड़कर सर्वस्व त्याग दो और किसी एकान्त जंगलमें बैठकर धूनी रमाओ। तुम्हारी जय होगी—जयजयकार होगी।

निराशा

एक बंगाली कलाकारका नौजवान लड़का ज़हर खाकर मर गया—वह परीक्षामें फेल हो गया था!

आये दिन अख़बारोंमें रोज़ ही ऐसी शोचनीय ख़बरें पढ़ी जाती हैं। एक आदमीने बेकारीसे तंग आकर आत्महत्या कर ली। दूसरा गंगामें डूब गया—तीसरेने गलेमें फाँसी लगा ली। क्यों ? इसकी क्या वजह है ?

निराशा इन क़ीमती मनुष्योंका समस्त जीवन-रस पी गई थी। यह बेचारे रेगिस्तानके मुरझाये फूल हो रहे थे !

हमारे वे हज़ारों भाई, जिनकी ज़िन्दगीका प्याला उदासी और तकलीफोंके ख़ूनसे लबालब भर गया था ; हमारे वे हज़ारों दोस्त, जो निराशाके भैरवी नृत्यमें चकनाचूर हो गये थे—हमेशाके लिये जीवित हो जाते, यदि वे मनुष्य-जीवनकी क़ीमत समझते, अपनेको पहचानते और आशाकी रोशनीमें संसारके रहस्योंको समझनेकी कोशिश करते।

निराशासे आपको ज़िन्दगी अँधेरी, भारी और दबी मालूम होती है। यदि आप इस पैशाचिक वृत्तिको ध्यान और तर्कसे अध्ययन करें, तो आपको मालूम हो जायगा कि निराशा आलस्यकी सनसनाहटके सिवा कुछ नहीं है। इसके प्रचण्ड प्रवाहमे पड़कर बड़े-बड़े बहादुर पतनके महागर्तमें डूब गये। यह मनुष्यके फेफड़ेको ज़ोरोंसे दबोचकर झकझोरती है—वे बेचारे घबराहट तथा बेचैनीसे भयानक पाप कर बैठते हैं। आप इस पागलिनीको कभी दिलमे जगह न दीजिये। फूलोंपर नाचते हुए भँवरोंकी तरफ देखिये। दीपशिखापर कूद पड़ते हुये

परवानोंको सोचिये। यह सब एक ही मन्त्रका जाप करते हैं—आशा! आशा! प्यारी आशा!

आशा मनुष्य जीवनकी वह पतवार है, जो निराशाके तूफानमें फँसी हुई जीवन नइयाको किनारे खे ले जाती है। आशाका दूसरा नाम ज़िन्दगी है और ज़िन्दगीका दूसरा नाम आशा है।

आप निराश जीवन उद्यानमें इन्हीं भावोंके फूल खिलने दीजिये। सांसारिक सुखों और मनुष्योंसे दिलचस्पी बढ़ाइये। निराशाकी डालियाँ पतझड़की तरह टूटकर पृथ्वीके अनन्त गर्भमें ग़ायब हो जायँगी। सोचिये, समझिये, देखिये।

— सफलताका रहस्य —

यदि आप इन ख़तरनाक दुश्मनोंकी लड़ाईमें फतह पा जाते हैं, तो आपकी जयजयकार है। यदि हारते हैं, तो दुनियामें आपके लिये कोई जगह नहीं। इनकी संगतसे, इनके फ़ायदेसे, आप बालूकी दीवालें उठा रहे हैं। यह दीवालें एक दिन आपके ही ऊपर भहराकर गिर पड़ेंगी। आपकी ज़िन्दगी चकनाचूर हो जायगी—जिसे संसारके छोटे-बड़े राहगीर धूल समझकर अपने पैरोंसे कुचलते, रौंदते, मुस्कराते आगे बढ़ते चले जायँगे। उस समय उनके दिलमें आपके आँसुओंकी कोई क़ीमत न होगी। वह बड़े बेदर्द, बेवफ़ा और ज़ालिम होंगे।

बोलनेका तरीक़ा

एक सौंदर्य प्रेमीने अपने रंगीले दोस्तसे पूछा—"उसकी आखें बहुत सुन्दर हैं। तुम्हारे ऊपर उसका कैसा प्रभाव पड़ा?"

दोस्तने कहा—"आँखोंसे अधिक उसका मुँह चलता है, इसलिये मुझपर उसके बोलनेका अधिक असर पड़ा।"

सचमुच वाक्यशक्ति आकर्षक कला है। यह एक दूसरे मनुष्यके विचारों और सिद्धान्तोंका आदान-प्रदान है। आपके चेहरेमें चाहे कितनाही सौंदर्य और जादू क्यों न हो, किन्तु बोलीमे जो जादू है—उसे रूपका जादू नहीं पा सकता। कोयलका रूप भद्दा है, मगर हर आदमी उसकी बोलीका आशिक है। गधेका रेंकना या ऊँटका बलबलाना कोई नहीं पसन्द करता। परन्तु तोता-मैनाको सभी प्यार करते हैं। क्यों और किस-लिये?—उनकी बोलीमे आकर्षण और माधुर्य है।

रूपका जादू प्रकृति देती है, किन्तु बोलीका जादू मनुष्यके हाथमे है। बोलते समय ऐसा मालूम होना चाहिये, मानो फूल झड़ रहे हैं। एक उर्दूके शायर फ़रमाते हैं:—

"इंशाको चाहिये कि न बोले किसीसे सख्त्।
इस वास्ते ज़ुबांमें कोई हड्डियाँ नहीं!"

मीठी बोली आपको ज़िन्दा करनेवाली ताकत है। बचपनमें आपकी माताने अपने दूधसे आपकी ज़बान धोई है—मीठी बात करनेके लिये। मीठी बोली आपके दिमाग़में मौलिकता और प्रतिभाका चमत्कार फैलाती है, आपके मनको ऊँचा उठाती है—

"जीभि जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै;
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै।
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नर्क दिखावै;
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओठ एकत्र करि, बांट सहारे तोलिये।
बैताल कहै विक्रम सुनो, जीभि सँभारे बोलिये॥"

दुनियाका हर आदमी मीठी और कड़वी ज़बानका स्वाद जानता है। ज़बान सब कुछ कर सकती है। वह मनुष्यके व्यक्तित्वकी सबसे बड़ी संचालन शक्ति है।

संसारमें आज सैकड़ों-हज़ारों व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें बोलनेका तरीक़ा नहीं मालूम। उन्हें इस बातका पता तक नहीं कि अपनेमें आकर्षण बढ़ानेके लिये हम किस तरहकी ज़बान बोलें। वह बोलते इस तरह हैं, जैसे लाठी मार रहे हों। वे अपनी बोलीमें साँप और बिच्छू जैसे ज़हरीले जानवरोंकी सृष्टि करते हैं, जो दूसरोंको काट खाते हैं, डंक मार देते हैं। ऐसे विषधर

आदमी अपने पैरोंमें आप कुल्हाड़ी मारते हैं और मनुष्य जीवनको सर्वनाशकी भट्ठीमें झोंकते हैं :—

"भले बुरे सब एकसों जौ लौं बोलत नाँहि।
जानि परतु है काक पिक ऋतु बसंतके माँहि॥"

चाहे अमीर हो या ग़रीब, बड़ा आफ़िसर हो या रास्तेका कुली—आप कड़वी ज़बान किसीसे न बोलें। वाक्य शक्तिमे दिलचस्पी, हास्य-विनोद और माधुर्यकी पुट दें। लोगोंकी बाते ध्यानसे सुनें और उनका मीठे शब्दोंमे माकूल उत्तर दें। किसीने ख़ूब कहा है:—

"बशीकरन एक मंत्र है,
परिहरु बचन कठोर।"

मीठी बोली वह जादू है, जिससे मनुष्य मात्र आपके भक्त बन जाते हैं। यदि आपकी ज़बान गंदी है, उससे गालियोंके कोड़े बरसते हैं, अपमान और गुस्सेकी चाबुक चलती हैं—तो यह आपके पतनकी माया है। कड़वी और मीठी ज़बान मनुष्योंके दिलपर कहाँतक असर करती है, इसका एक उदाहरण लीजिये—

एक कारख़ानेकी बात हैं। इसमे लगभग पाँच सौ कर्मचारी काम करते थे। जिनमे अमीर-ग़रीब, छोटे-बड़े सभी टाइपके आदमी थे। यह कारख़ाना बड़े उत्साहके साथ चल रहा था। न किसीमें राग-द्वेष था, न पार्टीबन्दी। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि कम्पनीके संचालक बहुत ऊँची

"ईशाको चाहिये कि न बोले किसीसे सख्त ।
इस वास्ते जुबांमें कोई हड्डियाँ नहीं !"

मीठी बोली आपको ज़िन्दा करनेवाली ताकत है। बचपनमें आपकी माताने अपने दूधसे आपकी ज़बान धोई है—मीठी बात करनेके लिये। मीठी बोली आपके दिमाग़में मौलिकता और प्रतिभाका चमत्कार फैलाती है, आपके मनको ऊँचा उठाती है—

"जीभि जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै;
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै।
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नर्क दिखावै;
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओठ एकत्र करि, बांट सहारे तोलिये।
बैताल कहै विक्रम सुनो, जीभि सँभारे बोलिये॥"

दुनियाका हर आदमी मीठी और कड़वी ज़बानका स्वाद जानता है। ज़बान सब कुछ कर सकती है। वह मनुष्यके व्यक्तित्वकी सबसे बड़ी संचालन शक्ति है।

संसारमे आज सैकड़ों-हज़ारों व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें बोलनेका तरीक़ा नहीं मालूम। उन्हें इस बातका पता तक नहीं कि अपनेमें आकर्षण बढ़ानेके लिये हम किस तरहकी ज़बान बोलें। वह बोलते इस तरह हैं, जैसे लाठी मार रहे हों। वे अपनी बोलीमें साँप और बिच्छू जैसे ज़हरीले जानवरोंकी सृष्टि करते हैं, जो दूसरोंको काट खाते हैं, डंक मार देते हैं। ऐसे विषधर

आदमी अपने पैरोंमें आप कुल्हाड़ी मारते हैं और मनुष्य जीवनको सर्वनाशकी भट्ठीमें झोंकते हैं :—

"भले बुरे सब एकसों जौ लौं बोलत नाँहि।
जानि परतु है काक पिक ऋतु बसंतके माँहि ॥"

चाहे अमीर हो या ग़रीब, बड़ा आफ़िसर हो या रास्तेका कुली—आप कड़वी ज़बान किसीसे न बोलें। वाक्य शक्तिमें दिलचस्पी, हास्य-विनोद और माधुर्यकी पुट दें। लोगोंकी बातें ध्यानसे सुनें और उनका मीठे शब्दोंमें माकूल उत्तर दें। किसीने ख़ूब कहा है:—

"वशीकरन एक मंत्र है,
परिहरु बचन कठोर।"

मीठी बोली वह जादू है, जिससे मनुष्य मात्र आपके भक्त बन जाते हैं। यदि आपकी ज़बान गंदी है, उससे गालियोंके कोड़े बरसते हैं, अपमान और गुस्सेकी चाबुक चलती हैं—तो यह आपके पतनकी माया है। कड़वी और मीठी ज़बान मनुष्योंके दिलपर कहाँतक असर करती है, इसका एक उदाहरण लीजिये—

एक कारख़ानेकी बात हैं। इसमे लगभग पाँच सौ कर्मचारी काम करते थे। जिनमे अमीर-ग़रीब, छोटे-बड़े सभी टाइपके आदमी थे। यह कारख़ाना बड़े उत्साहके साथ चल रहा था। न किसीमें राग-द्वेष था, न पार्टीबन्दी। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि कम्पनीके संचालक बहुत ऊँचा

"इंशाको चाहिये कि न बोले किसीसे सख्त।
इस वास्ते जुबांमें कोई हड्डियाँ नहीं!"

मीठी बोली आपको ज़िन्दा करनेवाली ताकत है। बचपनमे आपकी माताने अपने दूधसे आपकी ज़बान धोई है—मीठी बात करनेके लिये। मीठी बोली आपके दिमाग़में मौलिकता और प्रतिभाका चमत्कार फैलाती है, आपके मनको ऊँचा उठाती है—

"जीभि जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै;
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै।
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नर्क दिखावै;
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओठ एकत्र करि, बांट सहारे तोलिये।
बैताल कहै विक्रम सुनो, जीभि सँभारे बोलिये॥"

दुनियाका हर आदमी मीठी और कड़वी ज़बानका स्वाद जानता है। ज़बान सब कुछ कर सकती है। वह मनुष्यके व्यक्तित्वकी सबसे बड़ी संचालन शक्ति है।

संसारमें आज सैकड़ों-हज़ारों व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें बोलनेका तरीक़ा नहीं मालूम। उन्हें इस बातका पता तक नहीं कि अपनेमें आकर्षण बढ़ानेके लिये हम किस तरहकी ज़बान बोलें। वह बोलते इस तरह हैं, जैसे लाठी मार रहे हों। वे अपनी बोलीमें साँप और बिच्छू जैसे ज़हरीले जानवरोंकी सृष्टि करते हैं, जो दूसरोंको काट खाते हैं, डंक मार देते हैं। ऐसे विषधर

आदमी अपने पैरोंमें आप कुल्हाड़ी मारते हैं और मनुष्य जीवनको सर्वनाशकी भट्ठीमें झोंकते हैं :—

"भले बुरे सब एकसों जौ लौं बोलत नाँहि।
जानि परतु है काक पिक ऋतु बसंतके माँहि॥"

चाहे अमीर हो या ग़रीब, बड़ा आफ़िसर हो या रास्तेका कुली—आप कड़वी ज़बान किसीसे न बोलें। वाक्य शक्तिमे दिलचस्पी, हास्य-विनोद और माधुर्यकी पुट द। लोगोंकी बाते ध्यानसे सुनें और उनका मीठे शब्दोंमे माकूल उत्तर दें। किसीने ख़ूब कहा है:—

"बशीकरन एक मंत्र है,
परिहरु वचन कठोर।"

मीठी बोली वह जादू है, जिससे मनुष्य मात्र आपके भक्त बन जाते हैं। यदि आपकी ज़बान गंदी है, उससे गालियोंके कोड़े बरसते हैं, अपमान और गुस्सेकी चाबुक चलती हैं—तो यह आपके पतनकी माया है। कड़वी और मोठी ज़बान मनुष्योंके दिलपर कहाँतक असर करती है, इसका एक उदाहरण लीजिये—

एक कारख़ानेकी बात हैं। इसमे लगभग पाँच सौ कर्मचारी काम करते थे। जिनमे अमीर-ग़रीब, छोटे-बड़े सभी टाइपके आदमी थे। यह कारख़ाना बड़े उत्साहके साथ चल रहा था। न किसीमें राग-द्वेप था, न पार्टीबन्दी। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि कम्पनीके संचालक बहुत ऊंचो

तबीयतके आदमी थे। वह सबके साथ आदर और प्रेमका व्यवहार रखते थे। मगर दुर्भाग्यकी बात देखिये, संचालक महोदयको एकाएक किसी ज़रूरी कामसे योरोप चले जाना पड़ा। उनके स्थान पर उन्हींका एक रिश्तेदार आया। यह मनुष्य ज़बानका इतना गंदा था कि प्रत्येक मनुष्यको कुत्ता समझता। शायद उसके दिलमें इस बातकी सनसनी थी, कि नौकरी पेशेवाले कुत्ते होते हैं। वह प्रत्येक आदमीको भद्दी गालियाँ देता और उनका अपमान किया करता था। वह अक्सर पुस्तक पढ़ता—मगर उसे इस बातकी ज़रा भी तमीज़ न थी कि मनुष्य ईश्वरका अंश है। मनुष्यका अपमान ईश्वरका अपमान है। किन्तु यह हो तो कैसे? कारखानेकी ऊँची कुर्सीपर बैठकर वह अपनेको ईश्वरसे भी बड़ा समझने लगा। लोग उसे अत्याचारोंका अवतार कहते थे।

उसके खिलाफ़ कर्मचारियोंके अंदर ही अंदर विद्रोहकी आग भड़कने लगी। एक छोटे क्लासका आदमी कमरमें छुरा छिपाकर घूमने लगा। वह कहता—'मैं इस गधेका खून करूँगा और फाँसीपर चढ़ जाऊँगा।' इस तरहके गंदे वायुमंडलसे वह कारखाना स्वर्गके बजाय नर्कके रूपमें बदल गया। खैर, परिस्थितिकी भीषणता देखकर संचालक महोदय हाँफते हुये योरोपसे आये, उन्होंने अपनी कुर्सी संभाली। दो ही दिनमें रंग बदल गया। जली हुई खेतियाँ लहलहा उठीं। कारखाना शानसे

चलने लगा और उनका रिश्तेदार अपना-सा मुंह लेकर भाग गया !

यह है बोलनेका तरीक़ा। जो मनुष्य दूसरोंके प्रति सहृदय होता है; वह बिना सत्ताके ही शासक बन जाता है। उसके हुक्म प्रेमके संदेश होते हैं—जिन्हें दूसरे लोग हमेशा सुननेके लिये उत्सुक रहते हैं। पर जहाँ अपने प्रति घमंड और विशेषाधिकारका भाव होता है और दूसरे मनुष्योंके प्रति कठोरताका—सत्ताका शासन वहीं बेकार हो जाता है और उसका पुरस्कार मिलता है—अप्रतिष्ठा तथा पतन !

सदा दूसरोंके दोष देखना, सदा दूसरोंपर अविश्वास करना अपने ही हृदयकी मलिनताका लक्षण है। सावधान और जागरण एक बात है, अविश्वास दूसरी।

यदि आप वाक्य शक्तिको प्रभावशाली, आकर्षक और मधुर बनानेके इच्छुक है, तो संगीतका अभ्यास कीजिये। चटपटे गाने गाइये। कोमल कवितायें और उत्तमोत्तम नाटक पढ़िये। आपकी ज़बान साफ़, दिलको गुदगुदानेवाली तथा कर्णप्रिय बन जायगी। गुनगुनाकर कभी न बोलिये। मनुष्योंके प्रति प्रेम, सम्मान तथा सहृदयताका भाव रखिये। कानाफूसी, फुसफुसाहट और रुक-रुककर बोलनेकी आदत बुरी है। इन्हें छोड़िये। यदि मीठी ज़बानसे ज्यादा आकर्षण उत्पन्न करनेका इरादा हो तो मुस्कराने और दिल खोलकर हँसनेका अभ्यास कीजिये। आपके पास यह दो अनोखे जादू है।

मुस्कराहट मनुष्यके दिलपर गहरा असर डालती है। बोलते समय जरा मुस्करा दीजिये। यह रूप सरोवरकी उठती हुई लहर है, जो स्वाभाविक मनुष्यको अपनी ओर खींच लेती है। उसे देखकर मनुष्य मंत्रमुग्ध रह जाता है!

बहुतसे लोग हँसते हैं, मगर उन्हें हँसना नहीं आता। वास्तवमें यदि हँसनेकी कलामें आप उस्ताद हैं, तो मीठी हँसीमें कुछ अनोखा जादू है। मनुष्यको छोड़कर संसारका कोई प्राणी नहीं हँसता। हँसी वो हथियार है, जो बड़े-बड़े मिज़ाजियोंके मिज़ाज चुटकियोंमें ठिकाने लगा देती है। बहुतसे लोग मनहूस और मुहर्रमी सूरतके होते हैं। इन्हें ग़ौरसे देखिये। इन लोगोंने मुंह सिकोड़-सिकोड़कर अपनी बुद्धि भी सिकोड़ ली है। फिर बेचारे किस मुंहसे प्रभावशाली हास्यका दम भरें?

हास्य बुद्धिमान, ज्ञानी और साफ़ दिलोंके लिये है। जिस तरह अमृत देवताओंकी चीज़ हैं, उसी तरह हास्य भी मनुष्यकी सम्पत्ति है। जानवर और पशु-पक्षी इस अनोखे उपहारसे वंचित हैं। इससे बड़े-बड़े काम निकलते हैं। हास्यमें कभी-कभी मीठी चुटकियाँ लेना आवश्यक है। आप बीरबलका सा मँजा दिमाग़ और बिजलीकी तरह तड़पानेवाली बुद्धि उत्पन्न कीजिये। हास्यमें अश्लीलता और भद्देपनको लाना अपने शानदार व्यक्तित्वको गन्दा बनाना है।

अगर आपको हँसना नहीं आता, आप मुहर्रमी सूरतके

आदमी हैं, तो हास्य रसके नाटक-तमाशे और बोलती फिल्में देखिये। हँसानेवाली पुस्तकें पढ़िये। आपका मिज़ाज विनोदपूर्ण हो जायगा। जितना ज्यादा आप दिल खोलकर हँसेंगे, उतना ही आपका स्वास्थ्य सुन्दर होगा। आवाज़ मीठी होगी। हँसनेसे मनुष्योंको आपके दिलकी सचाई तथा शुद्धताका परिचय मिलेगा। वह सहजमें ही आपके बसमें हो जायँगे :—

"ऐसी बानी बोलिये मनका आपा खोय।
औरनको शीतल करै आपौ शीतल होय॥"

ज़बानमे आकर्षणका उत्पन्न होना आपकी विचार-शक्तियों और मनकी तरंगोंपर निर्भर है। जैसा आपका मन होगा, ज़बानकी भाषा भी वैसी ही होगी। इसलिये मनको हमेशा आनन्दमय और ऊँचा रखिये। किसीको नीचे गिराकर अपनेको बड़ा करना ढँकी हुई गन्दगी है। किसीके छिद्रोंको खोजकर उसके दुर्भाग्य और ग़लतियोंकी हँसी उड़ाना महा पाप है। दूसरोंके सुन्दर व्यवहार और गुणोंकी प्रशंसात्मक चर्चा करना आपका प्रधान कर्तव्य है।

कभी इस तरह न बोलिये, ज़िससे दूसरे आपको अहंकारी या अभिमानी कहने लगें। हलकी और तुच्छ बातोंकी चर्चामें पड़ना समयके सुन्दर चिन्होंको नष्ट करना है। ज़िस समय आपका किसी नये आदमीसे परिचय हो, उस समय कोई चमत्कारपूर्ण बात कहिये; ताकि उसपर आपका पूर्ण प्रभाव

पड़ सके। यदि प्रेम, विनोद और मधुर व्यवहारसे भी आपका कोई मित्र आपके प्रति आकर्षित नहीं होता, तो अपनी त्रुटियोंको ढूंढ़िये ; मगर उसके प्रति कभी कठोर वचन न बोलिये। कठोर वचनकी अपेक्षा आप अपनी आत्मशुद्धि और आत्म-ताड़नामें ज्यादा समय सर्फः कीजिये।

यह सब वैज्ञानिक प्रयोग हैं, जो मनुष्यको बहुत ऊँचा उठाते हैं। जब आप इन बातोंके विद्वान बन जायँ; तब नित्य नये दोस्त पैदा करनेकी तरकीब सोचिये। अपनी महान आत्माको अपने साढ़े तीन हाथके शरीरके अन्दरसे निकालिये और उसे मनुष्योंकी आत्माओंमें प्रवेश करने दीजिये। वह उनमें देवत्व और गुणोंका तहखाना ढूंढ़ेगी। मनुष्योंकी दोस्ती जीवन विजयका सुन्दर चिन्ह है।

देश विदेशकी भाषायें सीखिये, उनका साहित्य पढ़िये और उसे उन मनुष्योंमें बोलिये, जो उस भाषाके प्रेमी हैं। यह ऊँचे मनका वैज्ञानिक प्रतिबिम्ब है। अगर आप बोलनेमें बुराइयोंकी तरफ ध्यान देंगे, तो आपके मित्रोंके मनमें फौरन यह बात जम जायगी कि यह मनुष्य कुछ नहीं है।

आप अपने मित्रोंको आपकी तारीफका सुअवसर दीजिये। उस तारीफका—जिसमें गुणोंकी प्रशंसा है, प्रेम और सत्कार है। यह सब मनुष्य जीवनके सफलताकी सुनहरी कुंजियाँ हैं। इन कुंजियोंसे मनके उन मोरचा लगे हुए तालोंको खोल डालिये,

जहाँ आश्चर्यजनक शक्तियाँ दबी पड़ी हैं और आपको अपने चमत्कार दिखानेके लिये छटपटा रही हैं।

यदि बातोंमें कभी वाद-विवादका मौक़ा आ जाय तो अपनी ही ज़िदपर न डटे रहिये। विरोधी पक्षके 'प्वाइण्ट' की तारीफ करते हुये उसके आत्मगौरवकी रक्षा कीजिये। अकसर लोग तर्क या वादविवादमें झगड़ा कर बैठते हैं, एक दूसरेके दुश्मन बन जाते हैं। इस मूर्खताको फूंक ताप डालिये।

बहुतसे लोग मनुष्योंसे बातें करनेमें शरमाते हैं। यह वहमकी बीमारी है। सहृदय बनकर मनुष्योंसे बोलिये और ठाटसे बोलिये—हज़ारों लाखोंमें बोलिये—लेकिन शर्म और डर छोड़ कर—मीठी ज़बान! आपके चन्द मीठे शब्दोंको सुनकरही मनुष्य आपके प्रति मुग्ध हो जायंगे।

हमेशा सच बोलो। झूठी प्रशंसा कर तुम अपने मित्रको अपमानित न करो।

तुम चाहे अंधे बहरे हो जाओ, स्वास्थ्य खो दो, मगर सत्यको कभी न भूलो। सत्यका तेज हज़ारों सूर्यके तेजसे अधिक है। उसकी क़ीमत सैकड़ों यज्ञोंकी क़ीमतसे ज्यादा है। जब तुम्हारा हृदय सत्यके तेजको देख लेगा, तो वह उसे कभी न भूलेगा। सत्य अपने विरुद्ध एक आँधी पैदा कर देता है और यही आंधी उसके बीजोंको दूर-दूर तक फैला देती है।

तुम अपने निंदकोंको भी प्यार करो। निंदकोंसे उपकार

११

होता है—क्योंकि उनमें दोष दृष्टि होती है और वे तुम्हारे अव-गुणोंको प्रकाशित करके सुधारका अवसर देते हैं—

निंदक नियरे रखिये, आँगन कुटी छवाय;
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ॥

तुम किसीकी खुशामद न करो। खुशामदी ऐसा जानवर है, जो मुसकराता हुआ काटता है। उसे भारी दग़ाबाज जानो। क्योंकि वह तुम्हारी बुराई करनेमें दूसरोंको सहारा देगा और तुम्हारे दोष तुम्हें बतानेके बदले तुम्हारी मूर्खता और अवगुणों पर ऐसा लुक फेर देगा कि तुम भले बुरेका विवेक कदापि न कर सकोगे।

फ्रांसका शाहंशाह चौदहवाँ लुई जब कभी गिरजाघर जाता था, तो भीड़के मारे गिरजाघर उफ़न उठता था। एक बार जब वह गिरजाघर गया, तो सिवा पादरीके किसीको न पाया। सबब पूछा तो पादरीने जवाब दिया—'आपको यह दिखानेको कि गिरजामें कितने 'भक्त' खुदाकी बंदगीको और कितने 'खुशामदी' आपको खुश करने आते हैं, मैंने मशहूर कर दिया था कि बादशाह आज न आयेंगे। जिससे यहाँ कोई न फटका।'

अपनी कमज़ोरियों, आफतों और आहोंको कलेजेमें दबाकर घूमो। लेकिन किसीसे उनकी चर्चा न करो। वर्ना तुम मुसीबतोंके झुण्डको अपने हाथसे निमंत्रण दोगे। तुम्हारा

जीवन भयानक बिपत्तियोंसे घिर जायगा और मौत तुम्हारे इर्द गिर्द चक्कर काटना शुरू कर देगी।

संसार रहस्योंका चलता फिरता जादू घर है:—

"कोई संगी नहिं उतै, है इतहीको संग।
पथी लेहु मिलि ताहिते सबसों सहित उमंग॥
सबसों सहित उमंग, बैठि तरनीके माँही।
नदिया नाव संयोग, फेरि यह मिलिहै नाँही॥
बरनै दीनदयाल पार पुनि भेट न होई।
अपनो अपनो गैल पथो जैहैं सब कोई॥"

रुपया !

रुपया ! रुपया !! रुपया !!!

हाथमें काग़ज़-पेन्सिल लेकर मेरे साथ चक्कर काटिये। हज़ारों, लाखों मनुष्य फटी हालतमें अपनी पीड़ाओंको दबाये हुये दर-दरकी ठोकरें खा रहे हैं। उनके दिलोंमें हाहाकारकी होली जल रही है। इनकी महान आत्मायें, इनकी ज़िन्दा लाशोंको कन्धेपर लादे हुये आहिस्तः-आहिस्तः श्मशान और कब्रस्तानकी ओर रवाना हो रही हैं। क्यों और किसलिये? लिखिये—"इनके पास रुपये नहीं हैं।"

बड़े-बड़े कल-कारख़ानोंमें, लम्बे-चौड़े आफिसोंमें, सैकड़ों-हज़ारोंकी तादादमें क्लर्क, बाबू, चपरासी और मज़दूर मेशीनोंकी तरह खटते हुये ज़िन्दगीके बोझेको ढो रहे हैं। क्या वजह है?—"रुपया!—हरएकके दिलमें रुपयेकी प्यास है।"

जेलख़ानोंके अन्दर आइये। चोर, उचक्के, गिरहकट, डाकू,

ख़ूनी और बदमाश लोहेकी जंजीरोंमें जकड़े हुये पशुओंकी ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। क्यों? फर्राटेसे लिख लीजिये—"इन लोगोंने रुपयेके लिये लालचके हथौड़ेसे अपनी सुनहरी ज़िन्दगीको कुचल डाला है।"

यह वेश्याओंका मुहल्ला है। कुछ लोग इसे नर्क कहते है, कुछ परियोंका देश। यहाँकी वेश्याये' चाँदीके चमकते हुए सिक्कोंपर सतीत्व जैसे रत्नको बेच रही हैं। उनका रूप, उनका सौंदर्य, उनकी जवानी कौड़ियोंके मोल बिक रही है। इनमें कितनी ही विधवाये' हैं, कितनी ही सधवाये'—कितनी ही कुमारियाँ! हरएककी ज़िन्दगी रहस्योंका मयख़ाना और भयानकताओंका भीषण क़त्लगाह है। इन्होंने यह पाप पेशा क्यों इख़्त्यार किया?—"रुपया! रुपयेकी इश्क़बाज़ी—रुपयेका प्यार!!"

धार्मिक तीर्थस्थानोंमें आइये। आपको एकसे एक दिग्गज पंडित, पुजारी, महन्त, मौलवी, मुल्ला और पादरियोंके झुंड दिखाई देंगे। हरएकके दिल टटोलकर देखिये—सबका एक ही उद्देश्य है, एकही लक्ष्य—"रुपया!" आप जब तक किसीको रुपयेकी दक्षिणा न देंगे—धर्म सफल न होगा। यह भी नोट कर लीजिए—"धार्मिक स्थानोंमे आजकल देवताओंकी नहीं, रुपयोंकी पूजा होती है। आजकलके देवताओंसे ज्यादा ताकत रुपयेमे है—तुरत दान, महा कल्यान!"

आकर्षण-शक्ति

संसारका कोना-कोना छान डालिये—कहीं बाप, बेटेकी गरदन दबा रहा है ; भाई, भाईका गला घोंट रहा है ; औरत, मर्दकी खोपड़ी चाट रही है ; आपसमें चट्टियाँ चल रही हैं, ऐबोंके पर्दे फाश किये जा रहे हैं ,—क्यों और किसलिये ? सबके दिलोंमें एक ही नशा है, एक ही पागलपन—"रुपया ! रुपयेकी भूख—रुपयेकी प्यास !"

उफ़ ! रुपयेके लिये कितने ही मनुष्य इन्सानसे शैतान बन गये। कितने ही नरेन्द्र नापाक हो गये। कितने ही दग़ाबाज़ देशभक्त, सड़े सन्यासी, स्वार्थी सुधारक, बेवकूफ समाजसेवक और ठग व्यापारियोंने रुपयेके लिए अपनी फूल-सी ज़िन्दगीको काँटोंमें बदल डाला, मनुष्यताको कुचल डाला और अपने आपको पूर्व जन्मकी तरह भूल गये।

लिखते हुए लेखनी काँपती है, सरमें चक्कर आता है और पैरोंके नीचेसे धरती सरकती दिखाई देती है। रुपयेके ही लिए आज एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रको खा जानेके लिये राक्षसकी तरह मुंह बाये हैं। रुपयेके ही लिए आज ख़ूनी रिवाल्वर, सत्यानाशी तोपों और ज़हरीली गैसोंके आविष्कार किये जा रहे हैं। रुपया ! रुपया ! रुपया !—रुपया आज हँसती सृष्टिको श्मशान बनानेके लिए प्रचण्ड उद्योग कर रहा है। कैसी भयानकता है, कैसा अन्धेर है !

अभी उस दिनकी ताज़ी घटना है, रत्नागिरिके किसी गणपत

सखारामने अपने बेटेका ख़ून कर डाला। कारण, लड़केका दो हज़ार रुपयेका जीवन बीमा था। बापने इन रुपयोंको हथियानेके लालचसे बेटेको लाठियोंसे मार डाला और उसकी लाश एक दरख़्तके नीचे रख दी, जिसमें लोगोंको यह विश्वास हो जाय कि लड़का दरख़्तसे गिरकर मर गया !

कैसा पैशाचिक कांड है, कितनी भीषण निर्दयता। उफ़ ! रुपया राक्षस है, रुपया देवता है। रुपया यमराज है, रुपया ईश्वर है। रुपयेके प्रभावका डंका आज संसारके कोने-कोनेमें बज रहा है। रुपया सबका शिरोमणि है :—

टका कर्ता, टका भर्ता, टका मोक्षप्रदायकः।
यस्य गेहे टका नास्ति, 'हा टका' टकटकायते !

चारों तरफ़ रुपयेको हाय-हाय है। सभी चाहते हैं— रुपयोंका ख़ज़ाना, रुपयोंका तहख़ाना, रुपयोंका ढेर। इस ज़मानेमें वह मनुष्य सबसे बड़ा अभागा है, जिसके पास रुपए नहीं है।

यदि आपकी जेब रुपयोंसे ख़ाली है—आप ग़रीब हैं—तो चाहे आपका प्यारा बच्चा बीमारीसे तड़प-तड़पकर मर जाय; मगर डाक्टर बग़ैर फीस लिये उसकी दवा न करेंगे। देश और समाज आपको नफ़रतकी निगाहोंसे देखेगा। आप जिस ज़मीनपर चलेंगे, वह कांटों और कांचके टुकड़ोंसे भर जायगी। ओह ! रुपयेकी दुनिया सबसे विचित्र, सबसे रहस्यमय है।

बिना रुपयेके आप न तो स्कूल-कालेजोंमें भर्ती हो सकते हैं, न देश-विदेशकी पुस्तकोंका अध्ययन कर सकते हैं, न संसार-भ्रमणके लिए हवाई जहाज़ों, रेलों और मोटर गाड़ियोंपर चल सकते हैं; वैतालने ठीक ही लिखा है :—

टका करै कुल हूक, टका मिरदंग वजावै।
टका चढ़ै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै।
टका माय अरु बाप, टका भइयनको भइया।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड़ लड़इया॥
अब एक टके बिनु टकटका रहत लगाए रात दिन।
वैताल कहै विक्रम सुनो धिक जीवन एक टके बिन॥

सचमुच इस ज़मानेमें रुपयेके बग़ैर हमारे सावनमें मेह नहीं बरसता—ख़ाक उड़ती है। हमारे गुलशनमें अपने ही गुलोंसे आग लग जाती है।

मैं कहता हूं, अगर आप निर्धन हैं, ग़रीब हैं, तो रुपये कमाइए। मगर रुपयोंके लिए किसीके सामने हाथ न फैलाइए, दाँत न निपोरिए—कि मैं कंगाल हूं, फ़क़ीर और बेकार हूं। संसारमें चिराग़ लेकर ढूंढ़नेपर भी आपको एक मनुष्य ऐसा न मिलेगा, जो आपकी मुसीबतोंको सुनकर, आपके दुःख-दर्दसे हिलकर आपको 'इम्पीरियल बैंक' का एक चेक मुफ़्त दे देगा। सभी अपने-अपने स्वार्थमें 'निज़ी' हैं, अपनी-अपनी धुनमें मस्त। किसीको क्या ग़रज़? जो आपकी आफ़तोंको

देखे, आपके रंज अफ़साने सुने और उन्हें दूर करनेकी कोशिश करे—

"माँगन मरन समान है, मत माँगै कोइ भीख।
माँगनसे मरना भला, यह सद्गुरुकी सीख॥"

आजकल रुपया शक्तिका बड़ा स्रोत है। रुपयेका न होना ज़िन्दगीके सम्पूर्ण आनन्दोंको खो देना है। रुपयेका होना ज़िन्दगीको सुखोंसे लाद देना है। आप उन मनुष्योंकी ज़िन्दगीको होशियारीसे अध्ययन कीजिये, जो कल फ़कीर थे, आज अमीर हो गये। जो कल गन्दे चीथड़ोंपर सो रहे थे—आज आरामसे चमकती कोठियोंके मालिक बन बैठे हैं।

आप अपनी निर्धनतापर अफ़सोस न कीजिये। प्रसन्नता और मस्तीसे इस मंज़िलको तय कीजिये। दुनियामें आज तक जितने भी धनी आदमी हुए हैं, सभी पहले मामूली हालतमें थे। बग़ैर छोटेको ग्रहण किये कोई बड़ा हो ही नहीं सकता। आज तक दुनियामें कोई हुआ भी नहीं। रुपयोंके लिये सभीने कठोर परिश्रम किये हैं। अपने ख़ूनको पानीकी तरह बहाया है। यह सच है कि निर्धनता बहुत कष्टमय और भयानक है। वह बहुधा हमारी अन्तरात्मा तकको मृतप्राय कर देती है; पर ठोकर खाकर ही मनुष्यमें सद्बुद्धि उत्पन्न होती है:—

"सुर्ख़रू होता है इन्साँ आफ़तें आनेके बाद;
रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद।"

प्रेसिडेन्ट विलसनने लिखा है—'मेरा जन्म निधनतामें हुआ। माँ के पास रोटियों तकका ठिकाना न था। दस वर्षकी उम्रमें मैंने घर छोड़ा और ग्यारह वर्ष तक सपरिश्रम नौकरी की। मैंने एक डालर भी कभी अपने मनोरंजन और सुखके लिए नहीं ख़र्च किया। इक्कीस वर्षकी उम्र तक मैंने पैसा-पैसा सँभालकर रखा। नौकरीकी तलाशमें सैकड़ों मील मारे-मारे फिरना कैसा होता है, इसका मुझे ख़ूब अनुभव है।' जंगलमें लकड़ी तोड़ना, सूर्योदयसे पहले उठना और अस्त होनेके बाद तक मेहनत करना और वह भी केवल छ डालर माहवारपर! परन्तु विलसनने आत्म-सुधार और आत्मोन्नतिका कोई मौक़ा हाथसे नहीं जाने दिया। अपने बचे-खुचे समयमें इक्कीस वर्षकी उम्र तक उन्होंने लगभग एक हज़ार अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ीं। इसके अलावा उन्होंने किसानी और मोचीगीरी भी सीखी। सालभरमें वह अच्छे वक्ता हो गये और आठ वर्षके अन्दर व्यवस्थापिका सभामें उन्होंने दासताके विरुद्ध वह ओजस्वी व्याख्यान दिया कि जिससे उनका नाम हमेशाके लिए अमर हो गया।

सुप्रसिद्ध फ्रान्सीसी जीन जेक्स रूसोसे एक बार किसीने पूछा—'आपने किन-किन विद्यालयोंमें शिक्षा प्राप्त कर सफलता पाई है?' उन्होंने उत्तर दिया—'मैंने ज़्यादातर विपत्तियोंके स्कूलमें पढ़ा है और अपनी निर्धनतासे शिक्षा ग्रहण की है।'

इसी तरह दुनियाके अनेकों वीर और महापुरुषोंका जन्म

निर्धनतामें हुआ—उन्होंने तरह-तरहके दुर्भाग्यसे टक्करें खाईं—पर सिर्फ आत्मबल और समयके सदुपयोगसे उनके जीवन सफल हो गये। आत्मविश्वास और सच्ची लगनको संसारकी कोई शक्ति परास्त नहीं कर सकती।

हम सामाजिक बन्धनोंकी ज़ंजीरोंमें जकड़े हुए अभागे क़ैदीकी तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें देश-विदेशमें घूम-फिरकर अनुभव हासिल करनेका हुक्म नहीं। हम किसी सोसायटीमें नहीं शामिल हो सकते। किसीके साथ खाने-पीनेसे हमारा धर्म भ्रष्ट हो जाता है—फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं ?

हम मनुष्योंकी निन्दा-स्तुति और फ़ालतू गपबाजियोंमें अपना क़ीमती समय बरबाद कर रहे हैं। हम अपने दोस्तोंकी उन्नति देखकर जलते हैं, हमारे मुंहसे गालियां और घमण्ड भरे शब्द निकलते है—फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं ?

शिक्षा, परिश्रम, शानदार व्यक्तित्व, मीठी ज़बान और अनुभव रुपये कमानेमें कल्पवृक्षका काम देते हैं।

अगर आप सचमुच रुपये कमाना चाहते हैं, बड़े-बडे व्यापार अपने हाथमे लेना चाहते हैं, अखंड धन राशिके मालिक बनना चाहते हैं—तो 'हाय रुपया ! हाय रुपया !' कहकर चिल्लाने, देवी देवताओंको जप कराने तथा ज्योतिषियोंको हाथ दिखानेसे कुछ न होगा। पहले आप बड़े बड़े विद्यालयोंमे भर्ती होकर शिक्षा

प्रेसिडेन्ट विल्सनने लिखा है—'मेरा जन्म निधनतामें हुआ। माँ के पास रोटियों तकका ठिकाना न था। दस वर्षकी उम्रमें मैंने घर छोड़ा और ग्यारह वर्ष तक सपरिश्रम नौकरी की। मैंने एक डालर भी कभी अपने मनोरंजन और सुखके लिए नहीं ख़र्च किया। इक्कीस वर्षकी उम्र तक मैंने पैसा-पैसा सँभालकर रखा। नौकरीकी तलाशमें सैकड़ों मील मारे-मारे फिरना कैसा होता है, इसका मुझे ख़ूब अनुभव है।' जंगलमें लकड़ी तोड़ना, सूर्योदयसे पहले उठना और अस्त होनेके बाद तक मेहनत करना और वह भी केवल छ डालर माहवारपर! परन्तु विल्सनने आत्म-सुधार और आत्मोन्नतिका कोई मौक़ा हाथसे नहीं जाने दिया। अपने बचे-खुचे समयमें इक्कीस वर्षकी उम्र तक उन्होंने लगभग एक हज़ार अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ीं। इसके अलावा उन्होंने किसानी और मोचीगीरी भी सीखी। सालभरमें वह अच्छे वक्ता हो गये और आठ वर्षके अन्दर व्यवस्थापिका सभामें उन्होंने दासताके विरुद्ध वह ओजस्वी व्याख्यान दिया कि जिससे उनका नाम हमेशाके लिए अमर हो गया।

सुप्रसिद्ध फ्रान्सीसी जीन जेक्स रूसोसे एक बार किसीने पूछा—'आपने किन-किन विद्यालयोंमें शिक्षा प्राप्त कर सफलता पाई है?' उन्होंने उत्तर दिया—'मैंने ज़्यादातर विपत्तियोंके स्कूलमें पढ़ा है और अपनी निर्धनतासे शिक्षा ग्रहण की है।'

इसी तरह दुनियाके अनेकों वीर और महापुरुषोंका जन्म

निर्धनतामें हुआ—उन्होंने तरह-तरहके दुर्भाग्यसे टक्करें खाई—पर सिर्फ आत्मबल और समयके सदुपयोगसे उनके जीवन सफल हो गये। आत्मविश्वास और सच्ची लगनको संसारकी कोई शक्ति परास्त नहीं कर सकती।

हम सामाजिक बन्धनोंकी ज़ञ्जीरोंमें जकड़े हुए अभागे क़ैदीकी तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें देश-विदेशमें घूम-फिरकर अनुभव हासिल करनेका हुक्म नहीं। हम किसी सोसायटीमें नहीं शामिल हो सकते। किसीके साथ खाने-पीनेसे हमारा धर्म भ्रष्ट हो जाता है—फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं?

हम मनुष्योंकी निन्दा-स्तुति और फ़ालतू गपबाजियोंमें अपना क़ीमती समय बरबाद कर रहे हैं। हम अपने दोस्तोंकी उन्नति देखकर जलते हैं, हमारे मुंहसे गालियां और घमण्ड भरे शब्द निकलते हैं—फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं?

शिक्षा, परिश्रम, शानदार व्यक्तित्व, मीठी ज़बान और अनुभव रुपये कमानेमें कल्पवृक्षका काम देते हैं।

अगर आप सचमुच रुपये कमाना चाहते हैं, बड़े-बडे व्यापार अपने हाथमें लेना चाहते हैं, अखंड धन राशिके मालिक बनना चाहते हैं—तो 'हाय रुपया! हाय रुपया!' कहकर चिल्लाने, देवी देवताओंकी जप कराने तथा ज्योतिषियोंको हाथ दिखानेसे कुछ न होगा। पहले आप बड़े बड़े विद्यालयोंमे भर्ती होकर शिक्षा

प्रेसिडेन्ट विलसनने लिखा है—'मेरा जन्म निधनतामें हुआ। माँ के पास रोटियों तकका ठिकाना न था। दस वर्षकी उम्रमें मैंने घर छोड़ा और ग्यारह वर्ष तक सपरिश्रम नौकरी की। मैंने एक डालर भी कभी अपने मनोरंजन और सुखके लिए नहीं ख़र्च किया। इक्कीस वर्षकी उम्र तक मैंने पैसा-पैसा सँभालकर रखा। नौकरीकी तलाशमें सैकड़ों मील मारे-मारे फिरना कैसा होता है, इसका मुझे ख़ूब अनुभव है।' जंगलमें लकड़ी तोड़ना, सूर्योदयसे पहले उठना और अस्त होनेके बाद तक मेहनत करना और वह भी केवल छ डालर माहवारपर! परन्तु विलसनने आत्म-सुधार और आत्मोन्नतिका कोई मौक़ा हाथसे नहीं जाने दिया। अपने बचे-खुचे समयमें इक्कीस वर्षकी उम्र तक उन्होंने लगभग एक हज़ार अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ीं। इसके अलावा उन्होंने किसानी और मोचीगीरी भी सीखी। सालभरमें वह अच्छे वक्ता हो गये और आठ वर्षके अन्दर व्यवस्थापिका सभामें उन्होंने दासताके विरुद्ध वह ओजस्वी व्याख्यान दिया कि जिससे उनका नाम हमेशाके लिए अमर हो गया।

सुप्रसिद्ध फ्रान्सीसी जीन जेक्स रूसोसे एक बार किसीने पूछा—'आपने किन-किन विद्यालयोंमें शिक्षा प्राप्त कर सफलता पाई है?' उन्होंने उत्तर दिया—'मैंने ज़्यादातर विपत्तियोंके स्कूलमें पढ़ा है और अपनी निर्धनतासे शिक्षा ग्रहण की है।'

इसी तरह दुनियाके अनेकों वीर और महापुरुषोंका जन्म

यदि आप दूकानदार हैं और दूकानदारीसे अच्छे रुपये कमाना चाहते हैं तो ग्राहकोंको पहचानिये—अपने प्रेम पूर्ण व्यवहारसे उन्हें मुग्ध कर लीजिये। पहले स्वयं उनके हाथों बिक जाइये—फिर माल बेंचिये, सफलता अवश्य मिलेगी। योरोप, अमेरिका इत्यादि उन्नतशील देशोंमें दूकानपर काम करनेवाले ग्राहकोंको इस तरह अपनी बातोंमें मुग्ध कर लेते हैं कि उनकी तबीयत बिना कुछ ख़रीदे नहीं मान सकती। दूकानदार यदि एक चीज़ न पसंद होगी तो दूसरी दिखायेंगे—फिर तीसरी—फिर चौथी, यहाँ तक कि सारी दूकानका सामान आपके सामने उलट देंगे। यदि फिर भी आपको पसंद न आये तो उनका धन्यवाद स्वीकार कर चले आइये। वे कभी आपपर रंज न होंगे। मगर हमारे देशकी क्या हालत है? यदि आप दो-चार चीज़ें देखकर नापसंद कर दें, तो दूकानदार नाक भौं सिकोड़ेगा, बाज़-बाज़ तो यह भी कह बैठते हैं कि लेना न था, तो परेशान क्यों किया? यहाँ दोपहरके समय किसी दूकानपर पहुंच जाइये। अधिकांश दूकानदार ऊँघते हुए मिलेंगे। यदि आप किसी चीज़को पूछें कि है या नहीं, तो जवाब मिलेगा—'है'। जब तक आप 'दिखाओ' न कहेंगे, तबतक वह उठकर दिखानेकी तकलीफ न करेंगे। यदि आपने दिखानेको कहा, तो इस तरह आलस्यके साथ उठेंगे, मानो बड़ी मजबूरीसे उठ रहे हैं और आपपर बहुत बड़ा एहसान लाद रहे हैं। किसी-किसी दूकानपर

प्राप्त कीजिये, संकुचित विचारोंको दूर कर देश-विदेशकी यात्रा कीजिये, कला कौशल और नये नये व्यापार सीखिये, खुद आगे बढ़िये और अपने बच्चोंको आगे बढ़ाइये—फिर देखिये, आपका नाम एक दिन कारनेगी, राकफ़ेलर, हेनरी फोर्ड और निज़ाम हैदराबाद बहादुर जैसे धनकुबेरोंकी लिस्टमें लिखा जायगा। आप रुपयोंके महल बनायेंगे, और आपके बच्चे काश्मीरके आँगनमें फूलोंकी तरह खेलेंगे।

आप सिर्फ़ चार आने पैसे लेकर कोई नया रोज़गार कीजिये। ईश्वर चाहेगा तो इसी चवन्नीसे एक दिन आपको चार लाख रुपये मिल जायँगे। यह हँसनेकी बात नहीं, सत्य है। मनुष्य जो सोचता है, वही हो जाता है। वह भाग्यके अधीन नहीं, भाग्य उसके आधीन है। मनुष्य उसे जो रास्ता दिखायेगा— भाग्य उसपर चलनेको बाध्य है।

यदि आप किसी फर्मके मैनेजर, एकाउण्टेण्ट, कैशियर, क्लर्क, चपरासी, मज़दूर या दरबान हैं—तो अपनी ड्यूटी ठीकसे दीजिये। अपने काममें खुद अपनेको समर्पित कर दीजिये। होशियारीसे सब काम सँभालिये और अपना काम शीशेकी तरह साफ रखिये। परिश्रम और सावधानीसे आपकी तनख्वाह बढ़ जायगी। यदि मालिक कंजूस, स्वार्थी और आपके परिश्रमकी कोई क़ीमत नहीं समझता तो अपनी उन्नतिका दूसरा रास्ता सोचिये और आगे बढ़िये।

लेते हैं, झुँझलाकर हाथ-पैर पटकते हैं और अफीमचीकी तरह रुपयेकी 'चमक' को पकड़ने दौड़ते है। मगर रुपया भी कैसा विचित्र जादूगर है—पारेकी तरह इधर-उधर छिटकता फिरता है। उसे क्या गर्ज, जो वह बगैर उद्योगके किसीके पास चला जाय। वह परिश्रम करने वालेके घरोंमें छप्पर फाड़कर घुस जाता है और उनके क़दमोंमें फर्शी सलाम करता है। वह दर्द भरी आहोंसे नहीं पिघलता। बहुतसे गंदे, मैले कुचैले आदमी आहोंके धुयेंमें रुपयेकी थैलियाँ टटोलते है, किन्तु कुछ नहीं होता। इनके मनकी दीवालोंमें 'लोन' लग गया है। ये कमज़ोर निकम्मे, आलसी और कोढ़ मग्ज हैं। इन्हें रोना आता है, मगर हँसना नहीं। ये ज़मानेको कोसते है—किन्तु ज़मानेको पलटनेकी कोशिश नहीं करते। सोनेवालोंमें इनका नम्बर पहला है—जागने वालोंमें इनका नाम निशान तक नहीं मिलता। ऐसे आदमी स्वयं नष्ट होते हैं और अपनी जातिको नष्ट करते हुये समाज और देशके गौरवको भी ख़त्म कर डालते हैं।

दरिद्रता मनुष्यके लिये महापाप है और इस महापापको दूर करनेको तरकीबें आपके हाथमें हैं। हुनर, होशियारी, सचाई, ईमानदारी, प्रेममय मिज़ाज और शिक्षा—रुपये कमानेकी चाभियां हैं। जिस मनुष्यमें इस तरहके ज्यादा गुण होंगे—वही रुपयोंका ख़ज़ाना प्राप्तकर सकता है। कुछ लफंगोंका ख़याल है—रुपये

जाकर खड़े हो जाइये, तीन-चार मिनट तक दूकानदार एक दूसरेसे बातें करते रहेंगे और आपकी तरफ ध्यान भी न देंगे। यह आदतें दूकानदारीको बिगाड़नेवाली हैं।

यदि आप लेखक हैं और रुपये कमानेकी इच्छा रखते हैं—तो प्रभावशाली पुस्तकें लिखिये। तोपसे बढ़कर जोरदार कलमकी गर्जना होती है। विदेशी लेखक अपनी लेखनीके प्रतापसे मालामाल हो रहे हैं। उनकी कलमसे सोना झरता है। वे सिर्फ एकही पुस्तकसे हजारों लाखों रुपयेकी आमदनी कर लेते हैं। इनके मुक़ाबलेमें आप अपनी तुलना कीजिये। मैं समझता हूं, आपकी आर्थिक अवस्था बहुत कंगाल, दुखी और अफ़सोसजनक होगी।

रुपये कमानेके लिये आपको सबसे बड़ी सफलता आपके व्यक्तित्वपर निर्भर है। आपका व्यक्तित्व जितनाही ऊँचा और प्रभावशाली होगा—उतनेही ज्यादा रुपये आपके हाथ लगेंगे। बड़े-बड़े व्यापारी और नौकरी पेशेवाले जो रुपये कमानेकी स्कीममें 'फेल' हो जाते हैं, इसका सबसे बड़ा कारण है—उनका कमज़ोर व्यक्तित्व, मनकी अप्रसन्नता, चेहरेकी मनहूसियत, चिड़चिड़ा स्वभाव, गुस्सा तथा अहंकार।

रुपया निकम्मे मनुष्योंके लिये पानीके बुल्लेकी तरह है—यह उठा और वह ग़ायब। आप आलसी और निकम्मे आदमियोंकी शक्लें ताड़िये, यह पुराने अजगरकी तरह आलस्यकी सांसें

लेते हैं, झुँझलाकर हाथ-पैर पटकते हैं और अफीमचीकी तरह रुपयेकी 'चमक' को पकड़ने दौड़ते है। मगर रुपया भी कैसा विचित्र जादूगर है—पारेकी तरह इधर-उधर छिटकता फिरता है। उसे क्या गर्ज़, जो वह बगैर उद्योगके किसीके पास चला जाय। वह परिश्रम करने वालेके घरोंमें छप्पर फाड़कर घुस जाता है और उनके क़दमोंमें फ़र्शी सलाम करता है। वह दर्द भरी आहोंसे नहीं पिघलता। बहुतसे गंदे, मैले कुचैले आदमी आहोंके धुयेंमें रुपयेकी थैलियाँ टटोलते है, किन्तु कुछ नहीं होता। इनके मनकी दीवालोंमे 'लोन' लग गया है। ये कमज़ोर निकम्मे, आलसी और कोढ़ मग्ज है। इन्हें रोना आता है, मगर हँसना नहीं। ये ज़मानेको कोसते है—किन्तु ज़मानेको पलटनेकी कोशिश नहीं करते। सोनेवालोंमें इनका नम्बर पहला है—जागने वालोंमें इनका नाम निशान तक नहीं मिलता। ऐसे आदमी स्वयं नष्ट होते हैं और अपनी जातिको नष्ट करते हुये समाज और देशके गौरवको भी ख़तम कर डालते हैं।

दरिद्रता मनुष्यके लिये महापाप है और इस महापापको दूर करनेको तरकीबें आपके हाथमें हैं। हुनर, होशियारी, सचाई, ईमानदारी, प्रेममय मिज़ाज और शिक्षा—रुपये कमानेकी चाबियां हैं। जिस मनुष्यमे इस तरहके ज्यादा गुण होंगे—वही रुपयोंका ख़ज़ाना प्राप्तकर सकता है। कुछ लफंगोंका ख़याल है—[illegible]

दग़ा, फरेब, नौसर बाजी, बेईमानी, घूसखोरी, तिकड़मबाज़ी और खुशामदसे प्राप्त होते हैं, यह उनकी बेवकूफ़ी और उलटे ख़याल हैं। इस तरह रुपये कमानेवाले एक दिन फ़कीर हो जाते हैं और उन्हें कोई नहीं पूछता।

संसारमें हज़ारों किस्मके अच्छे और आकर्षक व्यापार हैं, उन्हींमें से किसी एकको अपना साथी चुनिये। मगर पहले इस बातका निश्चय कर लीजिये कि आप किस व्यापारके लायक 'फ़िट' हैं, किस काममें आपको सबसे ज्यादा दिलचस्पी है। अच्छे पेशेमें उतरनेके पहले खूब सोच समझ लीजिये। अच्छे मौके ढूंढ़िये और अपने मनकी मोटरके चक्कोंको बदल डालिये। वे पंकचर हो गये हैं। उनमें नये 'टायर' फिट कर आगे बढ़िये। परिश्रमसे ही मानव जातिका उत्थान हुआ है और होगा। परिश्रम ही कला, कौशल, साहित्य, विज्ञान और व्यापारका जन्मदाता है। लक्ष्मी उद्योगी पुरुषका आश्रय लेती है। समय और पौरुषके सदुपयोगसे आप उन्नतिके शिखरपर चढ़ जायंगे।

दुनिया अपनी पुरानी केंचुल छोड़कर नया रूप धारणकर रही है। हाथपर हाथ धरकर बैठनेसे कुछ न होगा। भाग्यसे कर्म अधिक प्रबल है। मनुष्यको कोई नहीं बनाता, उसे खुद मनुष्य बनना पड़ता है।

दुनियामें रुपयेको लेकर आप सब काम कर सकते हैं। स्वर्ग तकमें सीढ़ियां लगाकर आकाशकी अन्दरूनी हालतका पता

लगा सकते हैं। रुपया बच्चोंके लिये खिलौना है, जवानोंके लिये चेहरेकी सुर्खी और बूढ़ोंके लिये सहारेकी लकड़ी है।

यों तो मैंने कुछ रुपये कमानेवालोंमें विलक्षण दिमाग़ देखे हैं। मगर मुझे जीवनमें एक ऐसा आदमी मिला है—जिसकी बुद्धिपर मुझे दंग रह जाना पड़ा।

एक दिन मुझे अपने लायब्रेरी रूममें एक चिट्ठी मिली, जिसका मज़मून यह था :—

"प्रिय महाशय,

आपका पुस्तकालय बड़ा अच्छा है। मैं जब आपको पुस्तकें पढ़ते देखता हूं, तब मुझे खूब आनन्द आता है; परन्तु आपको धन्यवाद देनेका साहस नहीं होता। इसलिए कि आप पुस्तकें पढ़नेमे इस तरह तल्लीन रहते हैं कि आपकी खूबसूरत आँखें रास्तेके चलते-फिरते मनुष्योंको नहीं देख सकतीं।

मुझे इस बातका सख्त अफ़सोस है कि आपके पुस्तकालयकी कई कुर्सियाँ टूट गई हैं। उनमें किसीके पाए उखड़ गये हैं, किसीकी पीठदानी हिल रही है। मैं जब उन्हें देखता हूं, तो कलेजा हिल जाता है।

अच्छा हो, आप उन्हें मरम्मत करा लें। मैं कल सुबह आठ बजे आपकी सेवामे हाज़िर हो जाऊँगा।

आपका—

एक बढ़ई'

१२

पत्र पढ़कर मैं इस आदमीकी धनोपार्जन बुद्धिपर मुग्ध हो गया। इस पत्रमें इतना आकर्षण था कि मैं इस आदमीको देखनेके लिए बेचैन हो गया। दूसरे दिन ठीक आठ बजे बढ़ई महाशयकी सवारी आई। उनके साथ हथियारोंसे लैस एक कुली भी था।

मैंने उसका स्वागत किया और उसके पत्र लेखन कलाकी तारीफ की। उसने कहा—"मैं इसी तरह रोज सुबह-शाम घरके बाहर निकलता हूँ और बड़े आदमियोंके बैठकखानों, घरों तथा दूकानोंको होशियारीसे ताड़ता हूँ। जहाँ त्रुटियाँ देखता हू, पत्र लिखकर मालिकोंसे मिलता हूँ और इस तरह प्रत्येक दिन अच्छा रोजगार कर लेता हूँ। वर्तमान समयमें मेरी आमदनी लगभग तीन सौ रुपये मासिक है। आज तक मैं कहीं असफल नहीं हुआ और :मेरा काम ख़ूब धड़ल्लेसे चल रहा है। उसने मेरे पुस्तकालयकी कुर्सियोंकी मरम्मतकी तथा मेरे घरके दरवाज़ोंको सुधारा। इस तरह वह मुझसे खुशी-खुशी ढाई रुपये ले गया।

यों ही, बल्कि इससे भी बढ़कर रुपये कमानेकी हज़ारों आकर्षक तरकीबें हैं। हाँ, आपमें धनोपार्जनका दिमाग़ और परिश्रमका माद्दा होना चाहिये।

मैनचेस्टरके धनवान बैंकर मि० ब्रुकका कहना है—"मैं जब तक एक गिनी नहीं पैदा कर लेता—तब तक एक शिलिंग (गिनीका २१ वाँ भाग) भी नहीं ख़र्च करता। मैंने अपने

जीवनमें निरंतर इसी नियमका पालन किया है और यही मेरे धनवान होनेका रहस्य है। धनका पैदा करना उतना कठिन नहीं है, जितना उसका संचय करना। जो अपनी आमदनीसे अधिक खर्च करता है, वह कभी धनवान नहीं हो सकता।"

गरीबी या बेकारी भीख माँगने, सहानुभूति ढूंढ़ने या व्याख्यानोंसे नहीं दूर की जा सकती। किसी काममें एक-दो बार 'फेल' हो जानेपर घबराओ नहीं। कोशिश करो और फिर कोशिश करो। चिकनी दीवालपर मकड़ी बार-बार चढ़ती और गिरती है, परन्तु हताश नहीं होती। इससे सबक सीखो और आगे बढ़ो।

रुपयेको सही रास्तेसे खर्च करो। न किसीसे कर्ज़ लो, न दो। कर्ज़दार आदमीका दुनियामें खड़ा होना मुश्किल है। दूसरोंके पैसेसे कभी गुलछर्रे न उड़ाओ। जबतक तुम्हारे पास पैसे न हों, भूखे सो जाओ, मगर कर्ज लेकर दूध-मलाई न खाओ। कर्ज़ वह कोढ़ है जो समस्त ज़िन्दगीको गन्दा बना देता है।

जुआ, रेस, सट्टाबाजी और लाटरियोंमें क़िस्मत न आजमाओ। बीती आफ़त भूल जाओ और वर्तमान समयमें अपनी अन्तरात्मासे यह आवाज़ उठने दो:—

"हम मनुष्य हैं, कर्मयोगी हैं। हम दुनियामें तूफ़ान पैदा करने आये हैं—हाथमें नई रोशनी लेकर आगे बढ़ेंगे—उसे दुनियाकी कोई ताक़त न बुझा सकेगी।"

वर्तमानकी क़ीमत

लोग कहते हैं, यह हाहाकारका ज़माना है। जिधर देखिये; उधर हाहाकार! हमारी आँखोंमें आफ़तकी तस्वीरें नाच रही हैं, आँसुओंमें घर डूबा जा रहा है, गली-कूचोंमें क़यामतका ज़िक्र है—

"लुटे हैं यों कि किसीके गिरहमें दाम नहीं,
नसीब रातको पड़ रहनेका मुकाम नहीं।
यतीम बच्चोंके खानेका इन्तज़ाम नहीं,
जो सुबह ख़ैरसे गुज़री उमीदे शाम नहीं॥
अगर जियें भी तो कपड़ा नहीं बदनके लिए!
मरें तो लाश पड़ी रह गई कफ़नके लिये॥"

हमारे अफ़साने लहूके रंगमें डूबे हैं, हमारी कोई नहीं सुनता! मैं कहता हूं, कोई सुनेगा भी नहीं। आप बराबर सर्वनाशके गढ़ेमें गिरते जायँगे। आपके सारे रोने व्यर्थ होंगे। आपकी आहोंका धुआँ मनुष्य सिगरेटके धुएँकी तरह फुर्रसे उड़ा देंगे।

क्यों, जानते हैं ? आप मनकी शक्तियोंको भूलकर पथ-भ्रष्ट हो गये हैं, मनुष्यताका मार्ग छोड़कर पशुओंकी श्रेणीमें चले आये हैं। सच्चा आनन्द क्या है ? यह सोचनेके लिए आपको फ़ुरसत नहीं। आप कोरी कामनाओंके दास और झूठी ऐंठोंके गुलाम बन रहे हैं। आपकी चतुरता इतना ज्यादा बढ़ गई है कि उसमें धूर्तताके चिराग़ जल रहे हैं। पालिसी या नीतिने आपमें दग़ाबाज़ोका रूप धारण कर लिया है; मुहब्बतको आपने गन्दे व्यवसायका जामा पहना रखा है। दम्भ और अभिमानने आपपर इतना बड़ा सिक्का जमा लिया है कि आप ईश्वर और उसके क़ानूनोंको भूल गये हैं और आपको फ़िज़ूल हाहाकार मचानेकीआदत पड़ गई है।

आपके मनमें कुछ और है—ज़बानमें कुछ और। ज़िन्दगी और मौतके थपेड़े खानेपर भी आपको होश नहीं होता। उल्टे उद्दण्डताके पतवारोंसे, अपनी अन्धकारमयी जीवन नौकाको संसार सागरमें उद्देश्यहीन होकर खे रहे हैं। आप बेवक़ूफ़ियोंके साथ मौतसे लिपटे जा रहे हैं; मगर मौत नफ़रतसे आपका तिरस्कार करती है। फिर आपको कोई क्यों पूछेगा ?

यदि आप पशुओंके झुण्डसे भागकर मनुष्य-श्रेणीमें आना चाहते हैं, मनुष्यसे भी ऊँचे महामानव बनना चाहते हैं—तो बीती बातें भूल जाइये। वर्तमानको पहचानिये। वर्तमानमें मनुष्यकी सफलताओंका सम्पूर्ण तत्त्व छिपा हुआ है।

यह ज़माना आगे बढ़नेका है। इतिहासका युग है। मानसिक शक्तियोंके जगानेका वक्त है। आज चारों तरफ मनुष्यकी कल्पनाओंने अपने अन्दर वह वेग पाया है, जो बरसाती नदियोंमें नहीं। इस युगकी धारा बिजलीकी रफ्तारसे भी तेज़ है। दुखी और हताश होनेकी ज़रूरत नहीं, अपने सुखोंकी स्वयं सृष्टि कीजिए। अब आपके लिए वह ज़माना आ रहा है, जब आप विज्ञानकी बदौलत समुद्र, पहाड़, जंगल, दरख्त, पशु, पक्षी और ईश्वरकी प्रत्येक सृष्टिके साथ दिल खोलकर बातें करेंगे। आकाशके तारोंके साथ आपको टी-पार्टी दी जायगी और आप चाँदके टुकड़ोंको हथेलीपर लिए घूमेंगे। यहा मिथ्या वाद, कविकी कल्पना या पागलका प्रलाप नहीं—सत्य है। ऐसा होगा, बल्कि इससे भी बढ़कर, इससे भी ज्यादा विचित्र होगा। मैं भंग पीकर यह पुस्तक नहीं लिख रहा हूं—मेरे होश दुरुस्त हैं। मनुष्य प्रकृति, आकाश, पाताल किसीको न छोड़ेगा, सबपर उसकी विजय होगी, वह शक्तियोंकी खोजमें ज़मीन-आसमान एक कर देगा और धीरे-धीरे देवताओंकी श्रेणीमें जा बैठेगा।

ज़रा तुलना कर देखिये—मनुष्य पहले बन्दरकी शक्लका था, अब वह धीरे-धीरे आदमी बनने लगा है। हमारे देश और समाजमें जो बात सौ वर्ष पहले थीं, आज उनमें ज़मीन-आसमानका फ़र्क हो गया है। इसी तरह जिस ज़मानेपर आज आप चल रहे हैं, सौ वर्ष बाद उनमें महान उलट-पुलट हो जायँगे।

मनुष्य ज्यों-ज्यों महामानव बनकर ज्ञान मार्गकी ओर बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों उसकी अधिक उन्नति हो रही है। आँखें खोलकर देखिये—जैसे फूलोंके साथ पत्तियाँ लगी हैं, चन्द्रमाके साथ तारे लगे हैं, सागरके साथ नदियाँ और नदियोंके साथ नद नाले जुड़े हैं, वैसे ही वर्तमान भी सच्चे दोस्तकी तरह आपके साथ छाया जैसा चल-फिर रहा है। उसे पहचानिए और ज्यादेसे ज्यादा फ़ायदा उठाइये।

इस समय आप अपने व्यक्तित्व, साहस, शक्तियों और योग्यताओंको बढ़ाकर उनमें नये-नये चमत्कार उत्पन्न कीजिए। मनुष्योंपर अपने दिमाग़का प्रभाव डालिये, अथवा शक्तिशाली मनुष्योंसे शक्ति संचय कीजिए। गवर्नमेन्टके उच्च कर्मचारियोंसे परिचय प्राप्त कीजिए। गवर्नर, मिनिस्टर, जज, मेयर, कांग्रेसमैन, राजे-महाराजे, ज़मीन्दार और रईसोंसे मेल-मिलापकर अपनेको आगे बढ़ाइए।

आपके लिए यही तो समय है। जातीय बन्धनोंको तोड़कर देश-विदेशकी यात्रा कीजिए। वहांके व्यापार, साहित्य, विज्ञान और नये आविष्कारोंके अध्ययनमें अपनेको अर्पित कर दीजिए। राजनीति, समाजनीति तथा आदर्शवादमें आगे बढ़िए। सभा-सोसाइटियोंमें सम्मिलित होकर उनमें मार्मिक भाषण दीजिए। नये किस्मके व्यापार खोलिए और खूब चिन्तनके साथ उनका विज्ञापन कीजिए। नये बनवाइए; मकान, बग़ीचे

तथा ज़मीन्दारियां ख़रीदिए और मनकी अच्छी अभिलाषाओंकी पूर्तिमें लग जाइये।

आपके लिए यही तो समय है, मनकी कमज़ोरियों और बीमारियोंको दूर कर उसमें खूबसूरती पैदा कीजिए। चमत्कार पूर्ण पुस्तकें लिखिए, प्रभावशाली फिल्में बनाइए। नए और मौलिक विचारोंको गहराईसे फैलाइए और संसारके प्रसिद्ध राजनैतिक, लेखक, वैज्ञानिक तथा सम्पादकोंके साथ परिचय प्राप्त कीजिए। दर्शन, आध्यात्म, इतिहास तथा साइंसकी पुस्तकें पढ़िए। आपके लिए यह ज़माना भंग छाननेका नहीं, शराबकी मतवाली तरंगोंमें बहनेका नहीं, रण्डियोंके यहाँ घृणित जीवन बितानेका नहीं, शादियोंमें मशगूल होनेका नहीं—यह जागरणका ज़माना है। इस ज़मानेमें आप धर्मके असली तत्त्वोंको समझिए और मनकी खेतीमें मनुष्य-गौरवके बीज बोइए तथा दुनियाकी तेज़ रफ्तारको विस्तारके साथ समझिए।

हफ्तेमें एक दिन छुट्टी मनाना आपके लिए बहुत आवश्यक है। रोज़ एक ही धन्धेमें लगे रहनेसे दिमाग़ कूड़ा हो जाता है। छुट्टीके दिन आप मनको पूर्ण आज़ादीकी दुनियामें टहलने दीजिए। इस दिन छोटी-मोटी यात्राएं कीजिए और जीवनमें मनोविनोदकी उथल-पुथल होने दीजिए। छुट्टियाँ शक्तिकी जननी हैं। संसारमें बहुत ज्यादा मनुष्य ऐसे हैं, जो छुट्टियोंकी आशापर जीते हैं और बहुत कम मनुष्य ऐसे हैं, जो छुट्टियोंकी

ज़रा भी क़ीमत नहीं समझते। इनकी मनकी मैशीनें रात दिन चला करती हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि एक दिन इनके कल-पुर्जे इस तरह बन्द हो जाते हैं कि मरम्मतमें ज़मीन-आसमान एक कर देना पड़ता है—फिर भी कुछ फायदा नहीं होता।

आपके लिए यही तो सुन्दर समय है। मनमें उत्साह पैदा कीजिए। उत्साह सैकड़ों गुणोंकी उत्पत्तिका मूल रहस्य है। उत्साहके कारण भयानकसे भयानक कठिनाइयाँ फौरन सुलझ जाती हैं। सच पूछा जाय; तो एलेक्जेण्डरने उत्साहसे ही एशियापर विजय प्राप्त की। उत्साहसे हृदय सदा जवान बना रहता है। उम्र अधिक हो जानेसे बाल भले ही सफेद हो जायँ, उत्साही हृदय कभी बूढ़ा नहीं होता। शर्मीले और फिसड्डी आदमियोंकी कहीं क़द्र नहीं होती। एक सोते हुए शेरकी अपेक्षा भूंकनेवाले कुत्तेसे अधिक काम निकलता है।

यदि आप मनुष्य हैं; तो जीवनकी हरएक साँसपर आगे बढ़िए। दुःखोंकी कड़ी धूपमें झुलसते हुए मरु जीवनमें गुणका झरना बहा दीजिए। मृत्युमें जीवनका निर्माण कीजिए। आपमें ब्राह्मणत्वका सा त्याग और अर्जुनका सा पुरुषार्थ होना चाहिए। आपकी आफ़तोंमें, दुःखोंमें, दर्दोंमें गहरे आकर्षण छिपे हुए हैं। अपनी कठिनाइयों, बलिदानके तक़ाज़ों और पथरीले रास्तोंमें सफल यौवनकी खोज कीजिए। आपकी ज़िन्दगीका यही अपार बल है।

तुम अपने रास्तेपर अकेले ही चले चलो। स्वप्नमें डूबे हुए प्राणीकी तरह बीहड़ बियाबानोंमें प्रवेश करो और ऊबड़-खाबड़ भूमिको लाँघते हुए अपने लक्ष्यपर आगे बढ़ो। यदि तुमपर मुसीबतोंके पहाड़ टूटते हैं, तो ज़रा न घबराओ। अपनी विपत्तियोंकी कहानी जंगलके दरख्तोंको सुनाओ। इस तरह यदि सिद्धान्त पथपर सफ़र करते हुए सब लोग तुम्हारा साथ छोड़ दें और संसारकी समस्त मानव जातियाँ तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जायँ, तो किसीकी परवा न करो—आगे बढ़ो। काँटोंको रौंदकर, अपने पैरोंको अपने ही ख़ूनसे तर कर लो—जिसमें चुभनेवाले काँटे तुम्हारे ख़ूनकी नमीसे नर्म हो जायँ और तुम्हें आगे बढ़नेमें कठिनाइयोंका सामना न करना पड़े।

वर्तमानकी क़ीमत इन्द्रके ऐश्वर्योंसे ज्यादा क़ीमती है। वर्तमान शक्तियोंके द्वारा ही तुम्हारे उजड़े हुए चमनमें फिर बसन्त ऋतुका आगमन होगा। रंग-बिरंगे फूलोंसे तुम्हारा संसार भर जायगा और उसपर हज़ारों-लाखों भंवरे मँडरायेंगे। निराशा क्यों? निराशा पतन है और आशा उत्थान!

स्त्री

विन्ध्याचलकी खूबसूरत पहाड़ियोंपर टहलते हुए अचानक मेरी मुलाक़ात एक महात्माजीसे हुई। बातचीतके सिलसिलेमें उन्होंने कहा—"स्त्री काल-साँपिनी है, तुम हमेशा उससे दूर रहना।"

अगर तुम आत्माकी उन्नति चाहते हो, धर्मपर तुम्हारा विश्वास है, ईश्वर दर्शनकी इच्छा रखते हो, तो स्त्री जातिसे हमेशा नफ़रत करना। यह परमात्माकी नापाक सृष्टि है :—

"ब्यास कनक औ कामिनी, ये हैं कड़ुई बेलि।
बैरी मारै दाँव दै, ये मारैं हँसि खेलि॥"

मैं महात्माजीके सामने झुक गया और उनकी चरणधूलि मस्तकपर चढ़ा ली।

यह बीस-इक्कीस वर्ष पहलेकी बात है। उन दिनों मैं यौवनके बासन्ती बगीचेमें टहल रहा था। एकाएक महात्माजीने उसमें क्रोधी वैशाखकी तरह प्रवेश कर मेरी उमंगोंके [illegible]।

मैं नहीं समझता, वह महात्माजीका उपदेश था, या दुर्वासा ऋषिका शाप। रोम-रोमसे आगकी चिनगारियाँ निकलने लगीं और मेरा मधुर जीवन प्रलयंकर शंकरका भयंकर ताण्डव नृत्य हो गया। उन दिनों जहाँ कहीं मैं औरतोंको देखता, नफ़रतसे मुंह फेर लेता। एक-एक हसीन युवती मुझे साँप और बिच्छूके रूपमें नज़र आती थी। महात्माजीकी कृपासे मैं भयानक स्त्रीद्रोही बन गया।

इस तरह बरसों बीत गये। ज़िन्दगीमें कितनी ही आँधियाँ आईं और तूफ़ानकी तरह निकल गईं। फिर भी स्त्री क्या चीज़ है—मैं उसकी शक्तियोंको न पहचान सका!

पहचाना कब? जब उसने मुझे एक दिन मौतके पंजेसे खींच लिया। कष्टोंके भयानक अन्धकारमें उसने मेरी ज़िन्दगीमें प्रकाशके महान तत्त्व भर दिये। उसके रूप-सौन्दर्यसे हृदयमें प्रेमकी वीणा बज उठी।

हाँ, उसी दिन मैंने पहचाना—स्त्री क्या है; स्त्री-शक्ति क्या है? यदि विन्ध्याचलके स्त्रीद्रोही महात्माजी आज मुझे मिल जाते, तो मैं उनसे पूछता—"महात्मन, यदि मैं स्त्रीको न देखूंगा, तो समझूंगा कैसे—स्वर्ग कैसा है? देवी-देवताओंकी पवित्रता कैसी है? स्त्रीको न देखूंगा, तो सीखूँगा कैसे—भक्ति क्या है? धैर्य और धर्म क्या है? आत्मविसर्जन किसे कहते हैं? निःस्वार्थ प्रेम, त्याग और तपस्याका क्या स्वरूप है? यदि वह

रूप-छटा न देखूँगा, तो जानूँगा कैसे—अप्सरायें और किन्नर गन्धर्व जो संगीत अलापते हैं, वह मधुर संगीत कैसा है? इस संसारमें स्त्रीसे बढ़कर देखने-सुनने और शक्ति संचार करनेकी और चीज़ ही क्या है? धर्म, शिक्षा और उन्नतिके लिये स्त्री-आदर्शसे बढ़कर दूसरी चीज़ हो ही क्या सकती है?

स्त्रीने अपने अथाह प्रेमके आँसुओंसे संसारके हृदयको उसी तरह घेर रखा है, जिस तरह समुद्र पृथ्वीको घेरे हुए है। स्त्रीके रूप-सौन्दर्यसे आँखोंमें एक मनोहर नशा समा जाता है। उस समय संसार बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। मनुष्य मुखमें देव-भावके दर्शन होते हैं, जीवनमें आकर्षण-शक्ति भर जाती है और दुःखकी मुसीबत भरी रातें सुख-स्वप्नोंमें कट जाती हैं।

रमणी वर्तमान और भविष्यके अन्धकारकी उज्ज्वल तारिका है। वह जीवन-पथकी विश्राम छाया, भवसागरकी तरणी, परलोककी मुक्ति और स्वर्गकी सौन्दर्य लालिमा है। स्त्रीको भूलना मनुष्यताका अपमान करना है।

स्त्रीकी आँखोंमें ईश्वरने दो दीपक जला दिये हैं, ताकि संसारके भूले-भटके लोग उसके प्रकाशमें अपना खोया हुआ रास्ता देख लें। स्त्री एक मधुर सरिता है, जहाँ मनुष्य अपनी चिन्ताओं और दुःखोंसे त्राण पाते हैं। वह सर्व गुणोंकी खनि और मनुष्यकी अतुल सम्पत्ति है।

स्त्रीको लेकर ही जीवनमें त्रिवेणी प्रवाहित होती है; उसकी

मुसकान और मधुर हँसीसे जीवनका समस्त अन्धकार दूर हो जाता है। हृदयमें सरसता नाचने लगती है और जन्म-जन्मान्तरकी अपवित्रतायें दूर हो जाती हैं।

यदि तितलियोंकी तरह फुदकती हुई किशोरियां हमारे हृदयको बरबस अपनी ओर नहीं खींच लेतीं, यदि कंचनकी तरह कान्तिमान, कोटि कामकी तरह कमनीय; अपने मुखचन्द्रकी चाँदनीसे चन्द्रमाको लज्जित करनेवाली, दामिनीकी तरह दमकने वाली बालाओंकी तरफ़ हम आकर्षित नहीं होते, तो निश्चय जानो, हम शक्तिहीन हैं। अपनी अन्दरूनी शक्तियोंको जगानेमें असमर्थ हैं।

स्त्रियाँ सौन्दर्यकी रानी हैं। कोई अपने रूपकी दीपावली जगमगा रही हैं, कोई अपने हुस्नपर आप ही फिदा हैं। किसीकी हँसीमें फूल झरते हैं, तो किसीकी मुसकानमें मोती और माणिक। उनके जीवनकी प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक साँस शक्तियोंसे सराबोर है।

जिस समय तुमपर तकलीफें पड़ें, तुम रमणी-रूप-रसका पान करो—उमंगोंकी तरंगें उछलने लगेंगी। जब तुमपर आफ़तें आयें, तुम सुन्दरी स्त्रीका हृदय टटोलो—विपत्तियोंके बादल फट जायँगे। इसे याद रखो—तारे आकाशकी कविता हैं, तो स्त्रियाँ पृथ्वीकी संगीत-माधुरी। दुनियाके भाग्यका निस्तार इन्हींके हाथोंमें है। संसारमें और कोई वस्तु ऐसी

नहीं, जैसी सुशील पुण्यात्मा और सुन्दर स्त्री। उसे पहचानो, उससे शक्तियोंका संचय करो।

स्त्री-सौन्दर्य वह फूल है, झरने जिसे पानी पिलाते हैं; मेघ जिसे नहलाते हैं, चन्द्रमा जिसका मुंह चूमता है और ओस जिसपर गुलाबजल छिड़कती है। श्रीमती सरोजिनी नायडू अपनी एक कवितामें लिखती हैं—"गुलाब पीले पड़ गये हैं, उनका सौरभ हवामें उड़ने लगा है। क्यों? गुलाब ईर्षासे कुम्हला गया है, सौरभ उसका रुदन है। इसलिये कि राजकुमारी ज़ेबुन्निसाने अपने गालोंपरका घूँघट ज़रा हटा दिया है। इसीलिये गुलाबोंका नाज़ काफ़ूर हो गया!"

"दिले दुश्मन उस हूरका घर बना है।
जहन्नुममें फ़िरदौस मंज़िल यही है॥"

स्त्रीके सौन्दर्य-दर्शनसे तुम्हारा महान हृदय उसी तरह चमक उठेगा, जिस तरह ऊषामें किसी एकाकी पर्वतका हिमाच्छादित श्रृङ्ग चमक उठता है।

स्त्रियोंके द्वारा ही प्रकृति पुरुषोंके हृदयमें अपना सन्देश लिखती है। सुन्दरियोंके मिलनकी आकांक्षासे हमारे दिल उसी तरह खिल जाते हैं, जैसे ओसकी बूँदोंसे मिलकर फूल खिल उठते हैं।

आप देवताओंके इतिहास पढ़िये, शास्त्रोंके पन्ने उलटिये, काव्य-समुद्रमें गोते लगाइये, उपन्यास-नाटकोंका समुद्र मन्थन

कीजिये—सबमें स्त्री-शक्ति सूर्य किरणोंकी तरह चमक रही है। देखिये न, सीता खो गई हैं, भगवान रामचन्द्र उनके विरहमें पागल हो रहे हैं। वह जंगलमें भटकते हैं और वृक्ष लता पंक्तियोंसे पूछते हैं :—

हे खगमृग ! हे मधुकर श्रेणी।
तुम देखी सीता मृगनयनी ?

कर्मयोगी श्रीकृष्णका इतिहास सुन्दरियोंका इतिहास है। कहाँ तक कहूं, कहाँ तक लिखूं ? लेखनीमे वह शक्ति नहीं, शब्दोंमें वह भाषा नहीं, जो स्त्री-शक्तिके गुणगान गा सके। स्त्री जीवन एक गूढ़ पहेली है। वह सौन्दर्य, कोमलता, स्नेह और शीलकी देवी है। इन्हीं गुणोंसे वह पुरुषको अपनी ओर आकर्षित करती है और उसे संसार, जीवन, रहस्य तथा प्रेमको समझनेकी शक्ति प्रदान करती है। संसारकी किसी भी भाषामें जाइये—स्त्री-शक्तिके गुणगानमें आधेसे अधिक साहित्य मिलेगा। संसारमे जहाँ देखिये, वहीं स्त्रीसे उजेला है। जहाँ स्त्री नहीं, वह स्थान नर्क है। यदि पुरुषको समस्त संसारका राज्य मिल जाय और स्त्री न मिले, तो वह भिखमंगा है। इसके विपरीत यदि निर्धनके पास सुन्दरी स्त्री है—तो वह चक्रवर्ती राजाके समान है।

प्रकृतिने स्त्रीको इस कारण बनाया है कि वह प्रेम और प्यारसे हमारे आनन्दमें वृद्धि करे, मनुष्यके कष्टोंको दूर करे।

यदि संसारमें कोई स्त्री न हो, तो यह इस तरह सूना नज़र आये, जैसे वह मेला—जिसमें किसी प्रकारको न तो बिक्री हो, न जहाँ मनोरंजनका कोई दूसरा सामान हो। स्त्रीकी मुस्कुराहट बिना सारा संसार ऐसा निकम्मा हो जाये—जैसे सांस बिना शरीर, फूल-फल विना वृक्ष, शान्ति विना बुद्धि, नींव विना मकान और हाकिम विना किला! यदि स्त्री न होती, तो प्रेम न होता और जब प्रेम न होता, तो आराम भी न होता। संसारमें जो खूबियाँ है, जो प्रकाश है, वह एकमात्र स्त्रीके ही कारण!

स्त्रीको समझतेही संसारके सौंदर्यका परदा उठने लगता है, हम अपरिचित वस्तुओंके चारों ओर कल्पनाओंका प्रकाश और कान्तिके दर्शन करने लगते हैं। हमारी आंखें सौंदर्य मस्तीमें लोटती हुई जमीनसे आसमान और आसमानसे जमीन तक अपनी निगाहें डालने लगती हैं।

आजकल बिगड़े दिल मनुष्योंकी यह धारणा हो रही है, कि स्त्री केवल भोग विलासकी सामग्री है। पुरुषोंकी पशु प्रवृत्तिको चरितार्थ करनेके लियेही उसका जन्म हुआ है। यह भयानक मूर्खता है, मनुष्य नामको कलंकित करनेका भ्रष्ट सिद्धान्त है। हमारी बरबादियोंका असली रहस्य यही है, कि हम स्त्रीको भूल गये हैं, स्त्री शक्तिको भूल गये हैं।

स्त्रीके आदिमें मनुष्य अपंग था, वह पृथ्वीके कोनेमे पड़ा सिसक रहा था। स्त्रीनेही उसे उठाया और पालकर बड़ा किया।

आज वही कृतघ्न मनुष्य समाज उन स्त्रियोंको अपने पैरकी जूती समझता है। घृणित इन्द्रिय लालसाको चरितार्थ करनेके लिये हमने उसे चरणोंकी दासी बना रक्खा है। हम उसे अपने क्रीड़ाकी पुतली समझकर उसपर अत्याचार करते हैं, उसे विलासकी वस्तु समझते हैं। विचारकर देखिये, स्त्रीपर अत्याचार करना अधर्म है, इन्द्रियोंपर अत्याचार करना उससे भी ज्यादा अधर्म है। स्त्रियोंको दुर्बल बंधनमें न बांधो, उनका अपमान न करो, उन्हें अपने इशारोंपर न नचाओ। जो दीपक हर समय बुझाया जा सकता है, जो लता बातकी बातमें तोड़ी मरोड़ी जा सकती है, जो इन्द्रधनुष देखते ही देखते नज़रोंके सामनेसे ग़ायब हो सकता है—उसके साथ अधर्म कैसा, अत्याचार कैसा? स्त्री लक्ष्मी है, ईश्वरीय शक्तिका महान अंश है। यदि तुम सोती हुई शक्तियोंको जगाना चाहते हो, मनुष्य बनना चाहते हो, तो स्त्री द्वारा आकर्षण शक्तिको प्राप्त करो। उसके सौंदर्य, माधुर्य और हृदयसे जीवनके शक्ति भण्डारको भर लो। फिर तुम्हें कोई दुःख न होंगे।

"जहाँ स्त्रियोंकी पूजा होती है, वहाँ देवता रहते हैं।" हमारे शास्त्रकारोंने कहा है—"पृथ्वीके समस्त तीर्थ स्त्रीके पैरोंमें मौजूद हैं। उनमें देवताओं तथा मुनियोंका तेज होता है।"

स्त्री शिक्षा देनेमें पिताके समान है। हर तरहके दुःख दूर करनेमें माताके समान है। एकही भार्या मन्त्री, मित्र, नौकर

रूपसे अनेक हो जाती है। उसे पहचानतेही संसार अमरावतीके रूपमें दिखाई देता है।

तुम टैरेन्स मैक्स्विनीके ये शब्द कभी न भूलो। वह कहते हैं:—"जब हम किसी महान कार्यके लिये अपनेको या दूसरोंको उत्साहित करना चाहते हैं, तो उन वीर स्त्री पुरुषोंका उदाहरण देते हैं, जो शूरताके साथ युद्धमें कूदे हैं और छाती दिखाते हुए लड़ाईके मैदानको पार कर गये हैं। यह हमारे लिये कम लज्जाकी बात नहीं है कि हम अपने वीर पुरुषोंका इतिहास कम जानते हैं। इससे भी अधिक लज्जाका विषय यह है, कि हम अपनी वीर स्त्रियोंके विषयमें कुछ भी नहीं जानते।"

यदि तुम किसी स्त्रीको पापकी आँखोंसे देखते हो, तो परमात्माके क्रोधको जगाते हो और अपने लिये जहन्नमका रास्ता साफ़ करते हो।

ज्ञान लोक सुन्दर और अमर है, उसकी क्षणिक आभा नारीमें ही दिखाई देती है। नारी सौंदर्यका रहस्य तुम्हारी आँखोंमें जादू भर देगा और तुम्हें अत्यन्त सुन्दर बना देगा।

तुम स्त्रीको न भूलो। स्त्री शक्तिको न भूलो। स्त्रियाँ शक्तिकी देवी हैं। उन्हें पहचानो—

मुहब्बतकी मुहब्बत है, इबादतकी इबादत है।
जहाँ जलवा किसीका देख लेना—सर झुका देना॥

मनुष्य-धर्म

मनुष्यने धर्मकी सृष्टि की है, धर्मने मनुष्यकी नहीं।

किन्तु धर्म है क्या? धर्म किसे कहते हैं? ईश्वरके प्रति तथा मनुष्यके प्रति जो हमारा कर्तव्य है, उसीका नाम धर्म है। सदाचार तथा आत्मप्रियताका नाम धर्म है। प्रेम और शुद्ध स्वभावका नाम धर्म है। यदि मनुष्य, मनुष्यके साथ युद्ध करता है, लड़ता है, झगड़ता है, तो उसके यह माने हुए कि मूर्खताकी तरफ़ उसकी जीत है, किन्तु धर्म और ज्ञानकी तरफ़ हार। वह एक तरफ़ सिद्धि प्राप्त करता है, दूसरी तरफ़ अमृतसे वंचित हो जाता है।

धर्मका वास्तविक उद्देश्य है आत्माकी उन्नति करना--व्यक्तित्वका विकास करना। संसारका प्रत्येक धर्म इस सिद्धान्तको स्वीकार करता है। अतएव जो धर्म व्यक्तित्वकी उन्नति और आत्माके विकासमें बाधा डालता है, वह सच्चा धर्म हरगिज़ नहीं कहा जा सकता।

बहुतसे लोग समझते हैं, धर्म जंगलोंमें छिपा रहता है, कपड़े रंग लेनेसेही हमें ईश्वर मिल जाता है—यह भूल है। संसारमें रहते हुए, सत्यके सहारे कर्तव्यका पालन करते हुये, सबमें रहकर सबसे अलग रहना ही मनुष्यका सच्चा धर्म है।

संसारमें ऐसे हजारों महा पुरुष (!) हैं, जो ऊर्द्ध वाहु रहते हैं। कोई लोहेके काँटों पर सोते हैं, कोई अग्निकुण्डके किनारे सर झुकाये रहते हैं। कुछ गाँजा, भाँग, अफीम और चरसके नशेमें बेहोश हैं। यह मनुष्योंको समझाते हैं कि हम आपसे श्रेष्ठ हैं। यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो शरीरको कष्ट देनेवाले ये महात्मा (!) एकदम अस्वाभाविक हैं। इसे कहते हैं धर्मकी दुनियामे रेकार्ड तोड़ना। यह प्रकृतिके विरुद्ध भीषण विद्रोह है। ये शारीरिक अस्वाभाविकताको लेकर आडम्बर और अंधश्रद्धाको धर्म समझते हैं। धर्मके नामपर मनुष्यको मनुष्यसे, समाजको समाजसे और राष्ट्रको राष्ट्रसे अलग कर रहे हैं। ये नैतिक निर्बलताको 'पवित्रता' कहते हैं और पवित्रताके नामपर जीवनको घृणित, पीड़ामय और असह्य बना रहे हैं। ये शारीरिक पीड़ाको 'तपस्या' समझते हैं और आत्माके मन्दिर याने इस शरीरका सर्वनाश कर रहे हैं।

दूसरी तरफ़ आइये। मनुष्य अपनी-अपनी टुकड़ियोंके लिए रास्तेके कुत्तोंकी तरह दुम हिलाने, दूसरोंकी वैसी ही हिलती दुम देखकर गुर्राने, खीसें निपोरने, झपट पड़ने और इधर-उधर

दो-चार बकोटें भरनेमें ही अपनी, अपने मज़हबकी तथा अपनी प्यारी मज़हबी दुनियाकी बहबूदी या भलाई समझते हैं। यही वजह है, जो हम अब तक मनुष्यताके ऊँचे आदर्श तक पहुंचनेमें असमर्थ हो रहे हैं। जिस समय सारा संसार आगे बढ़ रहा है, उस समय हमारा समाज नीचे गिर रहा है। हमारी बुद्धिपर ऐसा तुषारपात हो गया है कि हमारी समझमें साधारण बातें भी नहीं आतीं। हम भूत-प्रेतोंमें विश्वास करते हैं, कीड़े-मकोड़ोंकी आराधना करते हैं। हम अब भी यही समझते हैं कि दरख़्तोंपर जल चढ़ानेसे, पत्थरोंपर फूल बरसानेसे भगवान हमारे लिए स्वर्गमें एक सुन्दर सिंहासन दे देंगे।

यह समय बरबाद करनेके कोरे आडम्बर हैं। ऐसे ही धार्मिक विश्वासोंने हमें कहींका नहीं रखा। जो हमारे सिरमौर थे, हमें ज्ञान-विज्ञानकी शिक्षायें देते थे; वे आज इक्के हांकते हैं, पराये घरोंमें रोटियां सेंकते हैं, आफ़िसोंमें क्लर्की, मज़दूरी तथा दरबानी करते हैं। धार्मिक अन्धेरने हमारे समाजपर गहरी कालिख पोत दी है। आज हमें सभी नफ़रतकी निगाहसे देखते हैं। हमारी ऐसी ही धार्मिक संकीर्णतापर खेद प्रकट करते हुए स्वामी विवेकानन्दने कहा है—"हिन्दुओंका धर्म न तो अब वेदोंमें रहा, न पुराणोंमें; न भक्तिमें, न मुक्तिमें। तो फिर कहां गया? बस, चूल्हे और चौकेमें। आजकल सिर्फ छुआछूतमें ही धर्म समाया हुआ है। आ भूखेके मुंहमें रोटीके टुकड़े नहीं

डाल सकते, वे 'धर्म-धर्म' चिल्लाकर कैसे मुक्त हो सकते हैं? जो दूसरोंको छूकर खुद अशुद्ध हो जाते हैं, वे भला दूसरोंको क्या शुद्ध करेंगे? स्वार्थने सबको पिशाच बना रखा है।"

हम जब तक धार्मिक अन्ध विश्वासोंको, मज़हबके इन तास्सुबोंको तिलांजलि देकर धर्मके वास्तविक तत्त्वको नहीं स्वीकार करते, तब तक हमें मनुष्यके मूल धर्मका पता पाना एकदम असम्भव है।

स्वार्थ हमें जिस ताक़तसे ठेलकर आगे ले जा रहा है, उसकी मूल प्रेरणा जीव प्रकृतिमें दिखाई देती है। मगर जो हमें त्याग और तपस्याकी ओर ले जाता है, वही है मनुष्यत्व—मनुष्य-धर्म। इसी धर्म तत्त्वको लेकर मनुष्य अपनी उन्नतिके साथ ही साथ महामानव बनता जा रहा है। वह बाहर, दूसरे देशोंमे, समाजोंमें और भिन्न-भिन्न जातियोंमें एक होकर रमता है। उसकी आत्मा सब आत्माओंमें मिलकर सत्य धर्मके दर्शन करती है। वह अपने विमल विचारोंसे सबको एकताके सूत्रमें बांध लेता हैं और अन्तमें जिस तरह नदी समुद्रमें मिलकर महासागर बन जाती है, उसी तरह यह मनुष्य भी महा मानवताको प्राप्त कर लेता है। उस समय वह सफलताके उच्च शिखरपर छाती तानकर खड़ा हो जाता है। उसके चरणोंमें मानी मान समर्पित करते हैं, धनी धन और वीर आत्मायें अपने प्राण तक विसर्जन कर देती हैं।

एक दिन ब्राह्मण रामानन्दने इसी महा मानवताको प्राप्त कर माभा चाण्डाल, मुसलमान जुलाहे भक्त कबीर और रैदास चमारको आलिंगन किया था। उस दिन इस महा मानवताके आगे विरोधियोंका विद्रोह जलकर खाक हो गया था। समाजकी धधकती ज्वालायें अपने ही शरीरको भस्म कर श्मशानकी राख बन गई थीं।

एक दिन महात्मा ईसाने इसी महामानवताको प्राप्त कर कहा था—"मैं और मेरा पिता एक ही है।" क्योंकि उनकी मंगल कामना मनुष्यमात्रके लिए समान थी।

एक दिन महात्मा बुद्धने इसी महामानवताके दर्शन कर संसारको समझाया था—"तुम मनुष्यमात्रसे हिंसा, बाधा और शत्रुताशून्य मैत्री जोड़ो। खड़े, बैठे, चलते, सोते इसी मैत्रीके प्रवाहमें अपनेको बहा दो। तुम्हारे कल्याणका अमृतमन्त्र यही है।

असलमें जीवन देवताके साथ जीवनको अलग करते ही हमपर दुःख और विपत्तियोंके बादल टूट पड़ते हैं। जीवन देवताको जीवनमें मिलाते ही हमारे हृदयसे मुक्तिका आनन्दस्रोत फूट पड़ता है और हम मनुष्यमात्रको बड़ा मानने लगते हैं। उस समय वायुके झोंकोंसे जैसे अंचल हिल-हिलकर नये-नये रूप धारण करता है, वैसे ही हमारी आँखोंके सामने संसारका मानचित्र बदलता जाता है। हम प्रेम-सागरमें गोते खाकर अपना कायापलट कर लेते हैं। उसी समय हमें मालूम होता है

कि यह संसार कितना सरस, पवित्र और मनोरम है। भर्तृहरिने लिखा है—"जब मैं यों ही कुछ समझने-बूझने लगा था, तब हाथीके समान मदान्ध हो गया था और यही अभिमान रखता था कि मैं सर्वज्ञ हूं; पर आगे जैसे-जैसे मुझे विद्वानोंके सत्संगसे थोड़ा-थोड़ा ज्ञान प्राप्त होता गया, वैसे वैसे मुझे विश्वास होता गया कि मैं मूर्ख हूं। इस तरह मेरा वह अहंकार ज्वरके समान उतर गया।"

आजकल अन्धश्रद्धा रखनेवाले मनुष्योंकी यह धारणा है कि धार्मिक मामलोंमें उनके सिवा और किसीको बोलनेका अधिकार नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि हमारी धार्मिक लीडरी बहुत दिनों तक ऐसे ही आदमियोंके हाथमे रही है; परन्तु इसीलिए वे वर्तमान समयमें भी हमारे देशके धार्मिक नेता नहीं रह सकते। ज्यों-ज्यों वे अपने धार्मिक अधिकारोंको चिल्लाहट मचाते जाते हैं, त्यों-त्यों वे जनताकी निगाहोंसे गिरते जा रहे हैं। किसी भी धर्मकी एक-सी रूप-रेखा न कभी रही है, न रहेगी। समयकी आवश्यकताओंके अनुसार सभी धर्मोंको अपनी प्राचीन कड़ाइयाँ कम करनी पड़ी है और नये नियम बनाने पड़े हैं।

अन्धविश्वासी धर्म मनुष्यके लिए अफ़ीमके समान है। रूस, फ्रान्स, स्पेन, टर्की, योरोप इत्यादि बहुत दिनों तक इसकी पिनकमे पड़े रहे। जब जागे, तो उन्होंने पुराने अन्धकारमय दुर्गन्ध बदबू भरे हुए धर्मयुगका पलक मारते विध्वंस कर डाला और

एक नये ज़मानेकी रचना की, जिसमें प्रकाश, पुण्य और आनन्दकी प्रधानता है।

अन्धविश्वासी धर्म परलोकका झूठा सब्ज़ बाग दिखाकर भोलेभाले लोगोंको इस लोकमें सन्तोषकी बासी और सूखी रोटी खानेका पाठ पढ़ाता है। काल्पनिक स्वर्गका लालच देकर ग़रीबोंके घरोंमें नर्क उँडेलता है और जो ग़रीबोंके मुँहका कौर छीनकर खाते हैं, उनसे कुछ टके ऐंठकर उन्हें स्वर्गका पासपोर्ट दे देता है। अन्धविश्वासी धर्मने समस्त पृथ्वीमंडलमें अधर्म फैला रखा है।

नदी अथवा पुलके नीचे जब मनुष्योंके बलि देनेकी प्रथाका समर्थन किया जाने लगता है, तब धर्म वास्तवमें ज़हर बन जाता है। धर्मके नामपर सदियोंसे प्रचलित देवदासी प्रथाके रहते हुए, मन्दिरोंपर चढ़ाई जानेवाली बलिके लिए पशुहत्याके होते हुए, तीर्थोंमें होनेवाले पाप, व्यभिचार तथा भ्रूणहत्याओंके देखते हुए और धर्मजीवी पुरोहितोंकी पापलीलाएँ सुनते हुए भी धर्मको नैतिक जीवनका संरक्षण कहनेसे अधिक भूल और क्या हो सकती है? जिन स्थानोंमें धर्मकी जितनी अधिक दुहाई दी जाती है, उनमें उतनी ही अधिक पोल होती पड़ती है।

ज़ार जैसे निरंकुश शासक और रासपुटीन जैसे शराबी द्वारा धर्मके नामपर प्रजाको मुसीबतोंके कारण ही आज रूसमें धर्मके विरुद्ध विद्रोह हो रहा है। ज़ारके ज़मानेमें धार्मिक जनताका

अन्धविश्वास देखकर ही महात्मा टालस्टायने कहा था - "मैं पादरियोंका दुश्मन हुए बिना नहीं रह सकता, क्योंकि ये अशिक्षित और मूर्ख जनताके हृदयमें धर्मकी भ्रान्त धारणाओंकी सृष्टि कर उन्हें ध्वंसकी ओर लिये जा रहे हैं।"

धर्मके नामपर बहुतसे अन्धविश्वासोंने मनुष्योंपर बड़े-बड़े अत्याचार किये हैं। यदि भारत-सरकार सती प्रथाको रोकनेका क़ानून न बनाती, तो आज दिन हिन्दुस्तानमें चारों तरफ़ ज़िन्दा लड़कियाँ विधवा होनेपर आगमें जलकर भस्म होते दिखाई देतीं। धर्म द्वारा मनुष्यके सुख और शान्तिमें वृद्धि होनी चाहिये, न कि दुःख और अशान्त हाहाकार!

आज विधवाओंकी आहोंसे हमारा समाज धायँ-धायँ कर जल रहा है; वेश्याओंके नित्य नये बाज़ार खुलने जा रहे हैं, दहेजकी सर्वनाशी प्रथाओंमें पिसकर कितनी ही कुमारियाँ बग़ैर शादीके दुःखमय जीवन व्यतीत कर रही हैं। लाखों अछूत विधर्मी बनते जा रहे हैं। ऐ पाखण्डी धर्मधुरन्धरो! क्या तुम्हारा यही धर्म है? तुम इन धार्मिक अत्याचारोंके विरुद्ध विद्रोह क्यों नहीं करते?

यदि सच पूछा जाय, तो वर्तमान समयमें अन्धा धर्म ही सबसे ज्यादा मनुष्योंका ख़ून चूस रहा है। मनुष्यको गुलामके रूपमें पलट देने तथा उसके मन तकको असहाय बना देनेके लिए धर्म ही पर सबसे अधिक उत्तरदायित्व है। जब किसी देशमें

मनुष्योंको पेटभर अन्न नहीं मिलता, तब उस देशमें सिर्फ दुर्भिक्ष ही पड़कर नहीं रह जाता, बल्कि ऐसे देशोंमें तरह-तरहकी तकलीफें पैदा होती हैं, बुरे रस्म रिवाज़ फैलते हैं और व्यभिचार अनाचारकी वृद्धि होती है। गीतामें भगवान श्रीकृष्णने कहा है—'मनुष्य अपना उद्धार आप ही करे। अपने आपको कभी गिरने न दे। क्योंकि हर आदमी स्वयं ही अपना दोस्त है और स्वयं ही अपना दुश्मन।' तुम धर्मके अन्धे दीवानोंको तर्पण करनेके लिए अपना खून न दो। जैसे तालाबपर मच्छरोंका झुंड बेकार मंडराया करता है और मैलेरियाकी सृष्टि करता है, वैसे ही अन्धविश्वासी मनुष्य समाज भी कोरी कल्पनाओंके प्रवाहमें फ़िज़ूल बहा जा रहा है और अपने भाइयोंपर बीमारियों, बेकारियों और मुसीबतोंके पहाड़ ढा रहा है। मैली कुचैली तथा अंधेरी गलियोंमें आज हज़ारों लाखों स्त्री-पुरुष जानवरोंकी तरह अपनी ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। यही वजह है कि लाखों मनुष्योंको आज हलचलकी इतनी ज़रूरत हो गई है कि उसका नतीजा अत्यन्त दुःखमय हो रहा है। अगर अन्धविश्वासोंके ये अन्धेर जल्द न हटाये गये, तो न मालूम किस दिन एक भीषण सामाजिक क्रान्ति या एक प्रचण्ड ज्वालामुखी मानव समाजमें धू धू कर जल उठे। यदि सिकन्दरकी तरह कोई महा प्रतापी पुरुष अपनी गर्जना या विजयके बलसे, मनुष्योंके बीच पाले साँपकी तरह बैठा हुआ धर्म, भाषा और जातीय भेद

भावोंको मिटा दे, तो मानव समाजकी समस्यायें आज हल हो जायँ। वरना धार्मिक विश्वासों और सामाजिक कुरीतियोंमें अब कोई दम नहीं है।

धर्मके असली तत्त्वको वही मनुष्य जानता है, जो कर्म, मन और वाणीसे मनुष्यमात्रकी भलाई करनेमें लगा है—सबका प्रेमी है। जब तक हमारे अन्तःकरणमें समानताकी ज्योति नहीं जगमगाती, तब तक हममें दृढ़ संकल्प, उद्धार और संघशक्तिकी भावनायें मज़बूत नहीं हो सकतीं। भुना हुआ बीज जैसे उग नहीं सकता, वैसे ही जब ज्ञानबुद्धिसे मनुष्यके अधर्म जल जाते हैं, तब वे पुनः आत्माको प्राप्त नहीं होते।

धार्मिक संकीर्णताओं और मतमतान्तरोंसे संसारमें कितना ख़ून बह रहा है, ईर्ष्या और पशुता किस तेज़ीसे बढ़ी हुई है—इसकी कौन कल्पना कर सकता है? धार्मिक सिद्धान्तोंने दुनियामें भयानक भ्रम फैलाये हैं, भीषण अन्धेर किये हैं। जन्म भरकी दुष्टता सवा पाँच आनेके गऊदानसे धुल जाती है। हज़ारों पाप कीजिये, मगर एक बार राम नाम जप लीजिये—बेड़ा पार है। गंगास्नान और तीर्थयात्रायें स्वयं मोक्षदायक समझ ली गई हैं। उपवासोंका ताँता लगा है। हिन्दू मुसलमान आपसमें कट मर रहे हैं। शिया सुन्नियोंके झगड़े, सनातनी आर्यसमाजियोंके लट्ठमलट्ठ—कहाँ तक लिखा जाये, ख़ुद अपने ही घरोंमें धार्मिक लड़ाइयाँ हो रही हैं। यह कितना बड़ा

अपराध है ! जिस दिन मनुष्यकृत ईश्वरोंका अन्त हो जायगा, हम आत्माकी शुद्धि और हृदयकी पवित्रतामें ही ईश्वर-दर्शन कर सकेंगे। उस दिन संसारमें किसी जातिका अपना धर्म न रहेगा। उस दिन मनुष्य ईश्वरके स्वरूपका निर्णय भक्ति और विश्वाससे नहीं, बुद्धि और विचारसे करेंगे। तब ईश्वर और मनुष्यके बीचमें कोई नबी, रसूल या अवतार न होगा। मनुष्य ईश्वरको आत्मामें अनुभव करेंगे। आँखोंसे देखकर नहीं, कानोंसे उसकी आवाज़ सुनकर नहीं ; वरन अपनी आत्मामें स्वद प्रेरणाका अनुभव करके। प्रेम, सदाचार और सद्विचार ही ईश्वरका वास्तविक रूप है।

दुःख क्या है ? दुःख पापका परिणाम नहीं, बल्कि मनुष्यकी अज्ञानताका कुफल है। आत्मा बन्धनोंसे जकड़ी हुई है, यदि उसके बन्धन तोड़कर नष्ट कर दिये जायँ, तो आत्माका प्रकाश फैलनेमें सन्देह ही क्या हो सकता है ?

आवश्यकता आविष्कारोंकी जननी है। यह कहावत उतनी ही पुरानी है, जितना कि संसारका इतिहास। संसारका इतिहास बताता है कि जिस तरह रुका हुआ जल बाँध तोड़कर जिधर रास्ता पाता है, उधर ही वह चलता है और इधर-उधर फैल जाता है। उसी तरह समयकी आवश्यकतायें भी अपना रास्ता बना लेती हैं और पूरी होकर रहती हैं। मनुष्य हृदयमें एक बार प्रवेश किये भाव कभी मरते नहीं, वे कुछ समयके लिये

दबाये ज़रूर जा सकते हैं ; पर समय पाकर
दुगुने वेगसे बढ़ता है, उसी तरह हम मनु
भाव भी दुगुने वेगसे उठेंगे और संसारमें प

मनुष्योंको यदि विचारपूर्वक देखा
अनागरिक है। पशुओंको रहनेके लिए जगह मिला है और मनुष्योंको आगे बढ़नेके लिए मार्ग मिला है। मनुष्योंमें जो श्रेष्ठ हैं, वे पथ-निर्माता हैं—मार्ग-प्रदर्शक हैं। जो थके हैं, वे अपने हाथों अपनी चिता तैयार करते हैं। मनुष्यने जब कभी अज्ञानताके फेरमें फँसकर रहनेका आश्रय बनाया है, तब ज्ञान शक्तिने उसे जगाकर, हमेशा दीवाल तोड़कर उन्नतिके मार्गमें भाग जानेके लिए मजबूर किया है।

हम लोगोंने आध्यात्मिक शक्ति खो दी है। इसीलिए हम आफ़तोंकी जंजीरोंमें जकड़े जा रहे हैं। मगर पाश्चात्यके उन्नतिशील देशोंको देखिये। वहाँके स्त्री-पुरुषोंमें ही नहीं, लड़कों तकमें प्रकाण्ड आत्मशक्ति और आत्मविश्वास भरा हुआ है। आत्मगौरव उन्हें प्राणोंसे ज्यादा प्यारा है। वे कहते हैं—'हम जो चाहें कर सकते है, हमारी इच्छाशक्तिमें कोई बाधा नहीं डाल सकता।' किन्तु हमारे देशके लड़के क्या ऐसा कहते हैं? लड़कोंकी तो बात ही क्या, मैं समझता हूँ, अविद्याके अन्धकारमें डूबे हुए उनके माता-पिता भी ऐसा नहीं कहते!

बरसोंकी बात है। बृटिश सेना अफ़गानिस्तानके मशहूर

अपराध है नस कर रही थी। तोपोंकी अग्निवर्षासे एक हवाई हम ध्वंस होकर मैदानमें आ गिरा। उसमें कई घायल सैनिक थे। एक अफ़गान लड़कीने उन्हें देखा और बम वर्षाके बीहड़ मैदानसे वह उन सैनिकोंको एक पहाड़ी गुफामें भगा ले गई। अफ़गानोंको यह बात मालूम हुई, वे सैनिकोंको मार डालनेके लिए दौड़े, मगर लड़कीने उनकी इस तरहसे गुप्त रक्षा की कि कोई उनकी बू-बास तक न पा सका। एक दिन मौक़ा मिला—लड़कीने घायल सैनिकोंको अफ़गानी पोशाक पहनाकर अफ़गानी सीमाके बाहर कर दिया! दुश्मनको माफ़ करनेका यह मनुष्य-स्वभाव बहुत उज्ज्वल है—अत्यन्त पवित्र। हो सकता है, जीवधर्मके लिये यह भावना नुक़सान पहुंचानेवाली हो; किन्तु मनुष्य-धर्मका यह महा प्रताप, महान उत्कर्ष और सबसे बड़ा गौरव है!

आज संसारमें मनुष्योंके उपकारके हम जितने चमत्कार देख रहे हैं, वह किसी जादूगरके खेल नहीं हैं। उनका आविष्कार न तो धर्मधुरन्धरोंने किया है, न राजनीति-विशारदोंने। अरिस्टाटल, बेकन, रूसो और कार्ल मार्क्स इसके निर्माता नहीं; न नेपोलियन और बिस्मार्कने इन मानचित्रोंको बनाया है। इनकी सृष्टि की है मनुष्योंकी आध्यात्मिक शक्तियोंने, जो नदीकी धाराके समान अपना कल्याण मार्ग आप ही ढूंढ़ती चली गई हैं। आकाशमें रहनेवाले नक्षत्र जिस तरह रातमें रास्ता दिखाते

हैं, उसी तरह आध्यात्मशक्तिके महान विचारकोंने इन चमत्कारोंके इशारे भर किये हैं, जिनके द्वारा आज मनुष्य सुखी हैं, आनन्दोंसे भरे-पूरे हैं।

मनुष्य हमेशासे मनुष्यताके आकर्षणको लेकर पागल है। उसके सामने कितने ही राज्य उठे और गिरे। उसने कितने ही माया मंत्रोंकी चाभियाँ तैयार कीं। उन्हीं चाभियोंसे वह दुनियाके रहस्य भंडारोंका ताला खोलता चला आ रहा है। रोटी-कपड़ेके लिये नहीं, अपनी सम्पूर्ण ताक़तोंके साथ महा मानवोंकी प्रतिष्ठा करनेके लिये, जटिल बाधाओंसे सत्यका उद्धार करनेके लिये। मनुष्यको सब दुःखोंसे छुटकारा पानेका यही उपाय है कि वह अपनी चैतन्यताको खूब बढ़ाये। धन, ज्ञान, प्रेम, कर्मको महान कीर्तियोंमे मिला दे। मनुष्य होकर आराम कौन चाहेगा? उसे स्वयं मुक्ति प्राप्त कर दूसरोंको मुक्ति दान देना होगा। उस समय मृत्यु गर्जन उसे संगीतकी तरह सुनाई देगा। वह आँधी तूफ़ानमे आत्माका दीपक जलाकर वेधड़क सफल मार्गपर चला चलेगा। उसकी कृपासे, उसी दिन सारा मानव समाज एक धर्मका, सच्चे मनुष्य-धर्मका जयघोष करेगा। उस दिन यह दुनिया एक विशाल परिवारके रूपमें बदल जायगी। ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, शंकाराचार्य, नानक आदि महापुरुषोंके सब धर्म मिलकर एक हो जायँगे—जिसे संसारके सब मनुष्य मानेंगे। उस दिन चोरी, भूठ, डाकेज़नी, क़त्ल, बलवा, विद्रोह

आदि आधुनिक समाजके अधार्मिक महारोग ढूंढ़नेसे भी न मिलेंगे। मनुष्यका दिमाग़ बुराइयोंको ढूंढ़नेमें लगा है और क्रमशः उन्हें नष्ट करता जायगा।

हमारे लिये वह दिन दूर नहीं है, जब मनुष्योंके सामने इतने आकर्षक कार्योंकी भीड़ लगी रहेगी कि वह मुग्ध हो जायँगे। विश्वमें नवयुग आरंभ होगा। सारा संसार एक पुस्तककी तरह मनुष्यके सामने खुल जायगा और उसके पढ़नेवाले कहेंगे—"ओह, हमारे पूर्वज भी अजीब थे, जो एक दूसरेको न पहचानकर आपसमें लड़ाइयाँ करते थे।"

तुम ईश्वरको न भूलो। मगर अन्धविश्वासी और तकलीफ देनेवाले ढोंगी धर्मका जनाज़ा निकालो। उसे रसातलमें गाड़ दो, यदि वहाँ जगह न मिले, तो बेधड़क ज्वालामुखीके उदरमें डाल दो—ताकि उसकी ख़ाक तकका पता न लगे और उसके जले हुए ज़र्रे भी उड़-उड़कर तुम्हारे पवित्र शरीरमें न आ सकें।

तुम मनुष्य हो। मनुष्य क्षुद्र रहनेके लिये इस संसारमें नहीं आया। मंगलमयी शक्तियोंको इकट्ठा करो। तुम्हारा सदा मंगल है।

आकर्षण

इस लेखमें आपको न तो जंत्र-मंत्र मिलंगे, न जादू टोने। यहाँ मैं आकर्षण प्राप्त करनेके वह सरल तरीक़े बताऊँगा, जिनके द्वारा आप जीवन-संग्राममें हमेशा फतेह पाते जायंगे।

मनुष्य - जीवनका सबसे बड़ा आकर्षण है—उसका "व्यक्तित्व।" जिस तरह बिजलीमें चमक, चन्द्रमामें चाँदनी, सूर्यमें किरणें, फूलमें सौंदर्य, वनमें हरियाली, पक्षियोंमे रंग और रमणीमें रूपका आकर्षण होता है, उसी तरह मनुष्यमें उसके 'व्यक्तित्व'का आकर्षण है। जिस मनुष्यका 'व्यक्तित्व' जितना ही ऊंचा और शानदार होगा, उसका आकर्षण उतना ही तेज और प्यारा होगा।

'व्यक्तित्व' क्या है? 'व्यक्तित्व' के माने है—स्वयं आप। 'व्यक्तित्व' मनुष्यके अन्दरूनी ताक़तोंकी तेजस्वी चमक है। वह चमक, जिससे मनुष्य स्वयं अपनेको ज़ाहिर करता है और उसके ज़रिये दूसरोंपर अपना प्रभाव डालता है।

शक्तिशाली 'व्यक्तित्व' रखने वाले सिर्फ स्रष्टाही नहीं, द्रष्टा भी होते हैं। वह देखते हैं, सुनते हैं और सृष्टि करते हैं। सभी देखते और सुनते हैं, मगर साधारण मनुष्योंसे और इनसे ज़मीन आसमानका फ़र्क होता है। इनके देखने-सुननेमें महान अन्तर रहता है। साधारण लोगोंकी दृष्टिमें जो 'कुछ नहीं' है—इनकी निगाहमें वही सबसे बड़ी चीज़ है।

ऊँचा 'व्यक्तित्व'ही इन्सानको अमर होनेका अमृत पिलाता है। यदि ऊँचा 'व्यक्तित्व' झोपड़ीके लता पत्रोंके अन्दर भी छिपा रहे, तो उसके आत्मिक प्रकाशसे वह झोपड़ी सोनेके महलसे ज्यादा सुन्दर दिखाई देती है। व्यक्तित्वशाली मनुष्य सदा निर्भीक होते हैं। वे स्नेहसे बालकोंके सामने बच्चे बन जाते हैं, और इन्साफ़की कुर्सीपर बैठकर दुश्मनोंकी भी इज़्ज़त करते हैं। मनुष्यके 'व्यक्तित्व'का यही मूल-मंत्र है और इसी मूल मंत्रके महत्वसे मनुष्य महान है।

वे स्त्री-पुरुष सचमुच अभागे हैं, जो संसारमें प्रकाश लेकर आते हैं और अन्धकारके साथ वापस लौट जाते हैं, किन्तु दुनियामें अपनी यादगारका कोई भी ऐसा चिन्ह नहीं छोड़ जाते, जिससे फिर कभी उनके जीवनसे आकर्षक लपटें निकल सकें। ऐसे मनुष्योंपर संसार सम्मानका बोझ भले ही लाद दे, किन्तु दूर असल वह इस तरह मृतककी शोभा बढ़ाना चाहता है।

अंतमें और अपने 'व्यक्तित्व'के ही आकर्षणसे गाढ़ करना

है। आज दिन जो हम ज़िन्दगीमें बराबर 'फेल' होते जाते हैं, उसका सबसे बड़ा कारण यह हैं, कि हम अपने 'व्यक्तित्व' को एकदम भूल गये हैं, पृथ्वीके समस्त आकर्षणको खो वैठे हैं।

क्या आप जानते हैं—मनुष्यको महान 'व्यक्तित्व' कहाँसे प्राप्त होता हैं? मेरी साइन्स कहती है—चरित्रबलसे।

ज़िन्दगीका ताज और मनोहर प्रकाश है—इन्सानका ऊँचा चरित्र। मनुष्यके पास यह ऐसी कीमती चीज़ है, जिसके सामने दुनियाकी सब वस्तुयें तुच्छ हैं। सच्चरित्र मनुष्य राष्ट्रोंकी रचना कर सकता है, मुर्दोंमे जीवन और कमज़ोरोंमे ताक़त बाँट सकता है। उसके लिये आग शीतल जल, समुद्र छोटी नदी, पहाड़ शिलाखण्ड, विष अमृत, भयंकर सर्प फूलोंकी माला तथा शेर हिरन बन जाते है। ऐसे मनुष्यके चरणोंमे संसारकी आत्मा झुक जाती है, पृथ्वी उसे अपना सिंहासन प्रदान करती है और शक्तियाँ उसे विजय-मुकुट पहनाती हैं। मनुष्य इन्हीं शक्ति कणोंको इकट्ठा कर एकदिन अपने बुद्धिबलसे सारे संसारको चुम्बककी तरह अपनी ओर खींच लेता है।

आजकल मेरे दिन-रात किस आचरणमे बीत रहे हैं—यह विचार करनेवाले आदमी कभी दुखी नहीं हो सकते। मनुष्यका मूल्य उसके चरित्रमें है। चरित्रमेही उसके आत्मबलका प्रकाश होता है और दूसरे मनुष्योंको इस बातका पता लगता है कि उसकी आत्मा कितनी बलवान—कितनी शक्तिशाली है। धन,

मित्र, मान और आनन्द चरित्रवान व्यक्तिको आपसे आप प्राप्त हो जाते हैं और मृत्युके बाद उसे बहुत ज्यादा मशहूर कर देते हैं। चरित्रवान व्यक्ति दूसरोंके हुक्म कम मानता है, मगर उसका हुक्म दूसरोंपर बड़े प्रभावसे चलता है। मैं कहता हूं, तुम बुद्धिमान मनुष्योंका सत्संग करो, चरित्रवान मनुष्योंके चरण-चिन्होंपर चलो। तुम्हारा महा मंगल होगा और तुम कठिनाइयोंकी मंज़िल बड़ी सरलतासे पार कर ले जाओगे।

जिस मनुष्यका चरित्र बहुत ऊंचा है, उसके शरीरसे एक प्रकारकी जीवित ज्योति निकला करती है, जिसे हम मानव ज्योति कहते हैं। साधारणतः यह शरीरके चारों ओर एक या डेढ़ फुट तक फैली रहती है और कई फ़ीट दूरके मनुष्योंको अपनी ओर आकर्षित करती रहती है। यदि आप दृष्टि-शक्तिके तेजसे इसे देखें, तो आपको यह ज्योति सम भावसे चारों ओर फैली दिखाई देगी, जो उत्तेजक मानसिक आन्दोलनोंमें असाधारण रूप धारण कर लेती है।

इस ज्योतिको हर जातिके लोग किसी न किसी रूपमें मानते हैं। संस्कृतमें इसे तेजस् कहते हैं, मुसलमान नूर और पश्चिमी विद्वान 'मैगनेटिज़्म' या 'ह्यूमैन इलैक्ट्रीसिटी' इत्यादि नामोंसे पुकारते हैं।

आपने अक्सर देखा होगा, बहुतसे लोग ऐसे हैं, जिनके पास बैठनेसे सुख और शान्ति प्राप्त होती है। ठीक ऐसे ही

उनके पास बैठनेसे अशान्ति, दुःख, क्रोध, ईर्ष्या आदि बुरे विचार पैदा होते हैं। यह क्यों? यह सब इसी मानव ज्योतिकी रहस्य लीला है। इसी पदार्थके कारण आकर्षण-विकर्षण होते हैं। इसी तत्त्व-बलसे एकका दूसरेपर प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जिस तरहके विचारोंका सेवन करता है, उसकी ज्योति वैसे ही घटती-बढ़ती रहती है। इस ज्योतिको शुद्ध करने या प्रबल बनानेके लिए पवित्र और शक्तिशाली विचारोंकी ज़रूरत है, अथवा प्राणायामकी अत्यन्त आवश्यकता है।

विचारोंकी लहरें बिजलीकी लहरोंसे ज्यादा शक्तिशाली होती है। अतएव जो आदमी सदा उन्नति, शांति, शक्ति, उत्साह आदिके विचारोंको अपने मनमें हरा भरा रखता है, उसका जीवन ज्यादेसे ज्यादा सुखी, शान्त और शक्ति सम्पन्न बना जाता है और उसकी जीवन ज्योति इतनी बलवान होती जाती है कि दूसरोंके बुरे विचार कभी उसपर असर नहीं डाल सकते। बुरे विचार उसी अपवित्र मनुष्यके पास वापस लौट आते हैं, जिसके हृदयसे निकलते हैं और उनका उस मनुष्यको उचित फल चखाते है। इसलिये आदमीको चाहिये कि अपने विचारोंको हमेशा पवित्र और ऊँचे रखे।

ईश्वर और संसारका आकर्षण ज्ञानेन्द्रियोंके जागरणमें प्राप्त होता है। यह आकर्षण प्रतिभाशाली व्यक्तियोंमें कविकी कल्पनाकी तरह विलक्षण आविष्कार क्षणमात्रमें कर डालता है।

असलमें इन्द्रियोंका जागरण मनुष्य-जीवनको ठीक रास्तेसे ले चलता है। उसके कार्य चाहे गुप्त हों या प्रकट, उसके प्रत्येक कार्यमें आकर्षण भरा रहता है। चरित्रबल और इन्द्रियोंका जागरण मनुष्यमें हमेशा सुन्दर आदतें उत्पन्न करता है। क्योंकि मनुष्य आदतोंका गुलाम है।

आदतें बगैर उद्योगके ही अपना काम करती हैं। इनकी शक्तियाँ बड़ी विचित्र होती हैं। आप जिस आदतको अपनेमें एक बार डाल लेते हैं, उसे कार्य रूपमें परिणत करनेकी आदत पड़ जाती है। आदतका पहला रूप ठीक मकड़ीके जालेकी तरह कमजोर होता है। किन्तु वही जाला धीरे-धीरे लोहेकी मज़बूत जंजीर बन जाता है, जिसे तोड़नेमें खतरेंसे भरी हुई मुसीबतोंका मुक़ाबला करना पड़ता है। इसलिये आदमीको सोच-समझकर अपनेमें आदतें डालनी चाहिये। क्योंकि मनुष्यके वर्तमान कार्य ही भविष्यमें उसके भाग्य बन जाते हैं।

इन्द्रियोंको जगानेमें आदतोंका सबसे बड़ा हाथ रहता है। आँखोंको ही लीजिये, उनके देखनेमें भी एक तरहकी आदत होती है। किसी चीज़को तेज़ीसे देखना और हलकेपन, लापरवाहीसे देखना; किन्तु सर्वश्रेष्ठको देखना-सुनना ही मनुष्यके लिए क़ीमती है। इसीसे सोई हुई शक्तियां जागती हैं। अच्छी आदतें डालनेमें कुछ ख़र्च भी नहीं होता, उनके द्वारा संसारकी क़ीमती चीज़ें मुफ्त ख़रीदी जा सकती हैं। मनुष्यके पास दिमाग़, आँख,

नाक, कान, हाथ और जीभ ये छै सबसे बड़ी ताक़तें हैं। इनमें जागरण आते ही वह संसारके रहस्य भेदोंसे बहुत बड़े फ़ायदे उठा सकता है। लोग कहते है, भाग्य अन्धा होता है। वह बिना देखे-भाले जिस आदमीको जिस तरफ चाहे खींच ले जाता है। किन्तु यह सिद्धान्त ग़लत है। वास्तवमें भाग्य नहीं, मनुष्य अन्धा होता है। भाग्य हमारे ही मनका वह आकर्षण है, जिसे हम चाहें, तो सूर्यकी किरणोंकी तरह चमका दें; चाहें मिट्टीमें तोप दें। भाग्यका उद्धार आत्माके आनन्दसे होता है। एक लैम्पसे हज़ारों लैम्पें जलाई जाती हैं। यह विज्ञान हर मनुष्यकी पैतृक सम्पत्ति है और इसके गुणोंको हमें सबसे पहले सीखना चाहिए।

मनुष्य-शरीरमें कई करोड़ जीव-कोषोंके अड्डे हैं। इनमें से हरएक स्वतन्त्र जन्म लेता है और स्वतन्त्र मृत्यु प्राप्त करता है। जीवनमें हर सातवें वर्ष हरएक आदमी नया अवतार लेता है। उस समय उसके मानसिक प्रदेशमें एक तरहकी प्रलय होती है और बहुत तरहका तहस-नहस होता है। उस समय इन जीव-कोषोंमें अद्भुत हलचल उत्पन्न होती है। इनमें से कितने ही मर-मिटकर हमेशाके लिये हमसे विदा हो जाते हैं। जो बचे रहते है, वे नये जीव-कोषोंके साथी बन बैठते हैं। उन्हींसे मनुष्यका रूप, रंग और स्वभाव बदलता है। उस स्वभावसे विचार पैदा होते है, विचारोंसे मनुष्य इन्हीं कर्मोंका फल भोगता है। हाँ, यह मनुष्यके हाथकी बात है—चाहे वह अपने कर्मोंको अच्छा

बनाये या बुरा। कर्म मनुष्यकी इच्छा-शक्तिका पीछा करते हैं। जो लोग अच्छे कर्मोंको चुनते हैं, वे अपने भाग्यके खुद विधाता बन बैठते हैं। जो बुरे कर्मोंकी तरफ़ आकर्षित होते हैं, वे भाग्यके नापाक गुलाम बन जाते हैं और देवतुल्य मनुष्य जीवनको बरबाद करनेके अपराधी ठहराये जाते हैं।

यह विराट संसार शक्ति, सुख, सौन्दर्य, आकर्षण, सत्य और प्रेमका क़ीमती ख़ज़ाना है। यह हमारे व्यक्तित्वका संसार है। इसके चारों तरफ़ आकर्षण भरा हुआ है। मनुष्य जीवनकी दैनिक घटनायें, जिन्हें हम रोज़ देखते-सुनते हैं, इन्हींके उत्थान-पतनसे मनुष्यमें मूल ज्ञान उत्पन्न होते हैं और वह ज़िन्दगीमें अनेकों महत्त्वपूर्ण काम कर डालते हैं। हम और आप रोज़ ही मुर्दे देखते हैं, मगर महात्मा बुद्ध मुर्देको देखकर मनुष्योंके भगवान बन गये। हम और आप रोज़ ही देव-मूर्तियोंपर चूहोंको उछलते-कूदते देखते हैं; मगर जिस दृष्टिसे स्वामी दयानन्दने यह दृश्य देखा, वे खुली हुई आँखें थीं। इन आँखोंने इस छोटीसी घटना द्वारा उन्हें आर्यसमाजका प्रवर्तक बना दिया। दरअस्ल छोटी-छोटी घटनायें हमारे लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। मगर इन घटनाओंसे वही आकर्षण प्राप्त करते हैं, जो दुनियामें आँखें खोलकर चलते हैं और कानोंमें पड़नेवाली प्रत्येक आवाज़ें होशियारीसे सुनते हैं।

पीसाके गिरजाघरमें एक दिन एक अठारह वर्षका नवजवान

खड़ा हुआ ऊपरकी एक हिलती हुई बत्तीको बड़े ग़ौरसे घूर रहा था। बत्ती ठीक वक्तपर एक सिरेसे दूसरे सिरेपर आती-जाती थी। नवजवानने सोचा, इस 'आइडिया' पर समय देखनेकी एक आकर्षक वस्तु तैयार की जा सकती है। पचास वर्षके कठिन परिश्रमके बाद उसकी यह इच्छा पूरी हुई और उसने घड़ीका आविष्कार कर डाला। इसी तरह सर हम्परी डेवीके व्याख्यानोंको सुनकर जिल्दसाज फराडेने रसायनका आविष्कार किया। कोलम्बसने एक सामुद्रिक पौधेको देखकर स्वजातिमें फैली हुई लड़ाइयोंका तहस-नहस कर डाला। फ्रेंकलिनने बिजलीके तथ्योंको ढूंढ़ निकाला। परकिनने किनाइन तैयार करते समय रंगोंका आविष्कार कर डाला। न्यूटन फलोंका गिरना देखकर गुरुत्वाकर्षणपर विचार कर बैठे। ऐसी एक-दो नहीं, हज़ारो छोटी-छोटी घटनायें हैं, जिन्होंने मनुष्यकी आँखोंमें वह चमत्कार पैदा कर दिया, जिनसे आज लाखों करोड़ों मनुष्य फ़ायदे उठा रहे हैं। मनुष्य ज्यों-ज्यों शिक्षित होता जा रहा है, वह प्रकृतिकी महा शक्तियोंको परीक्षागारके मामूली बर्तनोंमें क़ैदकर उनमें अद्भुत आकर्षण उत्पन्न कर रहा है। अब वह ज्ञान विज्ञानकी बदौलत कुबेरकी तरह धनी बनता जा रहा है, रेगिस्तानको हँसता-खेलता बगीचा और श्मशान जैसी पृथ्वीको अमरावती बनाता जा रहा है। उसका आधिपत्य उत्तुंग तरंगवाले महा समुद्रपर भी फैल रहा

है। अमित तेजस्विनी, चिररहस्यमयी प्रकृति देवी भी आज उसकी सेवामें रत और उसके उद्देश्योंकी पूर्तिमें कमर कसकर तैयार हो गई है। अब मनुष्य दिव्यालोकोंके आकर्षणसे दिनों दिन महान होता जा रहा है और बराबर होता जायगा। उसकी उन्नतिके प्रचण्ड प्रवाहोंको संसारकी कोई ताक़त नहीं रोक सकती, किसीमें शक्ति भी नहीं है। जिस तरह एक दिन अमृतकी खोजमें देवता और दैत्य पागल थे, आज उसी तरह जीवनकी खोजमें मनुष्य भी दीवाने हो रहे हैं। वे ढूंढ़ते हैं कि उन्नतिकी प्रयोगशालामें कितने किस्मके आकर्षण हैं और हम उनमें किन नये चमत्कारोंका आविष्कार कर सकते हैं।

रूसके प्रवर्त्तक मैक्सिम गोर्कीने लिखा है—"अपरिवर्तित अवस्थामें रहना सचमुच बड़ा कठिन और दुःखदायी है। ऐसी अवस्थामें रहकर भी यदि हमारा हृदय नहीं मरता, तो यह परिस्थिति हमें और भी दुःखदायी मालूम होने लगती है।" सच है, मनुष्य जीवनके उलट-फेरसे ही अनन्त शक्तियोंपर अधिकार करता है।

यह कहावत बिल्कुल सच है कि दुनिया झुकती है, मगर झुकानेवाला चाहिये। संसारके चारों तरफ़ आकर्षण शक्तियोंका उजेला भरा हुआ है, किन्तु जब तक हम उसे नहीं पहचानेंगे, तब तक हमारी शक्तियाँ मुर्दा हैं। ठीक उसी तरह, जैसे फूल तब तक हमारे लिये बेकार है, जब तक कि हम उसकी खुशबूको

और सुगन्धका आनन्द नहीं जान पाते। थालीमें स्वादिष्ट भोजन परोसे हुये हैं, यदि खानेवाला न हो, तो इसमें भोजनका क्या दोष?

इन्सानकी सबसे बड़ी भूल यह होती है कि किसी भी अच्छे कामको वह कल परसोंपर टाल देता है, इस तरह उसकी ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है; मगर उसके जीवनमें कल परसों कभी नहीं आता।

न्यूटन कहता था—"मैं अपना विषय हमेशा अपने सामने रखता हूँ। मैं धीरे-धीरे उसके अन्धकारको टटोलता हूं और क्रमशः अपना मार्ग साफ़ कर ज्यादेसे ज्यादा रोशनी पा जाता हूं।" किसी कामको पूरी ताक़तोंके साथ करनेमें ही सफलतायें प्राप्त होती हैं, हाहाकार मचानेसे नहीं। उन्नतिके माने हैं ज़िन्दगीके ख़ज़ानेपर अधिकार कर लेना—उससे मुंह फेर लेना नहीं।

मनुष्यके मनमें एक निराली और विचित्र दुनिया बसी हुई है। उसमें आकर्षक बगीचे हैं—जिसमें गुलाबकी नर्म और नाज़ुक पंखड़ियाँ बिछी हैं। उसमें निराशाके कितने ही गहरे कुयें हैं, जिसमें मौत जैसा अन्धकार और भयानक सन्नाटा छाया हुआ है। उसमें मुसीबतोंकी महामारियाँ हैं—जिनकी आकाशको छूनेवाली ऊँचाई देखकर कलेजा काँप उठता है। उसमें प्रेमका झरना भी झरता है—जिसमें त्याग और

सहानुभूतिकी धारायें बहा करती हैं। उसमें घृणा, द्वेष, असत्य, लालच, अभिमान और इन्द्रियलोलुपताका नर्क भी है। उसमें सत्य, सन्तोष, भक्ति और नम्रताका स्वर्ग भी जगमगा रहा है। उसमें प्रफुल्लताका वसन्त है, प्रसन्नताकी बहार है, ज़िन्दगीका अमृत है और हलाहलका ज़हर भी भरा हुआ है। उसमें दया और मेहरबानियोंकी चाँदनी फैली हुई है —उसमें अभिलाषाओंके रंग-बिरंगे पक्षी चहकते हैं।

सचमुच मन एक निराली दुनिया है। इतनी विशाल कि मनुष्य अपनी तमाम ज़िन्दगीभर भी उसके सम्पूर्ण दृश्योंको देखनेमें असमर्थ है। मनके बाहर जितनी भी घटनायें घटती रहती हैं—सबका प्रतिबिम्ब उसमें साफ़-साफ़ दिखाई देता है। दुनियाके साथ मनुष्यके व्यक्तित्वका घनिष्ट सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध सिर्फ़ ज्ञान और कर्मका ही नहीं, मनुष्य जीवनका धार्मिक क़ानून है।

आपने अक्सर देखा होगा कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्यके इतना वशीभूत हो जाता है कि सरासर अन्यायपूर्ण बातें करनेपर—उसे अन्याय जानते हुए भी—उसमें एक क्षणके लिये भी उसके कार्योंको न करने या टाल देनेकी शक्ति नहीं होती। प्रेमिका प्रेमको ठुकराती है, घृणासे मुंह फेर लेती है; लेकिन प्रेमी उसी स्त्रीके लिये अपने प्राण तक विसर्जन कर देता है। ऐसी आश्चर्यजनक आकर्षण-शक्ति किस मोहिनी मन्त्रसे बनाई